अभिनव संगीत शिक्षा

भाग १

श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकर

पूर्णमेवावशिष्यते
ACHARYA S.N. RATANJANKAR FOUNDATION

आचार्य एस. एन्. रातंजनकर फाऊण्डेशन

॥ हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति ॥

अभिनव संगीत शिक्षा

प्रथम भाग

(तृतीय संस्करण)

लेखक

पद्मभूषण

आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकर,

बी.ए., संगीताचार्य

आचार्य एस्. एन्. रातंजनकर फाऊण्डेशन बम्बई - ४०० ०१४

समर्पण—

नादाब्धिनिर्मन्थनबद्धभावान्
विद्वद्वरान् गायकवादकांश्च ।
नत्वा तदंघ्र्यंबुजमञ्जरीषु
संगीतशिक्षाभिनवार्पितेयम् ॥

लेखक

पद्मभूषण आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकर,
"सुजान"

जन्म : ३१-१२-१९००　　　देहावसान : १४-२-१९७४

अभिनव संगीतशिक्षा
(प्रथम भाग)

भारतीया रागतालस्वरानन्दप्रदायिनी ।
नादविद्या यत्स्वभावो भारतीं प्रणमामि ताम् ॥

प्रस्तावना—प्रथम संस्करण

यह तो मानी हुई बात है कि संगीत जैसी क्रियासिद्ध कला की शिक्षा प्रत्यक्ष आदर्श-द्वारा जितनी अच्छी हो सकती है उतनी अच्छी उसके केवल शाब्दिक विवरण से नहीं हो सकती। विगत काल में गुरुमुख से पाठ लेकर उनको कण्ठस्थ करना यही संगीत शिक्षा की परंपरा थी। परंतु सद्यः स्थिति में, जब कि सहस्रावधि सज्जन संगीत के उपासक हुए हैं और इस कला को अपनाने का दृढ़ संकल्प किये हुए हैं, पूर्वप्रचलित गुरुमुखप्रणाली लगभग असंभाव्य सी ही हो गयी है। पाठशालाओं की कक्षाओं में जहाँ ३०, ४० छात्र इकट्ठा शिक्षा पाते हैं, तथा अन्यत्र, जहाँ संगीतप्रेमी सज्जनों को प्रत्यक्ष गुरुमुख से शिक्षा पाकर इस कला में प्रावीण्य संपादन करना असंभव होता है। संगीत में आनेवाली महत्त्वपूर्ण वस्तुओं का शाब्दिक वर्णन पर्याप्त सहायक हो जाता है। इस बात के अतिरिक्त पाठ्य पुस्तकों द्वारा शिक्षा प्रणाली नियमबद्ध हो जाती है। गुरुमुख से शिक्षा भिन्न-भिन्न प्रकार की एवं अनियमित होने का संभव अधिकतर रहता है। विभिन्न परंपरा के गायकों से परंपरागत एक ही रागदारी गीत के विभिन्न पाठ सुनाई देते हैं तब इनमें से अधिक विश्वसनीय कौन सा हो सकता है, यह प्रश्न उठता है, उसी प्रकार कुछ रागों के संबन्ध में भी यह परिस्थिति प्रतीत होती है। इसका कारण यही है कि पूर्वप्रचलित प्रणाली में स्वरलेखन का प्रचार तो था नहीं, न पाठ्य पुस्तकें ही थीं। सब गीत केवल मुखोद्गत किये जाते थे। इस रीति से सीखने-सीखाने से गीत के पाठों में परिवर्तन सहेतुक, निर्हेतुक, होना केवल संभाव्य ही नहीं वरन अनिवार्य है।

कहा ही है "सौ बक्या और एक लिख्या" अर्थात् एक लिखी हुई बात सौ बकी हुई बातों के बराबर है। आज गुरु के घर वास करके शिक्षा ग्रहण करने के लिये न किसी छात्र को सुविधा है, न किसी गुरु को भी छात्रों को अपने घर पर स्थान देकर शिक्षा देने की सुविधा है। अतएव पाठशालाओं में ही संगीत शिक्षा का प्रचार होना स्वाभाविक है। ऐसी परिस्थिति में पाठ्यपुस्तकों की महत्ता विशेष अधिक है। अस्तु।

इसी विचार से मैंने "अभिनव संगीतशिक्षा" नाम की यह पुस्तकमाला संगीत के विद्यार्थियों के लिये प्रसिद्ध करना आरंभ किया है। यह पुस्तकमाला मैरीस कॉलेज ऑफ हिन्दुस्तानी म्यूजिक" के नये अभ्यास-क्रम के अनुसार बनाई है। गत काल में प्रचलित अभ्यास-क्रम में कुछ राग प्रथम वर्ष की शिक्षा के लिये बहुत कठिन हो जाते थे ऐसा कुछ लोगों का कहना था। वास्तव में यदि दिन प्रति दिन विना खंड शिक्षा चलती रहे तो पूर्वी, मारवा, तोडी जैसे रागों की स्थूल कल्पना एवं उनको सीधे सीधे गाने का सामर्थ्य प्राप्त करा देने में कोई बाधा नहीं होनी चाहिए। परन्तु वर्ष भर अखंड चलने वाली कक्षाएँ पाठशालाओं में चलना असंभव है। ७–८ महीनों से अधिक समय कोई कक्षाएँ कार्य नहीं करतीं। कहीं-कहीं तो ६–६ महीनों का समय छुट्टियों में ही चला जाता है और केवल ६ महीने ही कक्षाओं का कार्य होता है। इतनी थोड़ी अवधि में पूर्वोक्त रागों को भी, अतिरिक्त और ६–७ रागों के, सिखाना असंभव है।

अतएव इन रागों के स्थान पर और सरल एवं विशेष लोकप्रिय रागों को रख कर उक्त कठिन रागों को पश्चात् की ऊँची कक्षाओं के अभ्यास क्रम में रखना योग्य समझकर अभ्यास का नया क्रम सन १९४९ में बनाया गया था। और इस नये अभ्यास-क्रम के ही अनुसार शिक्षा आज ३ वर्ष होती रही है। पिछले वर्ष नये अभ्यास क्रम के इन तीन वर्षों के अनुभव पर विचार करने के लिये पुनश्च एक सभा मैरीस कॉलेज के कुछ शिक्षक एवं भातखंडे संगीत विद्यापीठ से संलग्न संस्थाओं के अध्यापकों की उसी कालेज में हुई, और नये अभ्यास-क्रम में पुनश्च कुछ परिवर्त्तन किया गया। इस दुबारा संशोधित अभ्यासक्रम के ही अनुसार यह पुस्तकमाला बनाई गयी है।

इस प्रथम भाग में प्राथमिक शिक्षा के ही सब पाठ दिये हुए हैं। इसमें आये हुए गीत आज कल की सर्व साधारण जनता की अपेक्षा के अनुरूप ही नये रचे गये हैं। स्वरताल-लय इत्यादि के पाठ भी क्रमानुसार बनाए गये हैं। इसमें आये हुए रागों के नियम आरोहावरोह तथा स्वर विस्तार भी दिये हैं जिनसे अध्यापक एवं छात्रों को कक्षा में सिखानेसीखने में सुविधा हो।

मुझे पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक पूर्णतया उपयोगी होगी। मैंने तो प्रयत्न किया है, आगे ईश्वर की कृपा।

लखनऊ
दि० ३१ डिसेंबर १९५२

श्री० ना० रातंजनकर

प्रस्तावना—द्वितीय संस्करण

लगभग सात वर्षों के पश्चात् पुनश्च अभिनव संगीत शिक्षा का यह द्वितीय संस्करण जनता की सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है। इस अवधि में इस पुस्तक की छपी हुई सब प्रतियाँ बिक चुकीं एवं भविष्य की माँग पूरी करने के लिए यह पुनश्च छपवाई जा रही है।

प्रथम संस्करण लखनऊ के भातखण्डे संगीत विद्यापीठ के प्रथम वर्ष के अभ्यासक्रम के लिए यह पुस्तक लिखी गई थी। तत्पश्चात् उक्त संगीत विद्यापीठ के अभ्यासक्रम में पुनश्च संशोधन हुआ और उसके अनुसार कुछ परिवर्तन हुआ। इस परिवर्तित अभ्यासक्रम के अतिरिक्त, भातखण्डे संगीत विद्यापीठ में संगीत विशारद का नियमित अभ्यासक्रम् विशेषज्ञता की दृष्टि से करने के लिए जिनके पास पर्याप्त समय नहीं है, न अन्य अनुकूलताएँ हैं, किन्तु जो संगीत से कुछ परिचय अल्पावधि में पाने की हार्दिक इच्छा रखते हैं, ऐसे विद्यार्थियों के लिए एक छोटा सा द्विवार्षिक अभ्यासक्रम 'संगीत प्रवेशिका' नाम से इस संगीत विद्यापीठ में प्रस्तुत किया गया है। उक्त अभ्यासक्रम के अनुसार एक पाठ्य–पुस्तक की आवश्यकता की सूचना मिली। अतएव इन दोनों अभ्यासक्रमों में उपयोगी हो ऐसी पुस्तक लिखने के हेतु से मैं अभिनव संगीत शिक्षा को ही आवश्यक परिवर्तन करके उसके द्वितीय संस्करण के रूप में छपवा कर प्रसिद्ध कर रहा हूँ। भातखण्डे संगीत विद्यापीठ की संगीत–मध्यमा के प्रथम वर्ष का अभ्यासक्रम वही है जो खैरागढ़ के इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय की संगीत–मध्यमा के प्रथम वर्ष का है। अतएव यह पुस्तक उस विश्व-विद्यालय की प्रथम श्रेणी के भी उपयोगी होगी।

इस पुस्तक के दो भाग होंगे। ये दोनों भाग मिलकर उक्त द्विवार्षिक अभ्यासक्रम पूर्ण करते हैं। इस समय प्रथम भाग प्रकाशित हो रहा है। शीघ्र ही इसका द्वितीय भाग प्रकाशित होगा।

इतने वर्षों के संगीत-अध्ययन कार्य के अनुभव के पश्चात् मुझे जो कठिनाइयाँ संगीत-छात्रों को उनके संगीत-अध्ययन तथा अभ्यास में होती हैं, उन पर पूर्ण विचार करके मैंने ये पाठ्य-पुस्तकें बनाने का प्रयत्न किया है। आशा रखता हूँ कि अपेक्षित कार्य में ये पूर्णतया उपयोगी सिद्ध होंगीं।

खैरागढ़ (म. प्र.)
चैत्र शुद्ध प्रतिपदा, शक १८८२
२८ मार्च १९६० ईसवी

श्री. ना. रातंजनकर

प्रस्तावना – तृतीय संस्करण

अभिनव संगीत शिक्षा – प्रथम भाग का यह तृतीय संस्करण लगभग पच्चीस वर्षों के पश्चात् संगीत-प्रेमियों की सेवा में पुनश्च प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत हर्ष हो रहा है। इस कालावधि में इस पुस्तक के द्वितीय संस्करण की सभी प्रतियाँ कई वर्षों पूर्व ही बिक चुकी थी तथा दुर्भाग्यवश लेखक का एकाएक देहावसान हो जाने के कारण, पुस्तक की माँग होते हुए भी, कुछ औपचारिक तथ अपरिहार्य कठिनाइयों के कारणवश, पुस्तक का पुनर्मुद्रण करने में काफी विलम्ब हुआ है ।

गुरुवर्य आचार्य रातंजनकरजीने अपना समस्त जीवन संगीत के प्रचार तथा प्रसार में व्यतीत किया। भविष्य में स्थायीरूप में उनके इस कार्य को कार्यान्वित रखने के हेतु, गत कुछ वर्षों से उनके निकटतम शिष्यगण तथा शुभचिंतक प्रयत्नशील रहे और उनके प्रयासों के फलस्वरूप फरवरी १९८५ में "आचार्य एस्.एन्. रातंजनकर फाऊण्डेशन" नामक ट्रस्ट की स्थापना की गई । इसके साथ साथ, गुरुवर्य रातंजनकरजी के सभी उत्तराधिकारियोंने इस 'फाऊण्डेशन' द्वारा निर्धारित उद्देशोंकी मनोमन सराहना करते हुए, सहर्ष उनके समस्त पुस्तकों एवम् संगीत-सम्बन्धी लेखन के 'प्रकाशन-अधिकार' उपरोक्त 'फाऊण्डेशन' को सौंप दिये, जिससे लेखक के सभी पुस्तकों का पुनर्मुद्रण तथा उनके संगीत-सम्बन्धी अन्य लेखन का प्रकाशन कर उसे, जनता की सेवा में पुनश्च प्रस्तुत करने में अति सुविधा हुई है। और, इन्हीं प्रयासों मे फलस्वरूप 'फाऊण्डेशन' की ओर से इस पुस्तक का तृतीय संस्करण जनता की सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके पश्चात शनैः शनैः अनुकूलतानुसार लेखक के अन्य पुस्तकों का संशोधित-प्रकाशन शीघ्र ही किया जाएगा ।

यह पुस्तक, लखनऊ के भातखण्डे संगीत विद्यापीठ, खैरागढ़ स्थित इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय तथा देश के अन्य सभी मान्यवर संगीत संस्थाओं द्वारा निर्धारित प्रथम वर्ष के अभ्यासक्रम के अनुरूप पुनर्गठित की गई है, जिससे इस पुस्तक का लाभ सब को मिल सके ।

लेखक के प्रदीर्घ संगीत-अध्यापन कार्य द्वारा प्राप्त अनुभव के पश्चात् संगीत-छात्रों को, उनके संगीत-अध्ययन तथा अभ्यास करने में जो कठिनाइयाँ आती हैं, उन पर पूर्ण विचार करते हुए, इस पुस्तक की निर्मिति लेखक ने की है ।

हमें पूर्ण आशा है कि संगीत-शिक्षक तथा छात्रगण, दोनों को इस पुस्तक द्वारा पर्याप्त लाभ होगा ।

बम्बई, स्वातंत्रदिवस,
दि. १५ अगस्त १९८६

विश्वस्त मण्डल,
आचार्य एस्. एन्. रातंजनकर फाऊण्डेशन

विषय—सूची

पाठ क्रमांक		विषय		पृष्ठ
१	—	षड्ज स्वर-साधन	... ...	१
२	—	तार षड्ज स्वर-साधन	... ...	२
३	—	पंचम स्वर-साधन	... ...	३
४	—	स्वर में विश्रांति	... ...	४
५	—	विश्रांति स्थानों पर षड्ज	... ...	५
६	—	,, ,, ,, ,, पंचम एवं तार-षड्ज		६
७	—	गांधार स्वर-साधन	... ...	८
८	—	निषाद स्वर-साधन	... ...	१०
९	—	ऋषभ एवं धैवत स्वर-साधन	... ...	११
१०	—	मध्यम स्वर-साधन	... ...	१५
११	—	स्वरों के आरोह-अवरोह व पलटे	... ...	१७
१२	—	ताल एवं त्रिताल	... ...	२०
१३	—	स्वरों के तीन स्थान	... ...	२४
१४	—	बिलावल राग	... ...	२५
१५	—	राग बिलावल-सरगम	... ...	२६
१६	—	राग बिलावल-लक्षणगीत	... ...	२७
१७	—	ताल झपताल	... ...	२८
१८	—	राग बिलावल-भजन-झपताल	... ...	२९
१९	—	राग बिलावल-त्रिताल	... ...	३१
२०	—	ताल चौताल	... ...	३३
२१	—	राग बिलावल-ध्रुवपद	... ...	३४
२२	—	विकृत स्वर	... ...	३६
२३	—	तीव्र मध्यम साधन	... ...	३८
२४	—	राग यमन	... ...	४०
२५	—	राग यमन-सरगम	... ...	४१
२६	—	राग यमन-लक्षणगीत	... ...	४२
२७	—	राग यमन-भारत गीत	... ...	४३
२८	—	राग यमन-ध्रुवपद	... ...	४५

पाठ क्रमांक		विषय		पृष्ठ
२९	–	राग भूपाली	... ...	४८
३०	–	राग भूपाली-सरगम	... ...	५०
३१	–	राग भूपाली-लक्षणगीत	... ...	५१
३२	–	राग भूपाली-बाँसुरी गीत	... ...	५२
३३	–	राग भूपाली-भजन	... ...	५३
३४	–	राग भूपाली-ध्रुवपद	... ...	५५
३५	–	कोमल निषाद साधन	... ...	५८
३६	–	राग खमाज	... ...	५९
३७	–	राग खमाज-सरगम	... ...	६०
३८	–	राग खमाज-लक्षणगीत	... ...	६१
३९	–	राग खमाज-साध्रा	... ...	६२
४०	–	ताल कहरवा	... ...	६५
४१	–	राग खमाज-भजन	... ...	६५
४२	–	राग खमाज-ध्रुवपद	... ...	६७
४२	(अ)	ताल दादरा	... ...	७०
४३	–	राग देस रागवर्णन, स्वरविस्तार व तानें	...	७१
४४	–	राग देस सरगम-त्रिताल	... ...	७३
४५	–	राग देस-लक्षणगीत–,,	... ...	७४
४६	–	राग देस गीत– ,,	... ...	७५
४७	–	राग देस ध्रुवपद-चौताल	... ...	७६
४८	–	कोमल गांधार साधन	... ...	७९
४९	–	राग काफी	... ...	८०
५०	–	राग काफी-सरगम	... ...	८२
५१	–	राग काफी लक्षणगीत	... ...	८३
५२	–	राग काफी फुलवारी गीत	... ...	८४
५३	–	राग काफी-होली	... ...	८६
५४	–	राग काफी-ध्रुवपद	... ...	८९
५५	–	राग काफी-भजन	... ...	९२
५६	–	राग काफी-बाँसुरी गीत	... ...	९३

पाठ क्रमांक		विषय		पृष्ठ
५७	—	कोमल ऋषभ, कोमल धैवत साधन	... ...	९५
५८	—	कोमल री, ग, ध, नि साधन	... ...	९६
५९	—	शुद्ध री तथा कोमल री की भिन्नता	... ...	९७
६०	—	शुद्ध ध तथा कोमल ध की भिन्नता	... ...	९८
६१	—	शुद्ध एवं कोमल स्वरों की भिन्नता	... ...	९८
६२	—	राग भैरव	... ...	९९
६३	—	राग भैरव-सरगम	... ...	१००
६४	—	राग भैरव-गीत	... ...	१०१
६५	—	राग भैरव-लक्षणगीत	... ...	१०३
६६	—	राग भैरव-ध्रुवपद	... ...	१०४
६७	—	राग आसावरी	... ...	१०७
६८	—	राग आसावरी-सरगम	... ...	१०९
६९	—	राग आसावरी-लक्षणगीत	... ...	११०
७०	—	राग आसावरी-गीत	... ...	११२
७१	—	राग आसावरी-भजन	... ...	११३
७२	—	राग भैरवी	... ...	११५
७३	—	राग भैरवी-सरगम	... ...	११७
७४	—	राग भैरवी-लक्षणगीत	... ...	११८
७५	—	राग भैरवी-भजन	... ...	१२०
७६	—	राग भैरवी-गीत	... ...	१२१
७७	—	राग भैरवी-ध्रुवपद	... ...	१२३
७८	—	कोमल रिखब, तीव्र मध्यम साधन	... ...	१२६
७९	—	राग मारवा	... ...	१२६
८०	—	राग मारवा-सरगम	... ...	१२७
८१	—	राग-मारवा लक्षणगीत	... ...	१२८
८२	—	राग मारवा-लक्षणगीत	... ...	१२९
८३	—	राग मारवा-गीत	... ...	१३१
८४	—	राग मारवा-ध्रुवपद	... ...	१३२
८५	—	कोमल री, ध तथा तीव्र मध्यम साधन	... ...	१३५

पाठ क्रमांक		विषय			पृष्ठ
८६	—	राग पूर्वी	...	...	१३६
८७	—	राग पूर्वी-सरगम	...	...	१३८
८८	—	राग पूर्वी-लक्षणगीत	...	...	१३८
८९	—	राग पूर्वी-गीत	...	...	१४०
९०	—	राग पूर्वी-साधा	...	...	१४१
९१	—	कोमल री, ध, ग एवं तीव्रमध्यम साधन	...	...	१४४
९२	—	राग तोडी	...	...	१४५
९३	—	राग तोडी-सरगम	...	...	१४६
९४	—	राग तोडी-लक्षणगीत	...	...	१४७
९५	—	राग तोडी-भजन	...	...	१४९
९६	—	राग तोडी-गीत	...	...	१५०
९७	—	राग तोडी-गीत	...	...	१५२
९८	—	राग तोडी-ध्रुवपद	...	...	१५३
९९	—	ताल एकताल	...	...	१५६

स्वरलिपि का खुलासा

रे, ग, ध, निः— इन स्वरों के नीचे "–" ऐसी आड़ी लकीर हों जैसे— <u>रे</u> <u>ग</u> <u>ध</u> <u>नि</u>, तो वे कोमल समझना चाहिए। वैसी न हों तो तीव्र या शुद्ध समझना चाहिए।

म— इस प्रकार लिखा हुआ शुद्ध या कोमल "म" समझा जाय।

मं— इस प्रकार लिखा हुआ तीव्र "म" समझा जाय।

• — जिन स्वरों के नीचे ऐसी बिन्दी हों वे मंद्रसप्तक के तथा जिनके माथेपर वह होगी ये सब तारसप्तक के स्वर समझे जाँय। बग़ैर बिन्दी के सब स्वर मध्यसप्तक के हैं।

‿ — इस चिह्न के अन्दर लिखे हुए सब स्वर एकमात्रा काल में गाने होंगे। जैसे म ग रे सा

⁀ — यह चिह्न मींड़ का है। किस स्वर से किस स्वर पर मींड लेकर जाना चाहिए यह बताता है। जैसे प रे

— जिस स्वर के आगे यह चिह्न हों उस स्वर पर ज़रूरी वक्त तक और अधिक ठहरावा है। चिह्न की जगह खाली हों तो वह उतने ही काल की विश्रांति समझना चाहिए।

ऽ— गीतों के बोलों में जहाँ ऐसे अवग्रह के चिह्न हों वहाँ पिछले अक्षर का अन्तिम स्वर (आकार, इकार इ.) उतने ही काल तक और बढ़ाना चाहिए

कहीं-कहीं स्वरों के माथेपर बांई ओर छोटे हर्फों में लिखे हुये स्वर होते हैं जैसे ^प^**म**, ^नि^**प**, उनको अलंकारिक स्वर ("ग्रेस नोट्स्") कहते हैं। ये छोटे कन् नये-नये छात्रों के गले से लग सकें तो गाना अधिक मीठा होगा।

( )— ऐसे कंस में लिखा हुआ स्वर बहुत ही द्रुत में दो बार गाना है, जिसमें पहली बार उसको ऊपर के स्वर का कन् व दूसरी बार नीचे के स्वर का कन् देकर उसको गाना है; जैसे :—

ध म
(प) = प प या धपमप

प ग
(म) = म म या पमगम

रें नि
(सां) = सां सां या रेंसांनिसां

×— यह चिह्न गाने के ताल का सम बताता है। सम को हमेशा १ ताली गिनकर और तालियों के क्रमांक लगाने चाहिए।

०— यह चिह्न खाली के हैं।

,— गीतों में कहीं-कहीं स्वल्प विराम दिये गये हैं, वहाँ रुकने का मतलब नहीं है, वे केवल गीत के अलग-अलग टुकड़े बताते हैं।

प्राथमिक सूचना

१—अपनी शक्ति के अनुसार गला खोलकर आकार में गाना। रागदारी संगीत में दबी हुई आवाज़ में गाने से चाहे जितना अभ्यास क्यों न किया जाये गला कभी नहीं बनेगा।

२—अपने गले का स्वभाव धर्म न बिगाड़ते हुए गाना। कृत्रिम (नकली) आवाज़ में गाने से आवाज़ बिगड़ जाती है।

३—प्रत्येक मनुष्य के आवाज़ की ऊँची नीची मर्यादा रहती है। मर्यादा से बाहर ऊँचे स्वर में गाना नहीं चाहिये, उससे गले की नसों पर ज़ोर पड़कर गला बिगड़ जाता है। साधारणतया मन्द्र पंचम से लेकर तार सप्तक् के पंचम पर्यंत साफ सुनाई दे ऐसी ऊँचाई पर षड्ज निश्चित करना चाहिये। यह बात विशेषतः रागदारी संगीत के संबंध में ध्यान रखने योग्य है। हलके गीतों में हलकी आवाज में एवं ऊँचे स्वर में गाने में कोई बाधा नहीं, क्यों कि उनमें न बहुत ऊँचा न नीचा जाना पड़ता है। अधिकतर छोटे छोटे मधुर स्वरालापों में शब्दों को दुहराते हुए हलके गीतों का गाना होता है।

४—रागदारी संगीत में शब्दों का उच्चारण भी चौड़ा होना चाहिये।

५—गानक्रिया में श्वास नियंत्रण (साँस पर काबू) अत्यंत महत्वपूर्ण है। अभ्यास से इच्छानुसार साँस रोकने का सामर्थ्य प्राप्त किया जा सकता है। धीमी लय में स्वरों पर ठहरते हुए गाने का अभ्यास करने से श्वास नियंत्रण सध जाता है।

६—आवाज़ की शक्ति, ऊँची नीची मर्यादा तथा उसके स्वभावधर्म (जाति) पर यथा योग्य ध्यान रखते हुए एवं श्वासनियंत्रण का अभ्यास करते हुए गाने पर अवश्य यश प्राप्त होगा।

७—साधारणतया स्त्री तथा बालक की आवाज का षड्ज "सा" F (३४१$\frac{१}{३}$ स्फुरण वेग के स्वर) से A (४२६$\frac{२}{३}$ स्फुरण वेग के स्वर) पर्यंत किसी एक स्वर पर रहता है, जब कि पुरुषों का षड्ज C (२५६ स्फुरण वेग के स्वर) से E (३२० स्फुरण वेग के स्वर) पर्यंत किसी स्वर पर रहता है।

८—आवाज़ की जाति एवं ऊँची-नीची मर्यादा पर ध्यान रखते हुए विद्यार्थियों की गणरचना (कक्षायें) होनी चाहिये।

पाठ १

संगीत का प्रथम स्वर "षड्ज" अथवा "खर्ज" है। प्रत्यक्ष गाने में इसको "सा" कह कर गाया जाता है।

मान लो कि यह 'सा' एक सेकण्ड कालावकाश में गाया जाता है। अब 'सा' स्वयं एक सेकंड कालावधि में गाना है और उसके आगे जितने '—' ये चिन्ह होंगे उतने सेकंड उस पर अधिक ठहराना है जैसे :—

सा — — — — — — —

सा स्वयं एक सेकंड और उसके आगे सात सेकंड और ठहरना है। अतएव सब मिलकर आठ "सा" गाना है।

एक सेकंड को एक मात्रा कहेंगे। अब आठ मात्रा तक 'सा' गाओ, मात्रा दाहिने हाथ की पहली उँगली से बायें हाथ पर आघात करते हुए गिनो :—

सा — — — — — — —

सा — — — — — — —

सा — — — — — — — इत्यादि

(शिक्षक स्वयं विद्यार्थियों के साथ मात्रा गिनते हुए गाता रहे) आवाज़ खोलकर गाओ।

अब 'सा' के स्थान पर 'आ' आठ मात्रा तक गाते जाओ। जैसे :—

स्वर { सा — — — — — — —
उच्चार { आ — — — — — — —

स्वर { सा — — — — — — —
उच्चार { आ — — — — — — —

स्वर { सा — — — — — — —
उच्चार { आ — — — — — — —

इत्यादि

फलक पर 'सा' लिखा जाता है उसको पढ़ते हुए गाओ :—

सा — — — — — — —

स्वरों की हाथ की निशानियाँ भी होती हैं। इनको हम लोग मुद्रा कहेंगे। दाहिने अथवा बायें हाथ की १ ली (तर्जनी) उँगली खोल कर 'सा' दिखाया जाता है। जैसे

स्वर — सा

मुद्राएँ

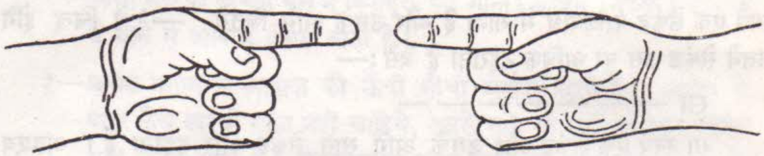

अथवा

(शिक्षाक्रमः—दो तीन दिन इस प्रकार फलक पर 'सा— — — — — — —' लिखकर उस पर निर्देश करते हुए एवं हस्त संकेत से काम लेते हुए कभी-कभी विद्यार्थियों से 'सा' गवाया जाय। गवाते समय कण्ठस्वर का उच्चारण एवं श्वास नियंत्रण पर लक्ष्य पहुँचाते हुए गवाना चाहिये। प्रारम्भ में शिक्षक को विद्यार्थियों के संग स्वयं गाना होगा। जैसे ही विद्यार्थियों के कानों में स्वर ठीक जम जाये और वे स्वयं गा सकेंगे, हस्त संकेत एवं फलक पर लिखकर गवाना चाहिये।)

पाठ २

यही 'सा' (षड्ज) ऊँची आवाज़ से गाया जाता है, तब उसको बड़ा 'सा' अथवा तार सप्तक का सा अथवा 'तार सा' कहते हैं। यह बड़ा सा पहले 'सा' से दुगना ऊँचा होता है।

(शिक्षा क्रमः—तीन चार दिन 'सा' (मध्य सप्तक का) विद्यार्थियों से ठीक स्थिर एवं मीठे कण्ठस्वर में गाना सध जाने के पश्चात् उनसे तार सप्तक का 'सा' गवाया जाय। यह 'सा' गवाते समय आवाज़ में किसी प्रकार की कर्कशता एवं कंपन न उत्पन्न हो इस पर ध्यान देते हुए गवाना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं कि आवाज़ दबाते हुए गाना है। आवाज़ को खोल कर ही गाना चाहिए पर उसमें कर्कशता अथवा कम्पन न हो)

लिखने में बड़ा 'सा' ऊपर एक बिंदी देकर लिखा जाता है, जैसे 'सां'

(फलक पर 'सां— — — — — — — —' लिखा जाय) अब इस सां को आठ मात्रा तक स्थिरता के साथ गाओ। अब इसी सां को 'आ'कार में आठ मात्रा तक स्थिरता के साथ गाओ, जैसेः—

सां — — — — — — — —

आ — — — — — — — —

सां दाहिने अथवा बायें हाथ की सब उँगलियाँ खोलकर इस प्रकार दिखाया जाता है।

मुद्राएँ

अथवा

(शिक्षाक्रमः—प्रथम स्वयं गाकर, फलक पर लिखकर एवं हस्तसंकेत से काम लेते हुए दोनों 'सा' गवाना चाहिये)

पाठ ३

सा से पाँचवे स्वर का नाम पंचम है। गाने में इसको 'प' कहते हैं।

शिक्षाक्रमः—(सात आठ दिन छोटा और बड़ा दोनों षड्ज विद्यार्थियों से ठीक गवाकर तब पंचम सिखाया जाय) पंचम लिखने में 'प' लिखा जाता है। जैसे, प — — — — — — — —

शिक्षाक्रमः—(फलक पर लिखकर मात्राओं के साथ गवाया जाय)

गाओः प— — — — — — — —। इसी प को आकार में आठ मात्रा तक गाओ।

प — — — — —

आ — — — — — — —

शिक्षाक्रम :—(ऊपर बताये अनुसार 'सा, प, सां' स्वयं गाकर, फलक पर लिखकर गवाया जाय)

प केवल दाहिने हाथ की बीच की तीन उँगलियों को (तर्जनी, मध्यमा और अनामिका) खोलकर इस प्रकार दिखाया जाता है।

मुद्रा

प

पाठ ४

गाते हुए किसी एक अथवा अधिक मात्रा पर चुप हो जाने को विश्रांति कहते हैं। विश्रांति का चिन्ह '०' लिखकर समझेंगे। अब 'सा' की आठ मात्रा में से आठवीं, सातवीं और आठवीं; छठी, सातवीं और आठवीं तथा पाँचवीं, छठी, सातवीं एवं आठवी; इस प्रकार मात्राओं पर विश्रांति रखते हुए गाओ। जैसे :—

(१) सा — — — — — — — ०

(२) सा — — — — — — ० ०

(३) सा — — — — — ० ० ०

(४) सा — — — — ० ० ० ०

शिक्षाक्रम :—(ऊपर लिखे हुए पाठ फलक पर लिखकर एवं मात्रा गिनते हुए विद्यार्थियों से गवाये जाय)

अब ये विश्रांतियाँ पहले लेकर उसके पश्चात् सा गाओ।

(१) ० सा — — — — — — —
(२) ० ० सा — — — — — —
(३) ० ० ० सा — — — — —
(४) ० ० ० ० सा — — — —

पाठ ५

चौथे पाठ में सिखाए हुए विश्रांति स्थानों पर स्वयं सा अथवा प अथवा सां गाओ, जैसे :—

१ (अ) सा — — — — — — — सा
(ब) सा — — — — — — सा सा
(स) सा — — — — — सा सा सा
(द) सा — — — — सा सा सा सा
(इ) सा सा — — — — — — —
(फ) सा सा सा — — — — — —
(ग) सा सा सा सा — — — — —
(ह) सा सा सा सा सा — — — —

२ (अ) सा — — — — — — — सां
(ब) सा — — — — — — सां सां
(स) सा — — — — — सां सां सां
(द) सा — — — — सां सां सां सां
(इ) सां सा — — — — — — —
(फ) सां सां सा — — — — — —
(ग) सां सां सां सा — — — — —
(ह) सां सां सां सां सा — — — —

३ (अ) सा — — — — — — — प

(ब) सा — — — — — — प प

(स) सा — — — — — प प प

(ड) सा — — — — प प प प

(इ) प सा — — — — — — —

(फ) प प सा — — — — — —

(ग) प प प सा — — — — —

(ह) प प प प सा — — —

(शिक्षाक्रमः—ये सब पाठ फलक पर लिखकर तथा हस्तसंकेतों से काम लेते हुए बार बार दोहराये जाय।)

पाठ ६

अब चौथे पाठ में दिये हुए विश्रांति स्थानों में से किसी एक ही पर **सा, सां** अथवा **प** गाओ जैसे

१ (अ) सा — — — — — — — सा

(ब) सा — — — — — — सा ०

सा — — — — — — ० सा

(स) सा — — — — — सा ० ०

सा — — — — — ० सा ०

सा — — — — — ० ० सा

(ड) सा — — — — सा ० ० ०

सा — — — — ० सा ० ०

सा — — — — ० ० सा ०

सा — — — — ० ० ० सा

(इ) सा सा — — — — — — —

(फ) ० सा सा — — — — — —

सा ० सा — — — — — —

(ग) ० ० सा सा — — — —
० सा ० सा — — — —
सा ० ० सा — — — —
(ह) ० ० ० सा सा — — —
० ० सा ० सा — — —
० सा ० ० सा — — —
सा ० ० ० सा — — —

२ (अ) सा — — — — — — — सां
(ब) सा — — — — — — सां ०
सा — — — — — — ० सां
(स) सा — — — — — सां ० ०
सा — — — — — ० सां ०
सा — — — — — ० ० सां
(ड) सा — — — सां ० ० ०
सा — — — ० सां ० ०
सा — — — ० ० सां ०
सा — — — ० ० ० सां
(इ) सां सा — — — — — —
(फ) ० सां सा — — — — —
सां ० सा — — — — —
(ग) ० ० सां सा — — — —
० सां ० सा — — — —
सां ० ० सा — — — —
(ह) ० ० ० सां सा — — —
० ० सां ० सा — — —
० सां ० ० सा — — —
सां ० ० ० सा — — —

३ (अ) सा — — — — — — — — प

(ब) सा — — — — — — — ० प

सा — — — — — — — प ०

(स) सा — — — — — — प ० ०

सा — — — — — — ० प ०

सा — — — — — — ० ० प

(ड) सा — — — — प ० ० ०

सा — — — — ० प ० ०

सा — — — — ० ० प ०

सा — — — — ० ० ० प

(इ) प सा — — — — — — — —

(फ) ० प सा — — — — — — —

प ० सा — — — — — — —

(ग) ० ० प सा — — — — — —

० प ० सा — — — — — —

प ० ० सा — — — — — —

(ह) ० ० प सा — — — — — —

० ० प ० सा — — — — —

० प ० ० सा — — — — —

प ० ० ० सा — — — — —

(ये स्वर–पाठ फलक पर लिखकर एवं हस्त–संकेतों के द्वारा बार बार दोहराए जाय। विश्रांति स्थानों को, एक, दो, तीन, इत्यादि फेर फार करते हुए विद्यार्थियों से दोहराये जाने पर लय का ज्ञान उनको ठीक होता रहेगा।)

पाठ ७

(**सूचनाः** — छात्रों को 'सा,' 'प' एवं 'सां' ठीक याद होने पर अर्थात् हस्त संकेत द्वारा अथवा फलक पर लिख कर पूछे हुए, इनमें से किसी एक अथवा अधिक स्वरों को छात्र स्वयं अपनी बुद्धि से गले से निकाल सके एवं शिक्षक ने गाया

हुआ कोई भी स्वर छात्र ठीक पहचान सके, इतनी प्रगति होने पर अब आगे के स्वर सिखाने चाहिये।)

तीसरे स्वर का नाम गांधार है। गाते हुए उसको 'ग' कहते हैं। लिखने में गांधार को 'ग' करके लिखते हैं।

(फलक पर लिखकर मात्राओं के साथ गवाया जाय)

गाओ :— ग — — — — — — —

अब इसी 'ग' को आकार में गाओ।

ग — — — — — — —

आ — — — — — — —

गांधार दाहिने हाथ की दो उँगलियों को अर्थात् तर्जनी एवं मध्यमा को खोल कर दिखाया जाता है। जैसे :—

स्वर मुद्रा

ग

सूचना :—निम्नलिखित पाठ छात्रों से बार बार दोहराए जाय। हस्तसंकेत द्वारा एवं फलक पर लिखकर गवाये जाय।)

(१) ग — — — — — — —

(२) सा — — — — — — — ग — — — — — — — —

(३) सां — — — — — — — ग — — — — — — — —

(४) ग — — — — — — — — सा — — — — — — — —

(५) ग — — — — — — — — सां — — — — — — — —

(६) सा — — — — — — — — ग — — — — — — — —
सां — — — — — — — —

(७) सां — — — — — — — — ग — — — — — — — —
सा — — — — — — — —

(८) ग — — — — — — — — प — — — — — — — —

(९) प — — — — — — ग — — — — — —
(१०) सा — — — ग — — — प — — — सां — — —
(११) सां — — — प — — — ग — — — सा — — —
(१२) सा — — — प — — — ग — — — सां — — —
(१३) सां — — — ग — — — प — — — सा — — —
(१४) सा — — ग — — प — सां — — — — — —
(१५) सां — — प — — ग — सा — — — — — —
(१६) सा — ग — प — सां —, सां — प — ग — सा —
(१७) सा — प — ग — सां —, सां — ग — प — सा —
(१८) सा — — ग प — — सां, सां — — प ग — — सा

(ऐसे अनेक प्रकार स्वर-पाठों के लिखकर एवं उन्हीं को हस्त संकेत द्वारा स्वरोच्चार तथा आकार सहित क्रमानुसार दोहराया जाय। बीचबीच में विश्रान्ति चिन्हों को भी समाविष्ट कर के पाठ दिये जाय। विश्रान्ति चिन्हों का उपयोग करना हो तो कहीं कहीं '—' ऐसी रेखाएँ जहाँ हों, उनके स्थान पर "०" ऐसे विश्रान्ति चिन्हों को लिखा जाय।)

पाठ ८

सातवें स्वर को निषाद अथवा निखाद कहते हैं। निषाद 'नि' कर के लिखा जाता है। गाते हुए भी 'नि' कहा जाता है।

निषाद दाहिने हाथ की चार उँगलियों को अर्थात् तर्जनी मध्यमा अनामिका एवं कनिष्ठिका को खोल कर दिखाया जाता है।

जैसे:—

= नि

दोहराने के पाठ

(१) नि — — — — — — — —
(२) सां — — — — — — — — नि — — — — — — — —
(३) प — — — — — — — — नि — — — — — — — —
(४) ग — — — — — — — — नि — — — — — — — —
(५) सा — — — — — — — — नि — — — — — — — —
(६) सां — — — नि — — — प — — — ग — — —
(७) सा — — — ग — — — प — — — नि — — —
(८) सा — — ग — — प — — नि — — सां — — —
(९) सां — — नि — — प — — ग — — सा — — —
(१०) सा — — — प — — — नि — — — ग — — —
(११) सा — — — प — — — ग — — — नि — — —
(१२) सां — — — ग — — — नि — — — प — — —
(१३) सा — — — नि — — — ग — — — प — — —
(१४) सा — ग — प — ग — प — नि — सां — — —
(१५) सां — नि — प — नि — प — ग — सा — — —
(१६) सा — ग — प — नि — सां — नि — प — ग —
(१७) सां — नि — प — ग — सा — ग — प — नि —
(१८) सा — प — ग — प — नि — प — सां — — —
(१९) सां — प — नि — प — ग — प — सा — — —

(हस्त संकेत, फलक पर स्वरलिपि एवं विश्रान्ति चिन्हों से बराबर काम लिया जाय।)

पाठ ९

दूसरे एवं छठे स्वरों को क्रमशः ऋषभ अथवा रिखब एवं धैवत कहते हैं। गाते हुए ऋषभ को 'री' अथवा 'रे' एवं धैवत को 'ध' कहते हैं।

ऋषभ बाँये हाथ की दो उँगलियाँ अर्थात् तर्जनी एवं मध्यमा खोलकर दिखाया जाता है।

जैसे :—

= री

धैवत बाँये हाथ की चार उँगलियाँ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका एवं कनिष्ठिका खोल कर दिखाया जाता है।

जैसे :—

= ध

ऋषभ साधन व दोहराने के पाठ

(१) री — — — — — — — —

(२) सा — — — — — — — — री — — — — — — — —

(३) ग — — — — — — — — री — — — — — — — —

(४) प — — — — — — — — री — — — — — — — —

(५) सा — — — री — — — ग — — — प — — —

(६) प — — — ग — — — री — — — सा — — —

(७) सा — री — ग — प — नि — — — सां — — —

(८) सां — नि — प — ग — री — — — सा — — —

(९) सा — ग — री — प — ग — नि — प — सां —

(१०) सां — प — नि — ग — प — री — ग — सा —

जैसे बड़ा अथवा तार सप्तक का सा होता है उसी प्रकार बड़ा अथवा तार सप्तक का री, बड़ा अथवा तार सप्तक का ग भी होता है। तार सप्तक के सब स्वरों पर एक बिन्दी दी जाती है जैसे तार सप्तक के 'सां' पर दी जाती है।

जैसे—(१) रीं अथवा रें
(२) गं

तार सप्तक के स्वर केवल हाथ ऊँचा उठाकर उनके यथायोग्य संकेत करके दिखाये जाते हैं।

रीं

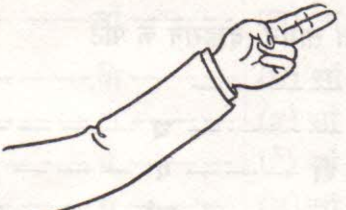

री

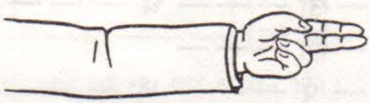

गं

ग

अब इन स्वरों को भी और स्वरों के साथ गावें:—

(१) री — — — — — — — — — रीं — — — — — — — — —
(२) ग — — — — — — — — — गं — — — — — — — — —
(३) सा — री — ग — — — — सां — रीं — गं — — —
(४) सा — री — — — — ग —, सां — रीं — — — — गं —
(५) गं — रीं — सां — — — —, ग — री — सा — — —
(६) गं — रीं — — — — सां —, ग — री — — — — सा —
(७) सा — — — री — ग —, सां — — — — रीं — गं —
(८) गं — — — — रीं — सां —, ग — — — — री — सा —

(९) सा — री — ग -- प —, नि — सां — रीं — गं —
(१०) गं — रीं — सां — नि —, प — ग — री — सा —

इत्यादि और भिन्न-भिन्न अनुक्रम से स्वर समुदाय लिखकर एवं हस्त-संकेतों द्वारा दोहराए जाय।

धैवत साधन दोहराने के पाठ

(१) ध — — — — — — — — —
(२) प — — — — — — — — — ध — — — — — — — — —
(३) सा — — — री — — — प — — — ध — — —
सां — — — रीं — — —
(४) रीं — — — सां — — — ध — — — प — — —
री — — — सा — — —
(५) सा — — — प — — — ध — — — — — — — — —
(६) ध — — — प — — — सा — — — — — — — — —
(७) सा — — — ग — — — प — — — ध — — —
(८) ध — — — प — — — ग — — — सा — — —
(९) सा — — री — — ग — — प — — ध — — —
(१०) ध — — प — — ग — — री — — सा — — —
(११) ध — — — नि — — — सां — — — — — — — — —
(१२) सां — — — नि — — — ध — — — — — — — — —
(१३) ध — — नि — — सां — — रीं — — सां — — —
(१४) सां — — रीं — — सां — — नि — — ध — — —
(१५) प — — ध — — नि — — सां — — रीं — — —
(१६) रीं — — सां — — नि — — ध — — प — — —
(१७) सा — री — ग — प — ध — नि — सां — — —
(१८) सां — नि — ध — प — ग — री — सा — — —
(१९) सा — री — ग — प — ध — नि — सां — रीं —
गं — — — — — — — —
(२०) गं — रीं — सां — नि — ध — प — ग — री —
सा — — — — — — — —

(२१) (अ) सा ——— री ———		(ग) सा ——— सां ———
(ब) सा ——— ग ———		(ह) सा ——— नि ———
(स) सा ——— प ———		(ई) सा ——— ध ———
(ड) सा ——— ध ———		(ज) सा ——— प ———
(इ) सा ——— नि ———		(क) सा ——— ग ———
(फ) सा ——— सां ———		(ल) सा ——— री ———
(२२) (अ) सां ——— नि ———		(ग) सां ——— सा ———
(ब) सां ——— ध ———		(ह) सां ——— री ———
(स) सां ——— प ———		(ई) सां ——— ग ———
(ड) सां ——— ग ———		(ज) सां ——— प ———
(इ) सां ——— री ———		(क) सां ——— ध ———
(फ) सां ——— सा ———		(ल) सां ——— नि ———

इत्यादि अदल-बदल करते हुए स्वर-पाठ दोहराये जाय।

पाठ १०

चौथे स्वर को मध्यम कहते हैं। लिखने में मध्यम 'म' करके लिखा जाता है बाँये हाथ की तीन उँगलियाँ, तर्जनी, मध्यमा एवं अनामिका खोल कर इस स्वर को दर्शाया जाता है। जैसे :—

म

मध्यम साधन दोहराने के पाठ

(१) सा ——————— म ——— ———

(२) म ——————— सा ——— ———

(३) सा ——————— प ——— ———

सा ——————— म ——— ———

(४) प — — — — — — — — सा — — — — — — —
म — — — — — — — — सा — — — — — — —
(५) सा — — — प — — — सां — — — — — — —
सां — — — प — — — सा — — — — — — —
(६) सा — — — म — — — सां — — — — — — —
सां — — — म — — — सा — — — — — — —
(७) सा — — — म — — — प — — — सां — — —
सां — — — प — — — म — — — सा — — —
(८) सा — री — सा — — —, म — प — म — — —,
प — ध — प — — —, सां — रीं — सां — — —;
(९) सां — रीं — सां — — —, प — ध — प — — —,
म — प — म — — —, सा — री — सा — — —
(१०) सा — री — ग — — —, म — प — ध — — —,
सां — रीं — गं — — —;
(११) गं — रीं — सां — — —, ध — प — म — — —,
ग — री — सा
(१२) सा — — — ग — — — प — — — नि — — —
नि — — — प — — — ग — — — सा — — —
(१३) सा — — — री — — — म — — — ध — — —
ध — — — म — — — री — — — सा — — —
(१४) सा — री — ग — म — प — ध — नि — सां —
सां — नि — ध — प — म — ग — री — सा —

(१५) (अ) सा — — — री — — — (हृ) सा — — — सां — — —
(ब) सा — — — ग — — — (ई) सा — — — नि — — —
(स) सा — — — म — — — (ज) सा — — — ध — — —
(ड) सा — — — प — — — (क) सा — — — प — — —
(इ) सा — — — ध — — — (ल) सा — — — म — — —
(फ) सा — — — नि — — — (म) सा — — — ग — — —
(ग) सा — — — सां — — — (न) सा — — — री — — —

(१६) (अ) सां ——— नि ———	(ह) सां ——— सा ———
(ब) सां ——— ध ———	(ई) सां ——— री ———
(स) सां ——— प ———	(ज) सां ——— ग ———
(ड) सां ——— म ———	(क) सां ——— म ———
(इ) सां ——— ग ———	(ल) सां ——— प ———
(फ) सां ——— री ———	(म) सां ——— ध ———
(ग) सां ——— सा ———	(न) सां ——— नि ———

(१७) सा — री — ग — म — प — ध — नि — सां —
रीं — गं — — — — — —

(१८) गं — रीं — सां — नि — ध — प — म — ग —
री — सा — — — — — —

इत्यादि :—पहले सूचित किये अनुसार स्वर-लिपि, मुद्राएँ, आकार, एवं विश्रान्ति-स्थानों का उपयोग करते हुए आवश्यकतानुसार पाठ दोहराए जाँय।

पाठ ११

(१) 'सारीगमपधनि' इस क्रम से ये सात स्वर कह जाने को **'आरोह'** (अर्थात् चढ़ाव) कहते हैं।

(२) 'सांनिधपमगरीसा' इस क्रम से ये सात स्वर कह जाने को **'अवरोह'** (अर्थात् उतार) कहते हैं।

अब ये सब स्वर मुद्राओं के साथ दिखाये जायँ। जैसे :—

सा = दाहिने हाथ की तर्जनी खुली।

री = बाँये हाथ की तर्जनी और मध्यमा खुली।

ग = दाहिने हाथ की तर्जनी और मध्यमा खुली।

म = बाँये हाथ की तर्जनी मध्यमा एवं अनामिका खुली।

प = दाहिने हाथ की तर्जनी मध्यमा एवं अनामिका खुली।

ध = बाँये हाथ की तर्जनी, मध्यमा अनामिका एवं कनिष्ठिका खुली।

नि = 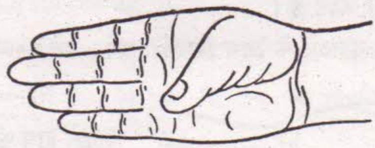 दाहिने हाथ की तर्जनी मध्यमा अनामिका एवं कनिष्ठिका खुली।

सां = 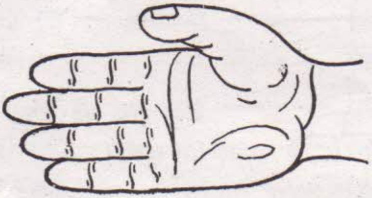 अथवा 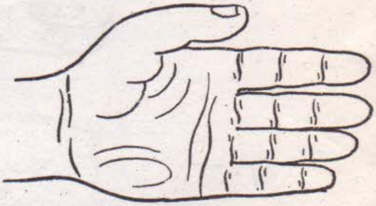

दाहिने हाथ अथवा बाँये हाथ की पाँचो उंगलियाँ खुली।

अलंकार (पलटे)

(१) आरोहः—सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां।
अवरोहः—सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा।

(२) आरोहः—सासा, रेरे गग, मम, पप, धध, निनि, सांसां।
अवरोहः—सांसां, निनि, धध, पप, मम, गग, रेरे, सासा।

(३) आः—सासासा, रेरेरे, गगग, ममम, पपप, धधध, निनिनि, सांसांसां।
अवः—सांसांसां, निनिनि, धधध, पपप, ममम, गगग, रेरेरे, सासासा।

(४) आः—सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनि, धनिसां।
अवः—सांनिध, निधप, धपम, पमग, मगरे, गरेसा।

(५) आः—सारेगम, रेगमप, गमपध, मपधनि, पधनिसां।
अवः—सांनिधप, निधपम, धपमग, पमगरे, मगरेसा।

(६) आः—सारेगमप, रेगमपध, गमपधनि, मपधनिसां।
अवः—सांनिधपम, निधपमग, धपमगरे, पमगरेसा।

(७) आः—सारेसा, रेगरे, गमग, मपम, पधप, धनिध, निसांनि, सां।
अवः—सांनिसां, निधनि, धपध, पमप, मगम, गरेग, रेसारे, सा।

(८) आः—साग, रेम, गप, मध, पनि, धसां।
अवः—सांध, निप, धम, पग, मरे, गसा।

(९) आः—साम, रेप, गध, मनि, पसां।
अवः—सांप, निम, धग, परे, मसा।

(१०) आः—साप, रेध, गनि, मसां।
अवः—सांम, निग, धरे, पसा।

(११) आः—सारेसारेग, रेगरेगम, गमगमप, मपमपध, पधपधनि धनिधनिसां।
अवः—सांनिसांनिध, निधनिधप, धपधपम, पमपमग, मगमगरे, गरेगरेसा।

(१२) आः—सारेसारेगम, रेगरेगमप, गमगमपध, मपमपधनि, पधपधनिसां।

अवः—सांनिसांनिधप, निधनिधपम, धपधपमग, पमपमगरे, मगमगरेसा।

(१३) आः—सागरेसा, रेमगरे, गपमग, मधपम, पनिधप, धसांनिध, निरेंसांनि, सां।

अवः—सांधनिसां, निपधनि, धमपध, पगमप, मरेगम, गसारेग, रेऩिसारे, सा।

(१४) आः—सारेगसारेगम, रेगमरेगमप, गमपगमपध, मपधमपधनि, पधनिपधनिसां।

अवः—सांनिधसांनिधप, निधपनिधपम, धपमधपमग, पमगपमगरे, मगरेमगरेसा।

(१५) आः—सारे, रेग, गम, मप, पध, धनि, निसां।

सांनि, निध, धप, पम, मग, गरे, रेसा।

सूचना:—यह सब पलटे स्वरोचार सहित एवं आकार में दोहराये जाँय। छात्रों के मुखपाठ होने चाहिये। स्वरलिपि एवं हस्तसंकेतों का भी उपयोग किया जाय।

पाठ १२

ताल

पहले पाठ १ में मात्रा एक विशिष्ट कालावधि के अर्थ में समझाई गई है। वह मात्रा एक सेकंड के बराबर बतायी गई है। स्वर, आकार अथवा गीत के अक्षरों की कालावधि नापने का प्रमाण '**मात्रा**' है। पर मात्रा का अवकाश इच्छानुसार एक, आधा, चौथाई, डेढ़, दो, तीन, चार सेकंड तक छोटा लम्बा रक्खा जा सकता है और उसके फलस्वरूप गायन द्रुत, मध्य अथवा विलंबित गति में हो जाता है। गायन की गति को '**लय**' कहते हैं। अतएव द्रुत (जल्द), मध्य (न बहुत जल्द न बहुत धीरे) एवं विलंबित (बहुत धीरे) ये लय के (गायन की गति के) ही प्रकार हैं। एक बार

१, ½, ¼, २ अथवा ३ सेकंड इत्यादि में से किसी एक के बराबर मात्रा निश्चित करने पर फिर उसको घटा बढ़ा नहीं सकते।

'**ताल**' मात्राओं का बना हुआ होता है। हर एक ताल की मात्रासंख्या निश्चित होती है, कोई ताल ६, कोई ८ मात्रा, कोई १२ और कोई १६ मात्राओं का भी होता है।

ताल की मात्राओं में से कुछ मात्राएँ हथेलियों से ताली बजा कर दिखाई जाती हैं। इन तालियों की संख्या हर एक ताल में निश्चित होती हैं। किसी ताल में एक, किसी में दो, किसी में तीन, किसी में चार इत्यादि तालियों की संख्या तालों में बँधी हुई होती है। जिस प्रकार तालियों से कुछ मात्रायें दिखायी जाती हैं, उसी प्रकार हथेली अलग हटा कर भी कुछ मात्राएँ दिखाई जाती हैं। इस प्रकार हथेली अलग हटाने को '**खाली**' कहते हैं। अतएव ताल कुछ तालियों और कुछ खालियों से बताया जाता है। जिन मात्राओं पर कोई ताली अथवा खाली न हो उन्हें वैसे ही उंगलियों से हथेली पर अथवा मन ही में गिनी जाती हैं।

किसी भी ताल की सब से पहली ताली को '**सम**' कहते हैं; क्यों कि गीत का पहला टुकड़ा, जो पुनः पुनः दोहराया जाता है, उसी पर आ कर समाप्त होता है।

ताल में बजने वाली तालियों को कभी '**भरी**' भी कहते हैं।

अब किसी एक ताल का उदाहरण लेंगे। हमारे संगीत में सब से अधिक व्यवहार में आने वाला ताल '**त्रिताल**' है।

त्रिताल

त्रिताल सोलह मात्राओं का होता है। उसमें तीन तालियाँ एवं एक खाली होती है। किसी भी ताल के 'सम' का चिन्ह '×' यह होता है। उसके पश्चात् जितनी तालियाँ होंगी उनके लिये क्रमशः २,३,४ इत्यादि क्रमांक लिखे जाते हैं। खाली का चिन्ह एक शून्य लिखकर दिया जाता है। त्रिताल की सम १ ली मात्रा पर, २ री ताली ५ वीं मात्रा पर एवं ३ री ताली १३ वीं मात्रा पर होती हैं। ९ वीं मात्रा पर एक खाली भी होती है। इन नियमों के अनुसार त्रिताल इस प्रकार होता है।

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
ताल	×				२				०				३			

अथवा

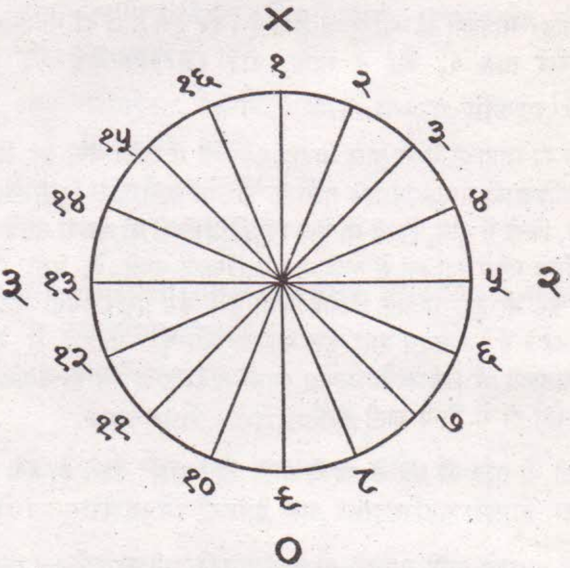

इस प्रकार १६ मात्रा पूरी हो जाने पर पुनश्च १, २, ३, इत्यादि १६ तक गिना जाता है।

ताल की मात्रा संख्या, उसमें आने वाली तालियाँ एवं खाली सहित एक चक्कर पूरा हो जाने पर उसको ताल का '**आवृत्त**' कहते हैं। ऊपर दिये हुए प्रकार से १६ मात्रा पूरी हो जाने पर त्रिताल का एक आवृत्त पूरा हुआ। गीत अथवा बाजे की गत ऐसे कई आवृत्तों से बंधी हुई होती है। यह नियम नहीं है कि बंधे हुए हर एक गीत को ताल के सम से ही आरम्भ किया जाय। ताल की किसी भी मात्रा से गीत की रचना का उठाव हो सकता है।

गाते हुए गायक के स्वयं ताल देने का व्यवहार हमारे यहाँ नहीं है। गीत का ताल तबलेपर, अथवा मृदंग पर तबलावादक अथवा मृदंग वादक बजाकर दिखाता है। कोई ताल तबलेपर जब बजाया जाता है तब उसको उस ताल का '**ठेका**' कहते हैं। यह ठेका ताल वाद्य पर निकलने वाले कुछ वर्णाक्षरों का बँधा हुआ होता है। हर एक ताल का अपना अपना ठेका स्वतंत्र होता है, जिससे वह ताल पहचाना जाता है। त्रिताल का ठेका, अर्थात् तबले पर बजने वाले बोल, निम्नलिखित हैं:—

त्रिताल–मात्रा, ताल व ठेका सहित

मात्रा	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६
ठेका	धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा	धा तिं तिं ता	ता धिं धिं धा
ताल—	×	२	०	३

अब कुछ शब्द त्रिताल में कुछ स्वरों के साथ अभ्यास के लिये गाएँ:—

[१]

सा सा सा सा	री – री री	ग म री ग	म प – प
र घु प ति	रा ऽ घ व	रा ऽ जा ऽ	रा ऽ ऽ म
०	३	×	२
प प – प	ध – नि नि	सां – सां रीं	सां – – सां
प ति ऽ त	पा ऽ व न	सी ऽ ता ऽ	रा ऽ ऽ म
०	३	×	२
सां सां सां नि	ध – प प	ध – म –	ग – – ग
र घु प ति	रा ऽ घ व	रा ऽ जा ऽ	रा ऽ ऽ म
०	३	×	२
ग री – री	ग म प प	म ग री –	सा – – सा
प ति ऽ त	पा ऽ व न	सी ऽ ता ऽ	रा ऽ ऽ म
०	३	×	२

[२]

सा सा सा सा	री – री री	री ग म प	म ग री री
र घु प ति	रा ऽ घ व	रा ऽ जा ऽ	रा ऽ ऽ म
०	३	×	२
री प – प	म ग म म	ग री ग री	सा – – सा
प ति ऽ त	पा ऽ व न	सी ऽ ता ऽ	रा ऽ ऽ म
०	३	×	२
सा प प प	प ध ध ध	प – म –	ग री – री
र घु प ति	रा ऽ घ व	रा ऽ जा ऽ	रा ऽ ऽ म
०	३	×	२

री	ग	-	ग	म	-	म	म	ग	री	सा	री	सा	-	-	सा
प	ति	-	त	पा	ऽ	व	न	सी	ऽ	ता	ऽ	रा	ऽ	ऽ	म
०				३				×				२			

पाठ १३

स्थान

सां, रीं, गं इत्यादि स्वर ऊँची आवाज में गाये जाते हैं तब उनको **'तार सप्तक'** के स्वर कहते हैं।

अब सा से नीची आवाज में भी स्वर गाये जाते हैं, जिनको **'मन्द्र सप्तक'** के स्वर कहते हैं। और, इन स्वरों के नीचे एक बिन्दी देकर लिखते हैं। हस्त-संकेत में इन स्वरों को हाथ नीचा कर के दिखाते हैं। जैसे :—

स्वर लिपि　　　　मुद्रा

नि़

ध़

प़

(१) न बहुत ऊँची न बहुत नीची आवाज़ में जिसमें साधारण बात-चीत की जाती है, वह **'मध्य सप्तक'** अथवा मध्य स्थान कहा जाता है। मध्य स्थान के शुद्ध

स्वरों को कोई चिन्ह नहीं होता है। वे वैसे ही लिखे जाते हैं। जैसे सा, री, ग, म, प, ध, नि।

(२) मध्य सप्तक से नीची आवाज में जब ये ही स्वर गाये जाते हैं तब उनको मन्द्र स्थान अथवा मन्द्र सप्तक के स्वर कहा जाता है। उन स्वरों के नीचे बिन्दी दी जाती है। जैसे :—

नि़, ध़, प़, म़, ग़, री़ सा़।

(३) मध्य सप्तक से ऊँची आवाज में गाये जाने वाले स्वरोंको तार स्थान अथवा तार सप्तक के स्वर कहा जाता है। ये स्वर ऊपर एक बिन्दी दे कर लिखे जाते हैं। जैसे :—

सां रीं गं मं पं धं निं

अब इन तीनों स्थानों के स्वर एक साथ लिखेंगे :—

मन्द्र सप्तक— सा़ री़ ग़ म़ प़ ध़ नि़
मध्य सप्तक— सा री ग म प ध नि
तार सप्तक— सां रीं गं मं पं धं निं

अब ताल में बँधी हुई एक सरगम एवं कुछ गाने बिलावल राग के गाएंगे।

पाठ १४

बिलावल राग

बिलावल राग में सब शुद्ध स्वर लगते हैं। हम लोग जो स्वर गाते चले आये हैं, वे सब शुद्ध स्वर ही हैं। बिलावल में ये सब के सब स्वर गाते हैं, अतएव इसको **सम्पूर्ण** जाति का राग कहते हैं। बिलावल में धैवत पर सब स्वरों से अधिक ठहरा जाता है एवं उसको सबसे अधिक प्रमाण में गाया जाता है। अतएव, उसको इस राग का '**वादी**' स्वर कहते हैं। धैवत का सहायक (मददगार), जो धैवत के अतिरिक्त और सब स्वरों से अधिक प्रमाण में गाया जाता है, गंधार है। वह इस राग का '**संवादी**' अर्थात् वादी से संवाद (नाता, मित्रता, स्नेह) रखने वाला स्वर माना जाता है। शेष सब स्वर अर्थात् सा रे म प एवं नि ये इस राग में '**अनुवादी**' अर्थात् अनुचर (धैवत—गंधार के साथ साथ चलकर उनकी शोभा बढ़ाने वाले) स्वर माने जाते हैं। बिलावल राग दिन के प्रथम प्रहर में सूर्योदय के बाद गाया जाता है। आरोह में मध्यम कम गाया जाता है।

आरोहः— सारे ग म गरे, ग प. ध, निसां
अवरोहः— सांनिधप, ध, मग, मरेसा

रागवाचक स्वर समुदायः—सा, ग म ग रे, गप, धनि, धनिसां।

इस राग का उठाव इस प्रकार होगाः—

सारेग रेसा, गम गरे, गप, धनि, ध, निसां।
सांनिधप, ध, मग, मपमग, मगरेसा।

राग की बढ़त इस प्रकार होगी :—

सा, गरेसा, सारेग, मगरे, गमप, मग, ध, प, ध, मग, मपमग, मरे सा।

सा, प, ध, प, ध, मग, रेगप, धनिध, निसां धप, सां निधप, मपमग, रेगमप, मग, गरेसा।

सा, मग, मगरे, गप, मग, ध, मग, मपधप, मग, रेगपधनिसां, धप, ध, मग, पमगरेसा।

पप, धनिध, निसां, सांरेंसां, धनिसांरेंसां, धप, गंरेंसां, पपधनिसां, धप, मप मग, ध, धनिप, धनिसां, धपमग, पमग, गरेसा।

(सूचनाः—इस प्रकार बिलावल के अलाप छात्रों से गवाये जाँए ताकि उनके चित्त में राग का स्वरूप ठीक पक्का हो जाये।)

पाठ १५

राग बिलावल–सरगम–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

म ग रे ग	प नि ध नि	सां — — रें	सां नि ध प
०	३	×	२
ध नि सां नि	ध प म ग	म प म ग	म ग रे सा
०	३	×	२
गं रें सां नि	ध नि सां रें	सां नि ध प	म ग रे सा
०	३	×	२

अंतरा

प	म	ग	रे	ग	प	ध	नि	सां	-	ध	नि	सां	-	-	-
०				३				×				२			
सां	रें	गं	रें	सां	नि	ध	नि	रें	-	सां	नि	ध	प	म	ग
०				३				×				२			
प	-	म	ग	रे	सा,	ध	-	ध	नि	-	नि	सां	नि	ध	प
०				३				×				२			

पाठ १६

राग बिलावल—लक्षणगीत—त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

स्थायी

शुचिसुर मण्डित संपूरन, जब होत बिलावल
शुद्ध कहावत, अंश गहत धैवत गंधार
सहायक राग रूप अति सुंदर।

अंतरा

उत्तर अंग प्रबल करि सुस्वर
प्रातगेय कलियाण कहे कोऊ
विविध बिलावल भेदन को पुनि
आश्रय होत 'सुजान' मनोहर

स्थायी

ग	म	ग	री	नि	री	सा	सा	ग	री	ग	म	प	म	ग	ग
शु	चि	सु	र	मं	ऽ	डि	त	सं	ऽ	पू	ऽ	र	न	ज	ब
०				३				×				२			
ध	-	ध	प	ध	निध	नि	सां	सां	नि	ध	प	म	ग	म	री
हो	ऽ	त	बि	ला	ऽऽ	व	ल	शु	ऽ	द्ध	क	हा	ऽ	व	त
०				३				×				२			

ग म प म	ग री सा –	ग री ग प	नि ध नि रीं
अं ऽ श ग	ह त धै ऽ	व त गं ऽ	धा ऽ र स
०	३	×	२
सां नि ध प	धनि सां धप	म ग म री	सा री सा सा
हा ऽ य क	राऽ ऽ ग रू	ऽ प अ ति	सुं ऽ द र
०	३	×	२

अंतरा

प – ध (नि) नि	सां – सां सां	सां सां सां सां	सां रीं सां सां
उ ऽ त्त र	अं ऽ ग प्र	ब ल क रि	सु ऽ स्व र
०	३	×	२
सां रीं गं रीं	— सां ध नि	सां — ध प	म प म ग
प्रा ऽ त गे	ऽ य क लि	या ऽ ण क	हे ऽ को ऊ
०	३	×	२
ग म ध ध	ध नि प प	नि ध नि रीं	सां नि ध प
वि वि ध बि	ला ऽ व ल	मे ऽ द न	को ऽ पु नि
०	३	×	२
सां नि ध प	म ग म री	ग म प म	ग री सा सा
आ ऽ श्र य	हो ऽ त सु	जा ऽ न म	नो ऽ ह र
०	३	×	२

पाठ १७

झपताल

झपताल में दस मात्राएँ होती हैं। इसमें तीन तालियाँ एवं एक खाली होती है, अतएव इस ताल के चार विभाग होते हैं। १ ली, ३ री एवं ८ वीं मात्राओं पर तालियाँ तथा ६ ठी पर खाली दर्शायी जाती हैं।

झपताल मृदंग तथा तबला दोनों पर बजाया जाता है। मृदंग पर बजनेवाले ठेके

को 'झम्पा' अथवा 'झम्पताल' कहा जाता है एवं तबले पर बजनेवाला ठेका 'झपताल' नाम से निर्देश किया जाता है। मृदंग के ठेके के साथ जो गीत इस ताल में गाये जाते हैं, उन्हें '**साध्रा**' कहा जाता है और ये साध्रे ध्रुवपद–अंग से अर्थात् लयकारीयुक्त उपज-अंग से बोलों का विस्तार इन गीतों में किया जाता है। तबले के ठेके के साथ जो गीत इस ताल में गाये जाते हैं, उनमें अधिकतर ख्याल-अंग से विस्तार किया जाता है।

मृदंग एवं तबले पर बजनेवाले इस ताल के ठेके इस प्रकार लिखे जाते हैं:—

मृदंग का ठेका

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धा	ऽ	धा	गी	ति	ट	क्ड	धा	कि	ट
×		२			०		३		

तबले पर बजनेवाला ठेका

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
×		२			०		३		

पाठ १८

राग बिलावल–भजन–झपताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

निरगुण निराकार होत साकार परब्रह्म परमातम
भक्त-जन हित करन। पाथर पूजन नित्य नाम
जश कीरतन किये ता ही मों प्रकट होत हरि
रूप गुण ॥

स्थायी

नि		नि			ग	री			ध
सां	सां	ध	प	ध	म	ग	प	नि	नि
नि	र	गु	ण	नि	रा	ऽ	का	ऽ	र
×		२			०		३		

			नि						री
सां	–	सां	ध	नि॒	ध	प	म	ग	ग
हो	ऽ	त	सा	ऽ	का	ऽ	र,	प	र
×		२			०		३		

ग					प		नि	नि	
म	प	म	गरी	सा	ग	प	ध	सां	सां
ब्र	ऽ	ह्म	पऽ	र	मा	ऽ	ऽ	त	म
×		२			०		३		

नि									नि
सां	–	रीं	गं	रीं	सां	सां	ग	प	ध
भ	ऽ	क्त	ज	न	हिं	त	क	र	न
×		२			०		३		

अंतरा

प	–	निध	नि	सां	सां	सां	सां	–	सां
पा	ऽ	थऽ	र	पू	ज	न	नि	ऽ	त्य
×		२			०		३		

नि							सां		
सां	–	रीं	गं	रीं	सां	–	ध	नि॒	प
ना	ऽ	म	ज	श	की	ऽ	र	त	न
×		२			०		३		

		प					सा		
ग	री	ग	प	म	ग	री	नि़	री	सा
कि	ये	ता	ऽ	ही	मों	ऽ	प्र	क	ट
×		२			०		३		

म			प						ध
ग	म	री	ग	प	धनि	सां	सां	नि	नि
हो	ऽ	त	ह	रि	रूऽ	ऽ	प	गु	ण
×		२			०		३		

पाठ १९

राग बिलावल – त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

ग्वार-बार सब संग लिये हरि, चलै चोरी चोरी ब्रिज-ग्वारन घर,
दूध दही गोरस माखन मिस, पाप ताप दुख दंद हरावन ॥
ऊँचि लटकि दधि माखन मटकी, गोप कांधे चढ़ि हटकी झटकी,
खायो-खवायो सबनकैं गोरस, हरिकैं मुख लिपट्यो दधि माखन ॥
लौटि आयी ब्रिज-ग्वारन आंगन, निरखै हरि-मुख चकित भई मन,
वारि गई न्यौछावर कीन्हे, तन-मन धन हूँ हरि चरन शरन ॥

स्थायी

म		प				ध						सां			
ग	म	गी	ग	प	प	नि	नि	सां	–	सां	सां	ध	नि॒	ध	प
ग्वा	ऽ	र	बा	ऽ	र	स	ब	सं	ऽ	ग	लि	ये	ऽ	ह	रि
०				३				×				२			
			म					नि		ग				नि़	
म	ग	री	ग	म	ग	री	सा	सा	सा	री	ग	री	सा	ध़	प़
च	लै	ऽ	चो	रि	चो	ऽ	रि	ब्रि	ज	ग्वा	ऽ	र	न	घ	र
०				३				×				२			
		ध		सा						प					
प़	–	नि़	ध़	नि़	सा	सा	–	ग	री	ग	प	ध	नि॒	ध	प
दू	ऽ	ध	द	ही	ऽ	गो	ऽ	र	स	मा	ऽ	ख	न	मि	स
०				३				×				२			
						नि						सां			
सां	रीं	गं	रीं	सां	सां	ध	प	धनि	सांरीं	सां	सां	ध	नि॒	प	प
पा	ऽ	प	ता	ऽ	प	दु	ख	दंऽ	ऽऽ	द	ह	रा	ऽ	व	न
०				३				×				२			
प		प				ध									
ध	गम	री	ग	प	प	नि	नि	इत्यादि.							
ग्वा	ऽऽ	र	बा	ऽ	र	स	ब								
०				३											

अंतरा—१

	नि		नि
नि - नि नि	नि सां ध नि	सां - सां सां	सां रीं सां -
ऊँ ऽ चि ल	ट कि द धि	मा ऽ ख न	म ट की ऽ
०	३	×	२
नि		नि	नि
सां - सां रींगं	मं गंरीं सां सां	ध नि सांरीं गंरीं	सां सां ध प
गो ऽ प कांऽ	ऽ घेऽ च ढि	ह ट कीऽ ऽऽ	झ ट की ऽ
०	३	×	२
		नि	
ग म ध ध	ध नि̱ प प	ध नि सां नि	ध प म ग
खा ऽ यो ख	वा ऽ यो स	ब न कै ऽ	गो ऽ र स
०	३	×	२
प	नि	नि	प
ग प धनि सांरीं	सां सां ध प	धनि सां ध प	ध - म ग
ह रि कैऽ ऽऽ	मु ख लि प	ट्योऽ ऽ द धि	मा ऽ ख न
०	३	×	२

अंतरा—२

			नि
प - प नि	ध ध नि नि	सां - सां सां	सां रीं सां सां
लौ ऽ टि आ	ऽ यी ब्रि ज	ग्वा ऽ र नि	आं ऽ ग न
०	३	×	२
		नि	
सां सां नि ध	सां सां सां सां	सां रीं गं रीं	सां नि ध प
नि र खै ऽ	ह रि मु ख	च कि त भ	ई ऽ म न
०	३	×	२
मं		नि	
गं मं पं मं	गं रीं सां -	प - ध नि	सांरीं गं सां -
वा ऽ रि ग	ई ऽ न्यो ऽ	छा ऽ व र	कीऽ ऽ न्हे ऽ
०	३	×	२

नि								नि							
सां	रीं	गं	रीं	सां	नि	ध	प	ध	नि	सां	नि	ध	प	ध	म
त	न	म	न	ध	न	हूँ	ऽ	ह	रि	च	र	न	श	र	न
०				३				×				२			

पाठ २०

चौताल

चौताल में १२ मात्राएँ होती हैं। १ ली, ५ वीं, ९ वीं एवं ११ वीं मात्राओं पर तालियाँ होती हैं। ३ री एवं ७ वीं मात्राओं पर खाली होती हैं। इस प्रकार चार ताली तथा दो खाली चौताल में होती हैं।

चौताल मृदंग (पखवाज) पर बजाया जाता है। इस ताल में गाये जाने वाले सब गीत 'ध्रुवपद' अथवा 'ध्रुपद' कहलाते हैं। चौताल यूँ लिखा जाता है।

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
मृदंग के बोल	धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गिन
तालें	×		०		२		०		३		४	

इस ठेके में कुछ मात्राओं पर दो अक्षर मिलकर एक बोल आता है। जैसे किट, तिट, कत, गदि, गिन। इनमें से एक एक अक्षर आधी मात्रा का अर्थात् आधे सेकण्ड का है। एक मात्रा में एक से अधिक अक्षर अथवा स्वर आते हों, तो नीचे एक ‿ ऐसी ऊँधी कमान दे कर लिखे जाते हैं।

जैसेः— सारी सारीग सारीगम सांनिधपम मपमगरीसा इत्यादि।

इस कमानी के अन्दर आने वाले सब स्वर समान अवकाश के होते हैं।

दो स्वर एक कमानी में हों तो ये आधी मात्रा का, एक एक, ऐसे होते हैं, तीन हों तो तिहाई मात्रा का एक एक ऐसे, चार हों तो पाव मात्रा का एक एक ऐसे, इत्यादि प्रकार इन स्वरों के अवकाश की गिनती होती है।

(सूचना:—ऐसे मात्राओं के विभागों के स्वर पाठ छात्रों से दोहराये जाँय।

पाठ २१

राग बिलावल–ध्रुवपद–चौताल (विलंबित)

गीत के शब्द

शीत शीत मंद मंद प्रात समय बहे समीर
उपवन की शोभा न्यारी निरखि निरखि हुलसत मन ।
कोमल रवि किरनन सों पूर्व प्रकाश भयो
अखिल जगत जागि उठ्यो गावत जय जय शुभ दिन ॥
निकसि आये कोटर तें मधुर शब्द किये विहग
द्रुमबेली झूम रहे दिनमणिकी जय जय करि ॥
सरसन मों खिले कमल चहूँ ओर भयो विकास
सजि सिंगार सृष्टि भई, मानो जैसि नई दुलहन ॥

स्थायी

म			प								
ग	म	री	ग	प	प	नि	ध	नि	सां	—	सां
शी	ऽ	त	शी	ऽ	त	मं	ऽ	द	मं	ऽ	द
×		०		२		०		३		४	
नि			सां								
सां	—	सां	सां	ध	प	ध	म	ग	म	री	सा
प्रा	ऽ	त	स	मे	ऽ	ब	हे	स	मी	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
नि़						प					
सा	री	ग	म	ग	री	ग	प	प	नि	ध	नि
उ	प	व	न	की	ऽ	शो	ऽ	भा	न्या	ऽ	रि
×		०		२		०		३		४	
सां	रीं	गं	रीं	सां	रीं	सां	नि	ध	प	ध	म
नि	र	खि	नि	र	खि	हु	ल	स	त	म	न
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

प	—	नि	ध	नि	नि	सां	सां	सां	सां	सां	—
को	ऽ	म	ल	र	वि	कि	र	न	न	सों	ऽ
×		०		२		०		३		४	

नि		गं				नि					
सां	—	रीं	गं	सां	सां	सां	नि	ध	प	म	ग
पु	ऽ	र	ब	प	र	का	ऽ	श	भ	यो	ऽ
×		०		२		०		३		४	

		नि़				प		नि			
म	ग	री	सा	री	सा	ग	प	ध	नि	सां	—
अ	खि	ल	ज	ग	त	जा	ऽ	गि	उ	ठ्यो	ऽ
×		०		२		०		३		४	

नि		गं									
सां	—	रीं	रीं	गं	रीं	सां	नि	ध	प	ध	म
गा	ऽ	व	त	जै	ऽ	जै	ऽ	शु	भ	दि	न
×		०		२		०		३		४	

संचारी

नि़			सा					नि			
सा	सा	सा	ध	—	ध	ध	—	ध	नि	प	—
नि	क	सि	आ	ऽ	ये	को	ऽ	ट	र	तें	ऽ
×		०		२		०		३		४	

							नि				
प	प	प	नि	ध	नि	सां	ध	प	म	ग	ग
म	धु	र	श	ऽ	ब्द	कि	ये	ऽ	वि	ह	ग
×		०		२		०		३		४	

म	ग	री	ग	म	प	म	ग	म	री	सा	—
द्रु	म	ऽ	बे	ऽ	लि	झू	ऽ	म	र	हे	ऽ
×		०		२		०		३		४	

नि़		सा									
सा	सा	प	प	निध	नि	सां	नि	ध	प	म	ग
दि	न	म	णि	कीऽ	ऽ	जै	ऽ	जै	ऽ	क	री
×		०		२		०		३		४	

आभोग

प	प	नि	ध	नि	—	सां	सां	—	सां	सां	सां
स	र	स	न	मों	ऽ	खि	ले	ऽ	क	म	ल
×		०		२		०		३		४	
नि	गं					नि					
सां	रीं	गं	रीं	—	सां	सां	नि	ध	प	म	ग
च	हुँ	ऽ	ओ	ऽ	र	भ	यो	वि	का	ऽ	स
×		०		२		०		३		४	
			नि़			प		नि			
म	ग	री	सा	री	सा	ग	प	ध	नि	सां	—
स	ज	सिं	गा	ऽ	र	सु	ऽ	ष्टि	भ	ई	ऽ
×		०		२		०		३		४	
नि						नि					
सां	—	रीं	गं	रीं	सां	सां	नि	ध	प	ध	म
मा	ऽ	नो	जै	ऽ	सि	न	ई	दु	ल	हि	न
×		०		२		०		३		४	

पाठ २२

विकृत स्वर

बिलावल में लगने वाले सात शुद्ध स्वरों में से पाँच अर्थात् री, ग, म, ध, नि की दो दो अवस्थाएँ होती हैं, एक नीची एवं दूसरी ऊँची। बिलावल के रे ग ध नि ऊँचे होते है, मध्यम नीचा होता है। सा और प को एक एक ही अवस्था होती है और इसलिये ये दो स्वर '**अचल**' स्वर कहलाते हैं। इस प्रकार बिलावल में सा, री ग ऊँचे, म नीचा, प ध और नि ऊँचे, यह स्वर लगते हैं और इनको '**शुद्ध**'

स्वर कहते हैं। री ग ध नि ये स्वर अपने शुद्ध स्थान से कुछ नीचे हटते हैं, तब '**कोमल**' कहलाते हैं। कोमल स्वर नीचे एक आड़ी रेखा देकर लिखते हैं, जैसे—

री॒ = कोमल री ; ग॒ = कोमल ग

ध॒ = कोमल ध ; नि॒ = कोमल नि

मध्यम अपने स्थान से ऊपर बढ़ता है, तब '**तीव्र**' कहलाता है। तीव्र म ऊपर एक ऊर्ध्व रेखा दे कर लिखा जाता है। जैसे—

म॑ = तीव्र म

री ग ध नि कोमल एवं म तीव्र ये स्वर 'विकृत' कहलाते हैं। विकृत का अर्थ बदला हुवा, अपने मूल स्थान से हटा हुवा। जब शुद्ध रे ग ध नि अपने मूल स्थान से नीचे हट कर कोमल होते हैं और शुद्ध मध्यम अपने स्थान से ऊपर बढ़ कर तीव्र होता है; तब ये सब स्वर '**विकृत**' कहलाते हैं।

हस्त संकेत में कोमल स्वर शुद्ध स्वरों की मुद्राओं को ही नीचे की ओर मोड़कर दिखाया जाता है। जैसे—

नाम	स्वरलिपि	हस्तसंकेत
कोमल री =	**री॒ =**	
कोमल ग =	**ग॒ =**	
कोमल ध =	**ध॒ =**	
कोमल नि =	**नि॒ =**	

तीव्र म, शुद्ध म की मुद्रा को ऊपर उठा कर दिखाया जाता है। जैसे—

नाम	स्वरलिपि	मुद्रा
तीव्र म =	म॑ =	

पाठ २३

तीव्र म साधन

जैसा कि पिछले पाठ में बताया गया है, हमारी संगीत प्रणाली में मध्यमस्वर की दो अवस्थाएँ हैं। एक नीची और दूसरी ऊँची। नीचले मध्यम को शुद्ध मध्यम कहते हैं जो शुद्ध सप्तक अर्थात् बिलावल के सप्तक में आ ही गया है।

अब इस पाठ में तीव्र मध्यम का साधन करना है। पंचम से तीव्र मध्यम उतना ही नीचा है जितना षड्ज से शुद्ध निषाद। अर्थात् यदि 'प' को थोड़े समय के लिये 'सां' कह कर गाया जाय और इस नये 'सां' से उसका 'नि' गाया जाय तो ठीक उसी स्थान पर तीव्र मध्यम होगा।

(**सूचना**:—छात्रों से प्रथम "सांनि" गवाया जाय। फिर पंचम गवाया जाय और उसी को थोड़े समय के लिये सा कहलाकर उसका नी गवाया जाय। इस प्रकार दोनों अर्थात् मूल "सांनि" एवं नये माने हुवे "सांनि" एक के पश्चात् दूसरा ऐसे गवाया जाय। फिर नये माने हुवे "सांनि" को "पम॑" करके कहलाया जाय।)

अब कुछ स्वर समुदाय तीव्र मध्यम साधन के लिये गावें।

१. सां, नि, — प म॑
२. सां, नि, ध — प म॑ ग
३. सां, नि, ध, प — प म॑ ग रे

४. सां नि सां — प मं प
५. ध नि सां — ग मं प
६. सां रें सां नि — प ध प मं
७. गं रें सां नि — नि ध प मं
८. प ध नि सां — रे ग मं प
९. प, ध नि रें, सां — रे, ग मं ध, प
१०. रेगमं, प; प ध नि, सां
११. सां, नि ध प; प, मंगरे

सूचना:—ऊपर दिये हुए स्वर समुदाय एक-एक पुनः-पुनः गवा कर पर्याप्त रटाये जाँय। तीव्र मध्यम ठीक स्थान पर छात्रों के गले से निकलने पर सीधे आरोह-अवरोह तीव्र मध्यम लेते हुवे पूरे सप्तक के स्वर गवाये जाँय। जैसे:—

सा, रे, ग, मं, प, ध, नि, सां
सां, नि, ध, प, मं, ग, रे, सा

अब कुछ स्वर-समुदाय शुद्ध मध्यम के एवं कुछ तीव्र मध्यम के गावैं, जिससे इन दोनों मध्यमों के नाद स्थान और उनका आपस का भेद ध्यान में आ जाय।

१. प, मं — पम
२. ध प मं — ध प म
३. सा रे ग, मं, प — सा रे ग, म, प
४. सा, प, मं, ग — सा, प, म, ग
५. रेग मं, प — रेग म, प
६. सांनि ध प मं — सां नि ध प म
७. सा, मं प — सा, म, प
८. सा रे सा, म, गमं, प, ध प म
९. ग प, मं ध, मंप, म, सा रे, सा
१०. सा, रे, ग, म, प, ध, नि सां
सां नि, ध प, म, ग रे सा
सा, रे, ग, मं, प, ध, नि, सां
सां, नि, ध, प, मं, ग, रे, सा

पाठ २४

राग यमन, ठाठ कल्याण

यमन राग में तीव्र मध्यम एवं शेष सब शुद्ध स्वर लगते हैं, जैसेः—

सा, रे, ग, मं, प, ध, नि, सां।
सां नि, ध, प, मं, ग, रे, सा ॥

इस स्वर सप्तक को कल्याण 'मेल' अथवा कल्याण 'थाट' कहते हैं। यमन राग का भी यही स्वर सप्तक होने के कारण कल्याण ठाठ को कभी कभी यमन ठाठ भी कहते हैं। और यमन को इस ठाठ से उत्पन्न होने वाला राग कहते हैं। यमन राग सर्व प्रसिद्ध और लोकप्रिय राग है। यमन का वादी गंधार है। अतएव वह स्वर सब से अधिक गाया जाता है एवं उस पर न्यास भी होता है। संवादी स्वर निषाद है। वादी स्वर से कम पर और सब स्वरों से प्रबल स्वर निषाद है। शेष सब स्वर अनुवादी हैं। कभी कभी यमन में शुद्ध मध्यम भी विवादी के नाते लगाया जाता है। वह दो गंधारों के बीच में लगाया जाता है। जैसे नि धप, मंग, रेगमंप, मं, गमगरे, ग, रे, सा। यमन रात्रि के प्रथम प्रहर में अर्थात् सूर्यास्त के पश्चात् गाया जाता है। पंचम ऋषभ की संगति 'प रे' करके इसमें बहुत आती है। मन्द्र, मध्य, तार तीनों स्थानों में इस राग का विस्तार होता है। राग गम्भीर प्रकृति का है। मींड़, विलम्बित आलाप के योग्य है। यमन के अंतरे का आरम्भ "मंगपधपसां" ऐसे होता है, न "पधनिसां" न "मंध निसां" से।

आरोह : सा, ऩिरेग, मंप, धनिसां। अवरोह : सां निधप, मंग, रेसा।

पकड़–(राग वाचक स्वर समुदाय) **ग रे सा, ऩि, रे ग, रे सा।**

स्वर विस्तार

१—ग, रे, ऩिरे, सा, ऩिधऩि, रे, सा।

ग ग ग प प
२—ऩि,रे, ग, रे, धऩि, रे ग, मं मं, ग,रेग, ऩिरेगमं प,रे, सा।

३—ग, रे, सा, ऩिरेगमं, ग प, प, रे मंग, रेगमंप, मं, ग, ऩिरेगमंप, रे, सा।

४—ऩि रे ग मं प मंग, प, मंधप, प, (प) मंग, रेग मंधप, मंग, परे, ऩिरेसा।

५—सा, ऩि, ध़, प़, ऩिध़, ऩिरे, सा, प, रे, सा, ऩिगरे, म॑पधप, म॑, ग, ध, पम॑ग, रेग, पम॑ग, प, रे, सा।

६—प, म॑ग, प, ध, प, म॑धनि, धनि, धप, गम॑पध निधप, म॑, ग, रेग, म॑प, ऩिरे गम॑ निधप म॑ग, प, रे, गम॑प, प, रे ग रे, ऩिरे, सा।

७—म॑ग, म॑धनि, धनि, गम॑पधनि, रेग म॑धनि, निधप, पधपम॑ग, धपम॑ग, पम॑ग, रेग, म॑प, रे, सा।

८—म॑ग, पधप, सां, सां, निरें, सां, निरेंगंरेंसां, निध, निरेंसां, निध निधप, म॑पधनिसां, प, रे, ऩिरेगम॑ धपम॑गरे, गम॑प, रे, सा।

पाठ २५

राग यमन-सरगम-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

नि	ध	प	म॑	ग	रे	सा	सा	ग	—	ग	रे	ग	म॑	प	ध
०				३				×				२			
प	म॑	ग	रे	ग	म॑	प	म॑	ग	रे	सा	—	ध़	ऩि	रे	ग
०				३				×				२			
म॑	प	ग	म॑	प	ध	नि	सां	म॑	प	ध	नि	रें	सां	नि	ध
०				३				×				२			

अंतरा

प	म॑	ग	प	—	प	नि	ध	सां	—	—	—	सां	रें	सां	—
०				३				×				२			
नि	रें	गं	रें	सां	—	ध	नि	सां	—	—	रें	सां	नि	ध	प
०				३				×				२			
म॑	प	ध	नि	सां	—	नि	ध	प	म॑	ग	रे	ग	म॑	प	ध
०				३				×				२			

पाठ २६

राग यमन–लक्षणगीत–त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

सब सुर तीव्र मेल मिलायो, तामें अंश गंधार नि सहचर।
परि सुरसंगत अंग मनोहर॥

प्रथम प्रहर निशि गाये गुनीवर, होवे कल्याण ऐमन सुजान।
रागन में राग एक आश्रय संपूर्ण, अत गंभीर मधुर॥

स्थायी

प प			मं प
नि ध प मं	ग री सा सा	ग – ग री	ग मंग मं प
स ब सु र	ती ऽ व्र र	मे ऽ ल मि	ला ऽऽ यो ऽ
०	३	×	२
मं			
प मं ग री	सा – सा सा	ऩि ध़ ऩि सा	ऩि ध़ प़ प़
ता ऽ में ऽ	अं ऽ श गं	धा ऽ र नि	स ह च र
०	३	×	२
सा ग	मं		सा
ऩि ऩि री री	ग मंग मं प	प री ग री	ऩि री सा सा
प रि सु र	सं ऽऽ ग त	अं ऽ ग म	नो ऽ ह र
०	३	×	२

अंतरा

मं			नि
प प मं ग	प प नि ध	सां – सां सां	सां रीं सां सां
प्र थ म प्र	ह र नि स	गा ऽ ये गु	नी ऽ व र
०	३	×	२
		नि	
नि – नि निध	सां – – सां	सां रीं गं रीं	सां नि ध प
हो ऽ वे कऽ	ल्या ऽ ऽ न	ऐ ऽ म न	सु जा ऽ न
०	३	×	२

मं			नि
प – मं ग	प – नि –	ध सां – सां	सां रीं सां नि
रा ऽ ग न	मों ऽ रा ऽ	ग ए ऽ क	आ ऽ श्र य
०	३	×	२

	सा	मं प	
ध प मं ग	री सा ऩि री	ग मंग मं प	प ध प प
सं ऽ पू ऽ	र न अ त	गं ऽऽ भी ऽ	र म धु र
०	३	×	२

पाठ २७

राग यमन–भारत गीत–त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

जय जय भारत देश हमारा, नमन प्रथम करि मंगल गावै,
दशदिशि कीर्ति जस उजियारा, जगमों न्यारा देश हमारा।
विपुल धान्य फल मूल परिप्लुत, पुष्प सुगंधित उपवन शोभित
अग नग सागर सरित् सरोवर, रक्षित पोषित कोटि कोटि जन
अति ही प्यारा देश हमारा।

ललित कला अरु ज्ञान ध्यान बल, सभ्य सुसंस्कृत नर नारी जन
युद्ध कुशल रणवीर धुरंधर, शासन कार्य प्रगल्भ मंत्रियुत
जगमों न्यारा देश हमारा॥

स्थायी

मं	सा		मं
प मं ग री	ऩि री सा सा	ग — ग री	ग मंग मं प
जै ऽ जै ऽ	भा ऽ र त	दे ऽ श ह	मा ऽऽ रा ऽ
०	३	×	२

प	मं		ऩि
मं ध नि ध	प ध प मं	ग री ग री	सा री सा —
न म न प्र	थ म क रि	मं ऽ ग ल	गा ऽ वै ऽ
०	३	×	२

नि़	सां		
सा री ग मं	प ध नि रीं	सां नि ध प	मं ग मं प
द स दि स	की ऽ र त	ज स उ जि	या ऽ रा ऽ
०	३	×	२

प	ग		
मं ध प –	री – सा –	ग – ग री	ग मंग मं प
ज ग मो ऽ	न्या ऽ रा ऽ	दे ऽ श ह	मा ऽऽ रा ऽ
०	३	×	२

अंतरा १

मं			नि
प मं ग प	– प नि ध	सां – सां सां	सां रीं सां सां
वि पु ल धा	ऽ न्य फ ल	मू ऽ ल प	रि ऽ प्लु त
०	३	×	२

		सां	
नि – नि ध	सां – सां सां	नि रीं सां निध	नि ध प प
पु ऽ ष्प सु	गं ऽ धि त	उ प व नऽ	शो ऽ भि त
०	३	×	२

मं			नि़
नि ध प ध	प मं ग री	ग प – री	सा री सा सा
अ ग न ग	सा ऽ ग र	स रि ऽ त्स	रो ऽ व र
०	३	×	२

सा	मं	नि	
नि़ – री री	ग मंग मं मं	प – प ध	नि ध प प
र ऽ क्षि त	पो ऽऽ षि त	को ऽ टि को	ऽ टि ज न
०	३	×	२

मं	ग		
ग ध प मं	री – सा –	ग – ग री	ग मंग मं प
अ त ही ऽ	प्या ऽ रा ऽ	दे ऽ श ह	मा ऽऽ रा ऽ
०	३	×	२

अंतरा २

मं			
प प पमं ग	प – नि ध	सां – सां सां	— रीं सां सां
ल लि तऽ क	ला ऽ अ रु	ग्या ऽ न ध्या	ऽ न ब ल
०	३	×	२

सां		सां	
नि – नि ध	नि सां सां सां	नि रीं सां निध	नि ध प प
स ऽ भ्य सु	सं ऽ स्कृ त	न र ना ऽऽ	री ऽ ज न
०	३	×	२

मं मं		नि	ग
प – ग मं	प प प प	ध नि ध प	री – सा सा
जु ऽ द्ध कु	श ल र ण	वी ऽ र धु	रं ऽ ध र
०	३	×	२

सा	मं	नि	
नि़ – री री	ग मंग मं मं	प – प ध	नि ध प प
शा ऽ स न	का ऽऽ र्य प्र	ग ऽ ल्भ मं	ऽ त्रि यु त
०	३	×	२

मं	ग		
ग ध प मं	री – सा –	ग – ग री	ग मंग मं प
ज ग में ऽ	न्या ऽ रा ऽ	दे ऽ श ह	मा ऽऽ रा ऽ
०	३	×	२

पाठ २८

राग यमन–ध्रुवपद–चौताल (विलम्बित)

गीत के शब्द

आद नाद ब्रह्म नाद अनहत ओंकार प्रणव जाको जोगी
ध्यान करत पावत सत्‌चिदानंद।

हरिमुख तें आहत निकस्यो मधुर मुरलिनाद, यातें अखिल
चराचर पायो परम सुख आनन्द ॥

उदात्त अरु अनुदात्त स्वरित लिये तीन भेद, जामें पठत
वेद मंत्र मार्ग रीत आहत नाद।

ताहि सों सप्त सुर देशी रीत मों प्रमाण, प्रकट नाम रूप सों,
षड्ज ऋषभ गंधार मध्यम पंचम धैवत निषाद
शुचि विकृत भेद॥

स्थायी

			सा							मं	
ग	–	री	नि़	री	सा	ग	–	री	ग	मं	प
आ	ऽ	द	ना	ऽ	द	ब्र	ऽ	ह्म	ना	ऽ	द
×		०		२		०		३		४	
मं						प			सा		
प	ध	प	मं	ग	री	ग	प	री	नि़	री	सा
अ	न	ह	त	ओं	ऽ	का	ऽ	र	प्र	ण	व
×		०		२		०		३		४	
सा						मं					
नि़	—	ध़	नि़	री	री	ग	मंग	मं	प	प	प
जा	ऽ	को	जो	ऽ	गी	ध्या	ऽऽ	न	क	र	त
×		०		२		०		३		४	
प		नि							सा		
मं	—	ध	नि	प	री	ग	री	—	नि़	री	सा
पा	ऽ	व	त	स	त	चि	दा	ऽ	नं	ऽ	द
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

प									नि		
मं	ग	प	प	नि	ध	सां	—	—	सां	—	सां
ह	रि	मु	ख	तें	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ह	ऽ	त
×		०		२		०		३		४	

सां											
नि	नि	ध	नि	रीं	रीं	सां	सां	निध	नि	ध	प
नि	क	स्यो	म	धु	र	मु	र	लिऽ	ना	ऽ	द
×		०		२		०		३		४	

प			सां			नि					
गं	—	रीं	नि	रीं	सां	सां	नि	ध	नि	ध	प
या	ऽ	तें	अ	खि	ल	च	रा	ऽ	च	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

प											
म॑	ग	प	निध	ध	प	प	री	ग	री	—	सा
पा	ऽ	यो	पऽ	र	म	सु	ख	आ	नं	ऽ	द
×		०		२		०		३		४	

संचारी

म॑									म॑		
प	म॑	—	ग	म॑	म॑	प	प	—	प	ध	प
उ	दा	ऽ	त्त	अ	रु	अ	नू	ऽ	दा	ऽ	त्त
×		०		२		०		३		४	

प											
म॑	म॑	ध	ध	नि	—	सां	—	निध	नि	ध	प
स्व	रि	त	लि	ये	ऽ	ती	ऽ	नऽ	भे	ऽ	द
×		०		२		०		३		४	

प			म॑			ग			ग		
म॑	नि	ध	प	ध	प	री	ग	प	री	—	सा
जा	ऽ	में	प	ठ	त	वे	ऽ	द	मं	ऽ	त्र
×		०		२		०		३		४	

सा			म॑						म॑		
नि़	—	री	ग	म॑	ग	प	प	प	प	ध	प
मा	ऽ	गं	री	ऽ	त	आ	ह	त	ना	ऽ	द
×		०		२		०		३		४	

आभोग

सां											
नि	—	नि	नि	—	ध	सां	—	सां	सां	—	सां
ता	ऽ	हि	सों	ऽ	ऽ	स	ऽ	प्त	सू	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

सां						नि					
नि	—	रीं	गं	रीं	सां	सां	निध	नि	ध	—	प
दे	ऽ	शी	री	ऽ	त	मों	ऽऽ	प्र	मा	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	

प						ग					
गं	रीं	सां	नि	ध	प	री	ग	री	सा	—	—
प्र	क	ट	ना	ऽ	म	रू	ऽ	प	सों	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

नि़											
सा	सा	सा	री	री	री	ग	—	—	ग	—	ग
ख	र	ज	रि	ख	ब	गं	ऽ	ऽ	धा	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

प											
म॑	—	म॑	म॑	प	—	प	प	ध	—	ध	ध
म	ऽ	ध्य	म	पं	ऽ	च	म	धै	ऽ	व	त
×		०		२		०		३		४	

सां											
नि	नि	—	नि	सां	नि	ध	प	म॑	ग	री	सा
नि	खा	ऽ	द	शु	चि	वि	कृ	त	भे	ऽ	द
×		०		२		०		३		४	

पाठ २९

राग भूपाली, ठाठ कल्याण

राग भूपाली कल्याण ठाठ से उत्पन्न होता है। इसमें मध्यम एवं निषाद, ये दो स्वर वर्जित हैं। सा रे ग प ध ये पाँच स्वर लगते हैं। पाँच स्वरों का राग है, इसलिये यह एक '**औड़व जाति**' का राग कहलाता है।

भूपाली का वादी स्वर गंधार है और संवादी स्वर धैवत है। अर्थात् गंधार स्वर सबसे प्रबल एवं धैवत स्वर गंधार से कम, पर शेष सब स्वरों से प्रबल है। शेष स्वर अर्थात् षड़ज, ऋषभ एवं पंचम अनुवादी स्वर हैं।

भूपाली राग रात्रि के प्रथम प्रहर में गाया जाता है।

आरोह :—सा रे ग प ध सां ॥

अवरोह :—सां ध प ग रे सा ॥

पकड़ :—ग, रे, सा, रे, ध़, सारेप, ग, धपग, रेग, रेसा।

स्वर–विस्तार

१. ग, रे, सा, रेध़, सारेप, ग, धपग, रेग, रेसा।

रे सा

२. सा, रे, सा (सा), ध़, रे, ध़, सा, प़, ध़, सा, प़ध़सारेग, रेग, धपग, रेग, रेसा।

३. सारेगपग, रेगरेपग, धपग, सारेग, ध़, सारेग, धपग, सारे,

सा

ध़ सा, ग, रे, ध़ सा, प़ ध़, सा।

४. सारेगपध, पग, रेगध, पग, ध़ सारेग, ध, पग, गपग, रेग, सारेग, रे, ध़सा।

सा

५. गरेसा, धपगरेसा, प़ ध़सा, गरेपग, साध़, सारेग, पग, गपरेग, सारेसाग, ध़, ग, सारेग, रे, ध़, सा।

६. सारेगप, रेगप, रेध़, सारेप, ग, धपग, गपधसां, धपग, रेगपधसां, धपग, गपसांधसां, धपग, रेग, सारेगपध सां, धपग, ध, पग, रेग, रे, सा।

सां

७. गग, प, सां, ध, सां, सां, रेंसां, सांध, सांरें, सांध,

ध

गं, रें, धसां, पधसां, धपग, रेगपधसां, धपग, रेगधपग, रेग, रेसा।

८. सां, धसां, पसांध, सां, रें, धसां, पधसांरेंगं, रें, धसां, गं, गंरेंगं, सांरेंगंपंगं, रेंगं, धसांरें, धगं, गंरेंसां, पधसां, धपग, रेग, सारेगपधसां, धपगरेसा।

पाठ ३०

राग भूपाली–सरगम–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

ग ग रे ग	ग रे सा रे	प — ग —	ध प ग —
०	३	×	२
ग प ध सां	— ध प ग	रे — ग प	ध रें सां —
०	३	×	२
प ध सां रें	गं — ध रें	— ध सां —	प ध सां —
०	३	×	२
ध प ग ध	प ग रे ग	सा रे ग रे	सा ध़ सा रे
०	३	×	२

अंतरा

ध प ग रे	सा - सां ध	सां — — —	रें ध सां —
०	३	×	२
ध सां रें गं	— ध रें —	ध सां — प	सां — ध प
०	३	×	२
ग रे सा ध़	प़ ध़ सा रे	ग — प ध	सां — ध प
०	३	×	२
ग ध प ग	रे सा रे ग	सा रे ग रे	सा ध़ सा रे
०	३	×	२

पाठ ३१

राग भूपाली–लक्षणगीत–त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

तजत मनि सुर मेल कल्याण सों, अंश गंधार संवदत धैवत
निशि प्रथम प्रहर रीझत सब जन।
औड़व जाति सुलक्षण सुन्दर, भोपाली कहे रूप मनोहर
भूप नाम कलियाण कहे कोऊ, गायक गुणि प्रिय अति मन
मोहन।

स्थायी

		री	प
– सां ध प	ग री सा री	प ग ग री	ग प ध सां
ऽ त ज त	म नि सु र	मे ऽ ल क	ल्या ऽ न सों
०	३	×	२
	प		
ध, ग ग री	ग प ध सां	ध सां ध प	ग री सा सा
ऽ, अं श गं	धा ऽ र सं	ऽ व द त	धै ऽ व त
०	३	×	२
सां रीं गं रीं	सां रीं सां ध	सां – ध प	ग री सा सा
नि शि प्र थ	म प्र ह र	री ऽ झ त	स ब ज न
०	३	×	२

अंतरा

प			नि
ग – ग ग	प – सां ध	सां – सां सां	सां रीं सां सां
औ ऽ ड़ व	जा ऽ ति सु	ल ऽ च्छ न	सुं ऽ द र
०	३	×	२
सां			
सां – ध –	सां – रीं रीं	सां रीं गं रीं	सां रीं सां ध
भो ऽ पा ऽ	ली ऽ क हे	रू ऽ प म	नो ऽ ह र
०	३	×	२

प			
ग – प सां	ध सां ध प	ग – ध प	ग री सा सा
भू ऽ प ना	ऽ म क लि	या ऽ न क	हे ऽ को ऊ
०	३	×	२
सां – गं रीं	सां सां प ध	सां सां ध प	ग रे सा सा
गा ऽ य क	गु णि प्रि य	अ त म न	मो ऽ ह न
०	३	×	२

पाठ ३२

राग भूपाली–बाँसुरी गीत–त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

मुरली मन मोहत मोहन तुम्हरी मुरली बजाये सुनाये जाओ गोविंद गोपाल गोपी वल्लभ ।

या बाँसुरी मों मगन भये सुर, भये मुग्ध मुनि लीन भये नर।
बिसरि सबै कछु सुध बुध तनकी, मनकी लगन लगी हरि के चरन ॥

स्थायी

		री		
ग री	सा — — री	ध़ सा सा री	ग ग री ग	ध प ग री
मु र	ली ऽ ऽ म	न मो ह त	मो ह न तु	म्ह री मु र
	०	३	×	२
				सां
	सा — — सां	ध प ग ध	प ग री ग	प ध सां प
	ली ऽ ऽ ब	जा ऽ ये सु	ना ऽ ये जा	ऽ वो ऽ गो
	०	३	×	२
	धसां रींगं रीं सां	पध सांरीं सां ध	गप धसां – ग	ध प; ग री
	विं ऽ ऽ ऽ द गो	पा ऽ ऽ ऽ ल गो	पी ऽ ऽऽ ऽ व	ल्ल भ; मु र
	०	३	×	२

अंतरा

			नि
प — ग —	प प सां ध	सां सां सां सां	सां रीं सां सां
या ऽ बाँ ऽ	सु रि मों ऽ	म ग न भ	ये ऽ सु र
०	३	×	२
नि			
सां सां ध सां	— सां रीं रीं	सां रीं गं रीं	सां रीं सां ध
भ ये ऽ मू	ऽ ग्ध मु नि	ली ऽ न भ	ये ऽ न र
०	३	×	२
ग सां	ध	प	
री ग प ध	सां — ध प	ग ग ध प	ग री सा —
बि स रि स	बै ऽ क छु	सु ध बु ध	त न की ऽ
०	३	×	२
सा री ग प	री ग प ध	ग प ध सां	ध प; ग री
म न की ल	ग न ल गी	ह रि के च	र न; मु र
०	३	×	२

पाठ ३३

राग भूपाली–भजन–त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

लाख तीरथ किये काम नहीं, मन जब लगी अंतर
राम जग्यो नहीं, माया जाल सुलझायो नहीं।
जा दिन जागि उठै अन्तर हरि, ग्यान-ज्योति
निर्द्वन्द जगै, फिर काहे को काशी गंगा भटकनो,
हिय ही चारो धाम तीरथ 'सुजन'॥

स्थायी

सा री			
ग ग री सा	री धृ सा री	प ग ग री	ग —, सा री
लाऽ ख ती	र थ कि ये	काऽ म न	हीं ऽ, म न
०	३	×	२

प सां		प सां	
ग प ध सां	ध प ग री	ग प ध सां	पधसांरीं गं रीं सां
ज ब ल गी	अं ऽ त र	रा ऽ म ज	ग्योऽऽऽ ऽ न हीं
०	३	×	२

पध सां ध प	ग री ग ध	प — री ग	री ध़ सा री
माऽ ऽ या जा	ऽ ल सु ल	झा ऽ यो न	ही ऽ म न
०	३	×	२

अंतरा

	प		नि
प ग ग री	ग — प प	सां ध सां —	सां रीं सां सां
जा ऽ दि न	जा ऽ गि उ	ठै ऽ अं ऽ	त र ह रिं
०	३	×	२

नि		सां	सां प
सां ध ध सां	— सां रीं रीं	रींगंरींरीं गं रीं सां	ध प, ग प
ग्याऽ न ज्यो	ऽ त नि र	दंऽऽऽ ऽ द ज	गै ऽ, फि र
०	३	×	२

सां		ग	
ध सां ध प	ग — गरी	ग ध प री	ग री सा —
का ऽ हे को	का ऽ शीऽ	गं ऽ गा भ	ट क नो ऽ
०	३	×	२

			री
गं रीं गं —	रीं सां सां पध	सां धप ग री	सा री ध़ सा
हि य ही ऽ	चा ऽ रो धाऽ	ऽ मऽ ती र	थ सु ज न
०	३	×	२

पाठ ३४

राग भूपाली–ध्रवपद–चौताल (विलम्बित)

गीत के शब्द

आद नमन सत्य को भूत दया दूजो नमन,
तापर जन्म–भूमि पद नमन कीजो 'सुजान'।
विश्व प्रेम को नमन दीन दुखीजन सकल,
दुःख हरन व्रत को नमो नमो सदा चरण ॥
स्वार्थार्पण को बार बार बंदन,
जासों होवे इक छिन मों पाप मूल खंडन।
दीन धरम को अधार मनुज धरम को,
सार पालन किये होत, दुख द्वन्द भंजन ॥

स्थायी

ग	–	री	सा	सा	री	ग	–	ग	ग	–	री
आ	ऽ	द	न	म	न	स	ऽ	त्य	को	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

ग	—	ग	ध	प	—	ग	री	ग	री	सा	सा
भू	ऽ	त	द	या	ऽ	दू	ऽ	जो	न	म	न
×		०		२		०		३		४	

				प		सां					
ग	—	ग	री	ग	प	ध	सां	—	सां	सां	सां
ता	ऽ	प	र	ज	ऽ	न्म	भू	ऽ	मि	प	द
×		०		२		०		३		४	

नि											
सां	रीं	गं	रीं	सां	ध	सां	ध	प	ग	री	सा
न	म	न	की	ऽ	जो	सु	जा	ऽ	ऽ	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

प	ग	ग	प	सां	ध	सां	—	—	सां	सां	सां
वि	ऽ	श्व	प्रे	ऽ	म	को	ऽ	ऽ	न	म	न
×		०		२		०		३		४	

सां	ध	ध	सां	सां	रीं	गं	रीं	सां	रीं	सां	ध
दी	ऽ	न	दू	खी	ऽ	य	न	ऽ	स	क	ल
×		०		२		०		३		४	

सां	—	गं	रीं	सां	सां	रीं	सां	—	ध	प	ग
दु	ऽ	ख	ह	र	न	व्र	त	ऽ	को	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

ग			सां								
री	ग	प	ध	सां	—	सां	ध	प	ग	री	सा
न	मो	ऽ	न	मो	ऽ	स	दा	ऽ	च	र	न
×		०		२		०		३		४	

संचारी

प	ग	ग	प	—	प	ध	ध	—	प	—	ग
स्वा	ऽ	र	था	ऽ	र	प	न	ऽ	को	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

प			सां								
ग	—	प	ध	सां	सां	सां	ध	—	प	ग	म
बा	ऽ	र	बा	ऽ	र	वं	ऽ	ऽ	द	ऽ	म
×		०		२		०		३		४	

ग	—	ग	ग	ध	प	ग	री	सा	री	सा	—
जा	ऽ	सों	हो	ऽ	वे	इ	क	छि	न	मों	ऽ
×		०		२		०		३		४	

			प		सां						
सा	—	री	ग	प	ध	रीं	सां	—	ध	प	ग
पा	ऽ	प	मू	ऽ	ल	खं	ऽ	ऽ	ड	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	

आभोग

प	ग	ग	प	सां	ध	सां	—	सां	सां	—	सां
दी	ऽ	न	ध	र	म	को	ऽ	अ	धा	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

सां	सां	ध	सां	रीं	रीं	सां	रीं	सां	ध	प	ग
म	नु	ज	ध	र	म	को	ऽ	ऽ	सा	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

सां	गं	रीं	गं	—	रीं	सां	रीं	ध	सां	—	सां
पा	ऽ	ऽ	ल	ऽ	न	कि	ये	ऽ	हो	ऽ	त
×		०		२		०		३		४	

	सां										
प	ध	रीं	सां	प	ध	सां	ध	प	ग	री	सा
दु	ख	ऽ	द्वं	ऽ	द	भं	ऽ	ऽ	ज	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	

पाठ ३५

कोमल निषाद साधन।

निषाद स्वर अपने स्थान से जब नीचे हटता है, तब उसको कोमल निषाद कहते हैं। शुद्ध निषाद की ही मुद्रा नीचे की ओर मोड़ कर कोमल निषाद होता है। जैसे :—

नाम	स्वर लिपि	मुद्रा
कोमल नि	नि॒	

(१) सा, पम, सां नि॒

(२) सा, गम, धनि॒

(३) सा, गम, गरे, धनि॒धप

(४) सा, धपम, रेंसांनि॒

(५) सारेगम, मपधनि॒

(६) सा, पमगरे, सांनि॒धप

(७) सा, गमप, धनि॒ सां

(८) सागमप, मधनि॒सां

(९) सामग, मनि॒ध

(१०) सांनि॒ध, पमग, रेसा

(११) सा, पमग, सांनि॒ध

(१२) सारे गम पधनि॒सां

सूचना—इत्यादि स्वर समुदायों को फलक पर लिखकर एवं मुद्राओं से काम लेते हुए दोहराया जाय।

शुद्ध नि एवं कोमल नि

(१) सांनि, सां — नि॒ —

(२) सांनि, धप ; सां — नि॒ — धप

(३) मपधनि ; मपधनि॒

(४) सारेग, पधनि ; रेगम, पधनि॒

(५) सांनि, सां, नि॒, धनि, धनि॒ ; पधनि, पधनि॒ ; रेंसांनि॒, रेंसांनि,

(६) सारेगमपधनि, सारेगमपधनि
सांनि, धप मगरेसा ; सांनि धपमगरेसा।

पाठ ३६

राग खमाज, ठाठ खमाज

खमाज रागमें कोमल निषाद एवं शेष सब शुद्ध स्वर लगते हैं, जैसे :—

सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां।
सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा॥

इस स्वर सप्तक को खमाज मेल अथवा खमाज थाठ कहते हैं।

खमाज राग में आरोह में शुद्ध निषाद भी लगाया जाता है। खमाज राग का वादी स्वर गंधार है। अर्थात् इस स्वर को सबसे अधिक लिया जाता है एवं उस पर ठहरते भी हैं। इस राग का संवादी स्वर अर्थात् गंधार से कम पर शेष सब स्वरों से अधिक प्रबल ऐसा स्वर निषाद है। शेष सब स्वर अनुवादी अर्थात् वादी तथा संवादी स्वरों के साथ (आगे पीछे) चलने वाले स्वर होते हैं।

खमाज रात्रि के प्रथम प्रहर अर्थात् ९ बजे रात्रि में गाया जाता है। यह राग बहुत मधुर है। इसमें कोमलता है। अतएव छोटे छोटे, कोमल अर्थभाव के गीत इसमें बहुत होते हैं। यह राग भजन, स्तुतिगीत, ठुमरी, इत्यादि के लिये योग्य है।

इस राग के आरोह में ऋषभ स्वर दुर्बल होता है। लगभग वर्ज्यही किया जाता है। खमाज में मुरकियाँ, खटके, तान, पर्याप्त प्रमाण में ली जाती हैं।

आरोह :—सा,ग मप, धनि सां।
अवरोह :—सां निधप, मगरेसा॥

पकड़—ग, सा, गमप, गम, निध, मधप, मग, प म गरे सा।

स्वर विस्तार

१. **सा, ग, मप, ध, मग, मगरेसा।**
२. **नि़सा, ग, मगरेसा, नि़सारेसा, नि़ध़, प़ध़प़सा, नि़ध़, प़ नि़, सा, साग, मग, रेसा।**
३. **नि़ साग, मग, मपध, मग, गमपधनिध, मग, सागमध पध, मग, प, गमगरेसा।**

४. नि॒ध, मपध, मग, गमपधपसां, नि॒ध, मपध, मग, नि़सागमपसां, नि॒, ध, मपनि॒ध, मपध, मग, धपमगरेसा।

५. मनि॒ धनि॒ पध मपध, मग, गमपनि, सांरेंसां, नि॒ध, गमपनि॒ध, मग, सांनि॒धपमग, गमप गमगरेसा।

६. प, सागमप, धप, नि॒, ध, प, सांरेंसां, नि॒धप, मपधप, नि॒ध, मपध, गमग; सांरेंसांनि॒धपमगरेसा।

७. मग, मनि॒ध, निसां, निसां, पनि, सांरेंसां, नि॒ध, नि॒रेंसां, नि॒ध, गमपधनिसां, नि॒ध, गं, मंगंरेंसां, नि॒ध, मपनि॒ध, मग, पमगमगरे सा।

८. गमपनि, निसां, पनिसांरेंसां, मंगंरेंसां, रेंसांनि॒ध, मपसां, नि॒ध; गमपध, मग, सांनि॒धप, मगरेसा।

पाठ ३७

राग खमाज—सरगम—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीं

सा	ग	—	म	प	ध	—	म	ग	—	—	म	ग	रे	सा	—
०				३				×				२			
नि़	सा	ग	म	प	ध	ग	म	प	नि	सां	रें	सां	नि॒	ध	प
०				३				×				२			
नि॒	ध	प	म	प	ध	—	म	ग	—	प	म	ग	रे	सा	—
०				३				×				२			

अंतरा

म	ग	म	नि॒	ध	प	ध	नि	सां	—	नि	नि	सां	—	—	मं
०				३				×				२			
गं	रें	सां	—	प	नि	सां	रें	सां	नि॒	ध	प	—	म	ग	म
०				३				×				२			
ध	प	सां	—	प	ध	—	म	ग	—	—	म	ग	रे	सा	—
०				३				×				२			

पाठ ३८

राग खमाज—लक्षणगीत—त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

'सुजन' अब राग खमाज सुनो, मृदु निषाद और सब शुचि सुर
जामें लगाय गायो गंधार अंश करि सप्तम सुर संवादि मनायो।
प्रथम प्रहर निशि रूप मनोहर, ललित प्रकृति अति सुस्वर सुन्दर
रीझत जासों नरनारी जन, कवि कुल रसिक प्रेम रस पायो ॥

स्थायी

	प	म		
नि̱	ध ध म ग	ग म प ध	नि — सां नि	सां नि सां रीं
सु	ज न अ ब	रा ऽ ग ख	मा ऽ ज सु	नो ऽ मृ दु
	०	३	×	२

	म	म	
सां नि̱ ध प	ग म प ध	ग म ग ग	म́ ग री सा
नि खा ऽ द	औ र स ब	शु चि सु र	जा ऽ मे ल
०	३	×	२

		म	
नि̤ सा सा ग	– म प ध	ग म ग नि̱	ध नि̱ प ध
गा ऽ य गा	ऽ यो गां ऽ	धा ऽ र अं	ऽ श क रि
०	३	×	२

		म	म
नि – सां सां	नि̱ ध प प	ग म प ध	ग म ग; नि̱
स ऽ प्त म	सु र स म	वा ऽ दि म	ना ऽ यो; सु
०	३	×	२

अंतरा

	ध		
ग म नि̱ नि̱	प ध नि नि	सां – सां नि	सां – सां सां
प्र थ म प्र	ह र नि स	रू ऽ प म	नो ऽ ह र
	३	×	२

				रीं	सां										
प	नि	सां	मं	गं	गं	नि	सां	नि	–	सां	रीं	सां	(सां)	नि॒	ध
ल	लि	त	प्र	कृ	ति	अ	त	सु	ऽ	स्व	र	सुं	ऽ	द	र
०				३				×				२			
म								प		ध					
ग	म	प	सां	नि॒	–	ध	–	म	म	प	ध	(म)	–	ग	ग
री	ऽ	झ	त	जा	ऽ	सों	ऽ	न	र	ना	ऽ	री	ऽ	ज	न
०				३				×				२			
												म			
नि़	सा	ग	म	प	ध	नि	सां	नि॒	ध	प	ध	ग	म	ग;	नि॒
क	वि	कु	ल	र	सि	क	प्रे	ऽ	म	र	स	पा	ऽ	यो;	सु
०				३				×				२			

पाठ ३९

राग खमाज-साग्रा-झपताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

कदम्ब की छैया ठाड़े कन्हैया;
साँवरी सलोनी सूरत मन भावनी।
मुकुट माथे सोहै मकर कुंडल कान,
नेह भरी नैन ज्योति चित लुभावनी॥
पीतांबर काछे गरे बैजयंती, निरखि
मन लज्यो मदन, मूरत मन मोहनी।
अधर धरि माधुरी मुरली बजै सजै,
रूप मिलि रागिणी अति ही रिझावनी॥

स्थायी

			ध		सां		नि		
म	ग	म	प	ध	नि	सां	सां	–	–
क	दं	ब	की	ऽ	छै	ऽ	या	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

					ध		प		
नि॒	धम	प	-	प	प	ध	म	-	ग
ठा	(ऽऽ)	हे	ऽ	क	न्है	ऽ	या	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
नि	—	सां	नि	सां	(सां)	—	नि॒	ध	प
सां	ऽ	व	री	स	लो	ऽ	नी	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
म								प	
ग	म	प	सां	नि॒	ध	प	ध	म	ग
सू	र	त	म	न	भा	ऽ	व	नी	ऽ
×		२			०		३		

अंतरा

म	ग	म	नि॒	ध	नि	सां	सां	—	सां
मु	क	ट	मा	ऽ	थे	ऽ	सो	ऽ	हे
×		२			०		३		
नि	नि	नि	सां	नि	सां	(सां)	नि॒	ध	प
म	क	र	कुं	ऽ	ड	ल	का	ऽ	न
×		२			०		३		
				रीं					
नि॒	धप	ध	नि॒	सां	नि॒	धप	म	ग	—
ने	(ऽऽ)	ह	भ	री	नै	(ऽऽ)	न	ज्यो	ऽ
×		२			०		३		
म			सां		प				
ग	गम	प	नि॒	ध	म	प	ध	(म)	ग
ती	(ऽऽ)	चि	त	लु	भा	ऽ	व	नी	ऽ
×		२			०		३		

संचारी

म									
ग	—	म	ग	म	प	प	प	—	प
पी	ऽ	तां	ऽ	ऽ	ब	र	का	ऽ	छे
×		२			०		३		

प			सां						प		
ग		प	ध	सां	नि॒	धप		ध	म	ग	—
ग		र	बै	ऽ	ज	यंऽ		ऽ	ती	ऽ	ऽ
×			२			०			३		
प		म	ग	री	सा	नि़		सा	ग	ग	म
नि		र	खि	म	न	ल		ज्यो	म	द	न
×			२			०			३		
म				सां							
ग		म	प	ध	सां	नि॒		धप	नि॒	ध	प
मृ		र	त	म	न	मो		ऽऽ	ह	नी	ऽ
×			२			०			३		

आभोग

म		ग	म	नि॒	ध	नि		सां	नि	सां	—
अ		ध	र	ध	रि	मा		ऽ	धु	री	ऽ
×			२			०			३		
								नि			
प		नि	सां	—	रीं	सां		सां	नि॒	ध	—
मु		र	ली	ऽ	ब	जै		ऽ	स	जै	ऽ
×			२			०			३		
म				रीं							
ग		म	ध	नि॒	सां	नि॒		धप	ध	प	—
रू		ऽ	प	मि	लि	रा		ऽऽ	ग	नी	ऽ
×			२			०			३		
म			ध						प		
ग		म	प	सां	नि॒	धप		ध	म	ग	—
अ		त	ही	ऽ	रि	झाऽ		ऽ	व	नी	ऽ
×			२			०			३		

पाठ ४०

ताल कहरवा

यह ताल अति प्राचीन एवं लोकप्रिय तालों में से एक है। इस ताल का उपयोग अधिकतर लोक-गीतों में तथा भजन, गीत, इत्यादि सरल-संगीत के गीत-प्रकारों में किया जाता है। इस ताल का प्रयोग साधारणतया द्रुतलय में होता है।

इस ताल की मात्रा-संख्या के बारे में मत-भेद पाया जाता है। एक मतानुसार इसमें चार मात्राएँ एवं दूसरे मतानुसार इसमें आठ मात्राएँ मानी जाती हैं। इन दोनों मतानुसार इस ताल में एक ताली और एक खाली, इस प्रकार दो विभाग माने जाते हैं। चार मात्रा के ताल में ताली १ ली एवं खाली ३ री पर तथा आठ मात्रा के ताल में ताली पहली मात्रा पर एवं खाली पाँचवी मात्रा पर दर्शायी जाती है। इन दोनों मतों के ठेके इस प्रकार लिखे जाते हैं:-

चार मात्रा का ठेका

१	२	३	४
धागे	नती	नक	धिन
×		०	

आठ मात्रा का ठेका

१	२	३	४	५	६	७	८
धा	गे	न	ती	न	क	धि	न
×				०			

पाठ ४१

राग खमाज-भजन-कहरवा (द्रुतलय)

गीत के शब्द

नहीं माँगत हूँ धन सम्पद सुख नहीं, जनम मरण तैं मुक्ति चहत हूँ।
परब्रह्म मिलन नहीं ज्ञान जोग नहीं, रिध सिध इक छिन हूँ, इक छिन हूँ॥
जनम जनम नित पाऊँ चरण-सेवा-सुख हरिगुण, गाऊँ ध्याऊँ
निसदिन,या नैन मनोहर सुंदर साँवरी मूरत रहै न टरै, इन अँखियन
तैं यही आस एक, यही आस एक॥

स्थायी

				प
ग म	प — प प	प — ग म	प — प प	प ध म ग
न हिं	माँ ऽ ग त	हूँ ऽ ध न	स ऽ म्प द्	सु ख न हिं
	×	०	×	०

			म
ग म ध प	ध नि सां (सां)	नि ध प ध	ग म ग —
ज न म म	र ण तैं ऽ	मु ऽ क्ति च	ह त हूँ ऽ
×	०	×	०
— — — —	— —; नि नि	नि — नि सां	सां सां प ध
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ; प र	ब्र ऽ ह्म मि	ल न न हिं
×	०	×	०

सांरीं गं सां नि	ध प ग म	प ध नि रीं	सां नि ध प
ग्याऽ ऽ न जो	ऽ ग न हिं	रि ध सि ध	इ क छि न
×	०	×	०
ग म प ध	सां नि ध प	म ग — —	— —; ग म
हूँ ऽ न हिं	इ क छि न	हूँ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ; न हिं
×	०	×	०

अंतरा

नि नि नि नि	नि सां नि ध	पध निसां सां नि	सां सां, सां —
ज न म ज	न म नि त	पाऽ ऽऽ ऊँ च	र ण, से ऽ
×	०	×	०
		सां	
ध नि प ध	नि रीं सां रीं	ध नि धप म	ग ग, म ग
वा ऽ सु ख	ह रि गु ण	गा ऽ ऊँऽ ध्या	ऽ ऊँ, नि स
×	०	×	०

री			
नि़ नि़ सा —	नि़ सा ग म	ध — ध ध	ध नि॒ ध नि॒
दि न या ऽ	नै ऽ न म	नो ऽ ह र	सुं द र साँ
×	०	×	०

ध प			
प ध म ग	गं गं मं गं	(सां) — प ध	सां (सां) ध नि॒
ऽ व री ऽ	मू र त र	है ऽ न ट	रै ऽ इ न
×	०	×	०

ध			
ध नि॒ प ध	नि सां नि॒ ध	प म ग, नि	सां सां नि॒ ध
अँ खि य न	तैं ऽ य हि	आ ऽ स, ए	ऽ क य हि
×	०	×	०

	ध म		
प म ग नि॒	प ध; ग म	प — प प	इत्यादि स्थायी
आ ऽ स ए	ऽ क; न हिं	माँ ऽ ग त	के अनुसार
×	०	×	

पाठ ४२

राग खमाज–ध्रुवपद–चौताल (विलम्बित)

गीत के शब्द

जमना के नीर तीर रास रच्यो है,
गोप–गोपीयन संग खेले कन्हैया।
मुरली की धुन पर नाचत आनंद भरे,
गोकुल गाँव के गोप ग्वाल छैया।
झांझ मृदंग डफ किनरी बजे मधुर,
पैंजन की झनकार परम सुख दैया।
ता थेइ थेइ तत्, आ थेइ थेइ तत्,
थेइ ताथेइ ताथेइ थेई थेई तत्तत्ता थैया।

स्थायी

									प		
ग	ग	सा	ग	—	म	प	—	ध	म	ग	म
ज	मु	ऽ	ना	ऽ	के	नी	ऽ	र	ती	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

ध						ध			प		
प	सां	नि॒	ध	म	म	प	ध	—	म	ग	—
रा	ऽ	ऽ	स	ऽ	र	च्यो	ऽ	ऽ	है	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

नि	—	नि	सां	—	रीं	सां	नि	सां	नि॒	ध	प
गो	ऽ	प	गो	ऽ	पी	य	न	ऽ	सं	ऽ	ग
×		०		२		०		३		४	

नि॒					प	ध			प		
ध	सां	—	नि॒	ध	म	प	ध	—	म	ग	—
खे	ऽ	ऽ	ले	ऽ	क	न्है	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

म	ग	म	नि॒	ध	नि	सां	सां	नि	सां	—	सां
मु	र	ऽ	ली	ऽ	कि	धु	न	ऽ	प	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

नि	—	—	सां	—	रीं	सां	नि	सां	नि॒	—	ध
ना	ऽ	ऽ	च	ऽ	त	आ	नं	द	भ	ऽ	रे
×		०		२		०		३		४	

म	ग	सा	ग	—	म	प	—	ध	सां	रीं	गं
गो	ऽ	ऽ	कू	ऽ	ल	गाँ	ऽ	व	के	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

						ध			प		
सां	-	नि॒	ध	-	म	प	ध	-	म	ग	-
गो	ऽ	प	ग्वा	ऽ	ल	छै	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

संचारी

नि											
सा	—	—	ग	—	ग	म	—	म	म	ग	म
झां	ऽ	ऽ	झ	ऽ	मृ	दं	ऽ	ग	ड	ऽ	फ
×		०		२		०		३		४	
ध					प	ध			प		
प	प	नि॒	ध	—	म	प	ध	—	म	ग	ग
कि	न	ऽ	री	ऽ	ब	जे	ऽ	ऽ	म	धु	र
×		०		२		०		३		४	
नि॒	ध	नि॒	ध	प	ध	सां	नि	सां	नि॒	ध	प
पैं	ज	ऽ	न	ऽ	कि	झ	न	ऽ	का	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
—	म	ग	सा	ग	ग	म	—	—	प	—	—
ऽ	प	र	म	सु	ख	दै	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

आभोग

सां										नि	
नि	—	—	सां	—	नि	सां	सां	नि	सां	सां	सां
ता	ऽ	ऽ	थे	ऽ	इ	थे	ई	ऽ	ऽ	त	त
×		०		२		०		३		४	
नि	—	—	सां	—	मं	गं	सां	नि	सां	नि॒	ध
आ	ऽ	ऽ	थे	ऽ	इ	थे	इ	ऽ	ऽ	त	त
×		०		२		०		३		४)	

				नि		ध					
म	ग	म	नि़	ध	नि़	प	ध	नि	नि	सां	सां
थे	इ	ता	थे	इ	ता	थे	इ	थे	इ	थे	इ
×		०		२		०		३		४	

						ध		प			
रीं	सां	—	नि़	ध	म	प	—	ध	म	—	ग
त	ऽ	ऽ	त्त	ऽ	ऽ	त्ता	ऽ	ऽ	थै	ऽ	या
×		०		२		०		३		४	

पाठ ४२ (अ)

ताल दादरा

यह ताल भी अति प्राचीन तथा लोकप्रिय तालों में से एक है। इस ताल का प्रयोग अधिकतर लोक–गीतों में, भजन, ठुमरियाँ आदि सरल–संगीत के गीतों में किया जाता है। इस ताल की गति कुछ द्रुत ही रहती है।

यह ताल ६ मात्राओं का होता है और इसमें एक ताली एवं एक खाली होती है। १ ली मात्रा पर सम एवं ४ थी मात्रा पर खाली दर्शायी जाती है। इस ताल का ठेका इस प्रकार लिखा जाता है:—

ठेका

१	२	३	४	५	६
धा	धी	ना	धा	ती	ना
×			०		

पाठ ४३

राग देस, ठाठ खमाज

देस खमाज ठाठ का राग है। इसके आरोह में गांधार एवं धैवत लगभग वर्ज्य से ही हैं; अतएव इस राग की जाति औडवसम्पूर्ण ही मानी जाएगी। कभी कभी गांधार एवं धैवत स्वरों को आरोह में क्रमशः "**रे ग म प ध म, ग रे ग सा**"
नि
एवं "**रेमपधनि, धप**" अथवा "**धनिसां सां निधनि, धप**" ऐसे स्वर–समुदायों में अवश्य लिया जाता है। ऋषभ अवरोह में वक्र रहता है; अतएव इस राग का अवरोह "**मगरेसा**" इस प्रकार नहीं, वरन् "**मगरे, ग सा**" इस स्वर–संगति द्वारा प्रायः पूर्ण किया जाता है। उसी प्रकार इस राग के अवरोह में "**रें नि**" एवं "**ध म**" ये दो स्वर–संगतियाँ मींड़ के साथ बहुशः प्रयुक्त होती हैं। इस राग का वादी स्वार ऋषभ तथा संवादी पंचम है। गाने का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। शास्त्र के नियमानुसार आरोह में शुद्ध निषाद लिया जाता है।

खमाज ठाठ के रागों के दो मुख्य विभाग हैं। एक खमाज–अंग के राग, जैसे कि, झिंझोटी, तिलंग, ग़ारा, दुर्गा इत्यादि, जिनमें गांधार का प्राबल्य एवं ऋषभ का दौर्बल्य रहता है। दूसरे सोरठ–अंग के राग, जैसे कि सोरठ, देस, जयजयवन्ती इत्यादि, जिसमें ऋषभ का प्राबल्य एवं गांधार का दौर्बल्य रहता है।

देस राग के आरोह–अवरोह इस प्रकार हैं :—

आरोह : **सा रे, मप नि, सां।**

अवरोह : **सां नि धप, ध म, गरे ग सा।**

सा
पकड़ : **सा, रे ग रे, मप, निध, प, पधपमगरे ग सा।**

स्वर-विस्तार

१. **सा, रेम, गरे, ग सा, रे, मप, धपध, म ग रे, मपनिधप, मपध, म, गरेगसा।**

ग रे
२. **सा, निसा, रेसारे, नि ध प, मपनि, सा, रे, मगरे, पमगरे, रेमगरे, ग सा।**

३. ऩिसा रे, मप, धपध, म, गरे, ऩिधप, रेप, मगरे, रेगमप धपध, मगरे, गसा।

४. निसारेमपऩिधप, मपऩिधप, सां, ऩिधप, मऩिधप, मपऩिध, मगरे, रेप, रेम, गरे, ग, सा।

५. प, रे, ममप, धप, ऩिधप, सांऩिधप, मपनिसांरें, ऩिधप, मपधपध, मगरे, रेगरेप, मगरे, ग, ऩि, सा।

६. ऩिध, मपऩिध, मपसांऩिध, पनिसांरें, ऩिध, धऩिसां सांऩिध ऩिध, प, पधपम गरेग, सा।

७. मपनि, रेमपनि, ऩिसा रेमपनि, सां, ऩिधप, निसांरें, रेंऩिधप, ऩिधपमगरे, रेपमगरे, ग, सा।

अंतरा :—

८. मपप मपनि, निसां, सां, निसां, निसां निसांरें, नि, निसां, निसांरेंऩिधप, मपनिसां रें, गंनि, सां, पनिसांरें, ऩिधप, रेमपसां, पध, मगरे, रेग, रेप, रेम, गरे, ग, सा।

९. सां, सां, निसां, मपनि, निसां, पनिसांरें, मंगंरें, गं, निसां निसांरेंसांऩिधप, रेंमंगंरें, पंमंगंरें, गं, निसां, पनिसांरें सांऩिधप, ऩिधपध, मगरे, ऩिसारेग मपध, मगरे, ग, सा।

तानें :—

१०. ऩिधपमगरेगसा ऩिसारेसाऩिधप मपऩिसारे मगरे पमगरे मपधमगरे मपनिसांरेंऩिधप धमगरेगसा।

११. मपधप मगरेगसा, निसांरेंसां नि॒धपमगरेगसा, नि़सारेमपनि-सांरें मंगंरेंसां नि॒धपमगरेगसा।

१२. नि़सारेम रेमपध मपनिसां पनिसांरें निसांरेंमंगंरें पंमंगंरेंगंसां निसांरेंसां नि॒धपमगरेगसा।

१३. नि॒धप सांनि॒धप रेंसांनि॒धप मंगंरेंसांनि॒धप रेमपनिसांरें पंमंगंरेंगं निसांरेंसांनि॒धप रेमपध मगरेगसा।

१४. मगरे पमगरे नि॒धपमगरे रेंसांनि॒धपमगरे मंगंरेंसांनि॒धपमगरे नि़सारेमपसां पधपमगरेगसा।

पाठ ४४

राग देस–सरगम–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

नि़ सा रे म	ग रे म प	नि — सां रें	नि॒ ध प ध
०	३	×	२
म ग रे —	रे ग म प	ध म ग रे	ग नि़ — सा
०	३	×	२
म रे म प	नि सां रें नि॒	ध प ध म	ग रे ग सा
०	३	×	२

अंतरा

नि॒ ध प म	ग रे म प	सां — नि नि	सां — — —
०	३	×	२
प ध म प	नि सां रें —	मं गं रें गं	नि — नि सां
०	३	×	२
—सां नि॒ रें	सां नि॒ ध प	रे प म ग	रे सा नि़ सा
०	३	×	२
रे म रे म	प नि सां रें	— रें नि॒ —	ध म — रे
०	३	×	२

पाठ ४५

राग देस–लक्षणगीत–त्रिताल (मध्यलय)

मेल खमाज जनित राग देस
अनुलोम अल्प ध ग चढ़ि निखाद
मंडित रि प संवाद मधुर कर।
निस प्रथम जाम सोहे सुलच्छन
सोरठ-अंग रंग रस छिरकत
रेप धम संगत इतउत बिलसत
सदा 'सुजन' मन-रंजक सुखकर ॥

स्थायी

	सां	ध	
म री म प	नि॒ ध प, नि॒	ध प प ध	(म) ग री ग
मे ऽ ल ख	मा ऽ ज, ज	नि त रा ऽ	ग दे ऽ स
३	×	२	०
सा	ग		
सा री नि़ सा	सा री – री	म प नि नि	नि सां नि सां
अ नु लो ऽ	म अ ऽ ल्प	ध ग च ढ़ि	नि खा ऽ द
३	×	२	०
	म	सा	
निसां रींनि॒ ध प	री प म ग	री ग नि़ सा	म़ प़ नि़ सा
मंऽ ऽऽ डि त	रि प सं ऽ	वा ऽ द म	धु र क र
३	×	२	०

अंतरा

म म प प	प नि – नि	सां – सां सां	नि सां सां सां
नि स प्र थ	म जा ऽ म	सो ऽ हे सु	ल ऽ च्छ न
३	×	२	०
नि – नि नि	सां – सां सां	नि रीं सां रीं	नि॒ ध प प
सो ऽ र ठ	अं ऽ ग रं	ऽ ग र स	छि र क त
३	×	२	०

	सा	ग	
री प ध म	गरी ग नि़ सा	री री म प	नि सां रीं रीं
रे प ध म	संऽ ऽ ग त	इ त उ त	बि ल स त
३	×	२	०

	प	सा	
मं गंरीं सां रीं	नि॒ ध म ग	री ग नि़ सा	म़ प़ नि़ सा
स दाऽ ऽ सु	ज न म न	रं ऽ ज क	सु ख क र
३	×	२	०

पाठ ४६

राग देस–त्रिताल (मध्यलय)

एरी बाँसुरी कौन कियो टोना
मोहि लीनो ऐसो मोहन मन
तुँवै छाँड दीनी सारी हम संग पीत ।
देहो सिखाये हम ग्वारनी को
बस कीनो जासों कुँवर कन्हाई
बता दो साची नीकी पीत की रीत ॥

स्थायी

	ग		नि॒ प़ म
ध प ध प	म ग री, री	म प नि सां	नि॒ ध प, री
री बाँ ऽ सु	री ऽ ऽ, कौ	न कि यो ऽ	टो ऽ ना, मो
३	×	२	०

ध		री सा	ग
ग म प ध	म ग री, म	ग ग नि़ सा	म री –, म
हि ली ऽ नो	ऐ ऽ सो, मो	ह न म न	तुँ वै ऽ, छाँ
३	×	२	०

प नि सां –	रीं गुं रीं सां	रीं नि सां रीं	नि॒ ध प; नि॒
डि दी नी ऽ	सा ऽ रि ह	म सं ऽ ग	पी ऽ त; ए
३	×	२	०

अंतरा

			म दे
प नि सां नि	सां – सां, म	प नि सां सां	नि सांरीं रीं,मं
ऽ हो ऽ सि	खा ऽ ये, ह	म ग्वा ऽ र	नी ऽऽ को, ब
३	×	२	०

सां			म
गं रीं गं नि	सां – सां, प	नि सां रीं नि॒	ध प प; री
स की ऽ नो	जा ऽ सों, कुँ	व र ऽ क	न्हा ऽ ई, ब
३	×	२	०

	री	म	
गम पध म गरी	ग नि॒ सा सा	री म प सां	नि॒ ध प; नि॒
ताऽ ऽऽ दो साऽ	ची नी ऽ की	पी ऽ त की	री ऽ त; ए
३	×	२	०

पाठ ४७

राग देस–ध्रुवपद–चौताल

उपजत अंग स्वभाव, साचे गुरुनकी सीख।
नित्य नियत परिश्रम, याही तीन गुन होवे ॥
सहज ग्यान ध्यान मान, सूक्ष्मान्तर नाद भेद।
स्वर–रचना माधुरी, लच्छन अंग–स्वभाव ॥
स्वर लय राग प्रबन्ध, इन सब मों गुनी चतुर।
साचो गुरु सोही जानो, सीख सफल यातें होवे ॥
बिन करनी कछु न आवे, स्वाध्याय साधना।
किये सोही पावे, गावे, बजावे, रिझावे ॥

स्थायी

						ध					
सां	सां	नि॒	ध	प	–	प	ध	म	ग	री	री
उ	प	ज	त	अं	ऽ	ग	ऽ	स्व	भा	ऽ	व
×		०		२		०		३		४	

ग				री		सा					
री	प	म	ग	नि़	सा	नि़	सा	री	नि़॒	ध़	प़
सा	ऽ	चे	गु	रु	न	की	ऽ	ऽ	सी	ऽ	ख
×		०		२		०		३		४	

री				प		प					
म	ग	री	म	प	प	नि॒	ध	म	प	नि	नि
नि	ऽ	त्य	नि	य	त	प	रि	ऽ	श्र	ऽ	म
×		०		२		०		३		४	

						म					
सां	रीं	नि॒	ध	प	प	री	म	प	नि	सां	सां
या	ऽ	हि	ती	ऽ	न	गु	न	ऽ	हो	ऽ	वे
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

प		प									
नि॒	ध	म	प	नि	नि	सां	–	नि	सां	–	सां
स	ह	ज	ग्या	ऽ	न	ध्या	ऽ	न	मा	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	

						सां					
म	प	नि	–	सां	सां	नि	सां	सां	रीं	–	रीं
सु	ऽ	क्षमा	ऽ	न्त	र	ना	ऽ	द	भे	ऽ	द
×		०		२		०		३		४	

गं							सां		सां	सां	
रीं	मं	गं	रीं	गं	–	–	नि	सां	रीं	नि॒	ध
स्व	र	र	च	ना	ऽ	ऽ	मा	ऽ	धु	री	ऽ
×		०		२		०		३		४	

प								म			
म	–	प	सां	नि॒	ध	प	–	री	म	प	नि
ल	ऽ	च्छ	न	अं	ऽ	ग	ऽ	स्व	भा	ऽ	व
×		०		२		०		३		४	

संचारी

								प			
नि॒	ध	नि॒	ध	नि॒	ध	प	–	ध	म	ग	री
स्व	र	ल	य	रा	ऽ	ग	ऽ	प्र	ब	ऽ	न्ध
×		०		२		०		३		४	

ग						ध	ध				
री	म	प	नि॒	ध	प	प	प	ध	म	ग	री
इ	न	स	ब	मों	ऽ	गु	नी	ऽ	च	तु	र
×		०		२		०		३		४	

ग										सा	
री	प	म	ग	री	री	म	ग	री	ग	नि़	सा
सा	ऽ	चो	ऽ	गु	रु	सो	ऽ	हि	जा	ऽ	नो
×		०		२		०		३		४	

प़						ग			नि॒		
म़	–	प़	नि़	सा	सा	री	म	प	ध	म	प
सी	ऽ	ख	स	फ	ल	या	ऽ	तें	हो	ऽ	वे
×		०		२		०		३		४	

आभोग

म	प						गं		सां		
प	रीं	रीं	रीं	रीं	–	मं	रीं	गं	नि	सां	सां
बि	न	क	र	नी	ऽ	क	छु	न	आ	ऽ	वे
×		०		२		०		३		४	

			रीं								
प	नि	सां	सां	रीं	नि॒	ध	प	ध	म	ग	री
स्वा	ऽ	ऽ	ध्या	ऽ	य	सा	ऽ	ध	ना	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

ग									ध		
री	म	प	सां	-	प	नि॒	ध	प	प	ध	म
कि	ये	ऽ	सो	ऽ	हि	गु	न	ऽ	पा	ऽ	वे
×		०		२		०		३		४	

ग				सा				ग			
री	-	म	ग	नि॒	सा	सा	सा	री	म	प	नि
गा	ऽ	वे	ब	जा	ऽ	वे	रि	झा	ऽ	वे	ऽ
×		०		२		०		३		४	

पाठ ४८

कोमल ग साधन

गंधार जब अपने स्थान से नीचे हटता है, तब कोमल गंधार अथवा कोमल ग कहलाता है ।

नाम	स्वरलिपि	मुद्रा
कोमल ग	ग॒	

शुद्ध गांधार की ही मुद्रा नीचे की ओर मोड़कर कोमल गांधार की मुद्रा होती है ।

(१) सा, रेग॒, मग॒ ।

(२) रेग॒, रेग॒, मप ।

(३) सारेग॒, रेग॒म; पधनि॒, धनि॒सां ।

(४) सांनि॒, धप, मग॒, रेसा ।

(५) सांनि॒, ध, मग॒, रे, मग॒रेसा ।

(६) रेग॒ मप, धनि॒ सांरें ।

(७) रेंसांनिधप, पमगरेसा।

(८) सारेग, म, पधनि, सां, सांरेंगं।

(९) गंरेंसां, निधप, म, गरेसा।

(१०) सा, ग; सां, गं, रें सां।

(११) रें, निध; प, ग रे।

(१२) गंरेंसां, निधप, गरेसा।

(१३) सारेग, रेग, मप मप।

(१४) पमग रेगम गरेसा।

(१५) सा, सारे, रेग, गम, मप।

(१६) प, पम, मग, गरे, रेसा।

(१७) सारेगम पधनिसां।

(१८) सांनिधप मगरेसा।

शुद्ध गंधार एवं कोमल गंधार के तुलनात्मक स्वर समुदाय।

शुद्ध गंधार	कोमल गंधार
(१) सा,ग	सा, रे ग
(२) मग	प म ग
(३) गमपमग	रेग मगरे
(४) मग,	मग,
(५) पमग,	पमग,
(६) मग, रेसा	मग, रेसा

पाठ ४९

राग काफी—ठाठ काफी

काफी राग में कोमल गंधार एवं कोमल निषाद, शेष सब शुद्ध स्वर लगते हैं। जैसे :

सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां।
सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा॥

यह स्वर-सप्तक काफी मेल अथवा काफी ठाठ कहलाता है। काफी राग, जो एक अति लोकप्रिय राग है, इसी ठाठ से उत्पन्न होता है; इसलिये इस ठाठ को काफी ठाठ कहते हैं।

काफी राग का वादी स्वर पंचम, संवादी स्वर ऋषभ है। अतएव पंचम सबसे अधिक प्रबल स्वर है, जिस पर ठहरा जाता है एवं जो सबसे अधिक लिया जाता है। ऋषभ संवादी है। पंचम से कम पर शेष सब स्वरों से अधिक प्रबल है। शेष सब स्वर अनुवादी, वादी संवादी की शोभा बढ़ाने वाले स्वर हैं। काफी राग में कभी कभी शुद्ध निषाद भी आरोह में लगाया जाता है।

काफी राग का गान समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। यह राग कोमल प्रकृति का है। इस राग में होली नाम के गीत विशेषतः अधिक गाये जाते हैं। भजन, प्रार्थनादि गीतों के योग्य राग है। ठुमरी, दादरे भी इस राग में बहुत हैं।

इस राग में सब स्वर आरोह अवरोह में लगते हैं, अतएव इसको संपूर्ण जाति का राग माना जाता है। सरल तान पल्टों के लिये बहुत सीधा, पर उतना ही मधुर राग है।

आरोहः—सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां।
अवरोहः—सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा॥
पकड़—सा सा रे रे ग, म म प।

स्वर विस्तार

(१) **सा, रेग, रेसारेप, मपध, मप, गरे, मगरेसा।**

(२) **सा, निसा, रे, ग, म, गमप, धपमप, मपधमप,**
ग, रे, रेप, मप, मगरेसानि, सारेग, रेसारेप।

(३) **प, मप, रेगम, गमप, निधप, सांनिधप, धमप, ग, रे, मग, रे, सा।**

(४) **मगरेसा, निधपधनि, सा, निसारे, रेग, रेम, गप, मध, प, गरे, गमपधनिधप, मपनिधपध, मप, गरे, रेंनिधनि पधमप, गरे, पमगरे, मगरेसा, निसारेग, ममप।**

(५) निधनि, धप, सां, निधप, सांरेंसांनिधप, ममपध, निधप, धमपध, गरे, रें, सांनिधपमगरेसा।

(६) सागरेमगपमधपनिधसां, मंगंरेंसांनिधमपधगरे, पमपमगरेसा।

(७) मम, पधनि, सां, धनिसांरेंगंरें, मंगंरेंसां, निसांरें, नि, ध प, मपसां, निधप, गमपधनिधसां, निधप, निधपमगरेसा।

(८) धनिसां, मपधनिसां, धनिरें, गंरें, निसांरें, धनिसां, पधनि, मपधमगरे, मगरेसा।

पाठ ५०

राग काफी–सरगम–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

सा रे ग रे	ग म प म	प — प म	ग रे सा नि̣
०	३	×	२
सा रे ग म	प ध नि ध	प म ध प	म प म ग
०	३	×	२
रे म ग रे	सा - सां -	नि ध प म	ग रे सा नि̣
०	३	×	२

अंतरा

नि ध प म	म प - ध	नि - सां -	नि नि सां -
०	३	×	२
ध नि सां रें	गं रें सां रें	सां नि ध प	म ग रे सा
०	३	×	२
नि̣ सा - सा	रे - रे ग	- ग म -	म प - प
०	३	×	२
ध - ध नि	- नि सां -	नि ध प म	ग रे सा नि̣
०	३	×	२

पाठ ५१

राग काफी—लक्षणगीत-त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

सुन सुलच्छनी काफी रागनी को, मृदु गमनी स्वर मेल मिलावत
परि संवाद करत नित सुंदर।
संपूर्ण कर चढ़ते नि तीव्र, दूजे प्रहर निशि गावत सुस्वर
काफी धनाश्री मलार सारंग कान्हर, पंच अंग राग मधुर,
उपजत जासों ऐसी मनोहर।

स्थायी

				म											
–	सा	सा	री	ग॒	–	म	म	प	–	प	ध	म	प	ग॒	–
ऽ	सु	न	सु	ल	ऽ	च्छ	नि	का	ऽ	फि	रा	ऽ	ग	नी	ऽ
०				३				×				२			

				ध		प				ग॒	ध	म			
री,	नि॒	ध	नि॒	प	ध	म	प	म	–	म	प	ग॒	–	री	री
को,	मृ	दु	ग	म	नि	सु	र	मे	ऽ	ल	मि	ला	ऽ	व	त
०				३				×				२			

												म			
री	ग॒	री	ग॒	सा	री	नि॒̣	सा	री	ग॒	म	प	ग॒	–	री	री
प	रि	स	म	वा	ऽ	द	क	र	त	नि	त	सुं	ऽ	द	र
०				३				×				२			

अंतरा

म	–	प	ध	नि	नि	सां	सां	नि	नि	सां	नि	(सांरीं)	नि॒	ध	प
सं	ऽ	पू	ऽ	र	न	क	र	च	ढ़	ते	नि	(तीऽ)	ऽ	व	र
०				३				४				२			

```
                        म
म  प  सां नि॒  ध  प  म  प | ग॒  री  ग॒  म | ग॒  री  सा  सा
दू  ऽ  जे  प   ह  र  नि  शि | गा  ऽ  व  त | सु  ऽ  स्व  र
०             ३              ×              २

            म
सा  –  री  री | ग॒  –  म  म | प  –  प  ध | नि॒  सां  नि  सां
का  ऽ  फ़ि  ध  | ना  ऽ  श्री  म | ला  ऽ  र  सा | ऽ  रं  ऽ  ग
०              ३              ×            २

प                                                  म
नि॒  –  प  प | म  –  म  प | सां  नि॒  ध  प | म  प  ग॒  री
का  ऽ  न  र | पं  ऽ  च  अं | ऽ  ग  रा  ऽ | ग  म  धु  र
०             ३            ×               २

                                            म       री
री  ग॒  री  म | ग॒  री  सा  – | सां  –  नि॒  धप | ग॒  –  सा  री
उ  प  ज  त | जा  ऽ  सों  ऽ | ऐ  ऽ  सी  मऽ | नो  ऽ  ह  र
०              ३              ×               २
```

पाठ ५२

राग काफी–फुलवारी गीत–त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

कैसि सजि है फुली फुलवारी प्यारी,
सरस सुगंधित रंग रंगीले फूल खिले हँसत करत सैन।
जुही गुलाब चमेली चम्पा, अपने अपने रूप गंध रस,
भेंट चढ़ावत सृष्टि देवि के, चरण कमल पर होवत लीन॥

स्थायी

```
     सा              म
री | नि॒  सा  री  री | ग॒  ग॒  म  म | प – पध  नि॒सां | नि॒ध  पम  ग॒री  सारी
कै | सि  स  जि  है | फु  ली  फु  ल | वाऽ  रीऽ  ऽऽ | प्याऽ  ऽऽ  रीऽ  ऽऽ
     ०               ३               ×               २
```

		ध	
री प म प	म ग॒ री सा	सां नि॒ प ध	नि॒ (सां) नि॒ धप
स र स सु	गं ऽ धि त	रं ऽ ग रं	गी ऽ ले ऽऽ
०	३	×	२

	म	प म	
प – पध मप	ग॒ री नि॒ ध	म प ग॒ म	ग॒ री सा; री
फू ऽ लऽ खिऽ	ले ऽ हँ स	त क र त	सै ऽ न; कै
०	३	×	२

अंतरा

– म प ध	नि – सां सां	सांरीं गं॒ रीं सां	रीं नि सां –
ऽ जु हि गु	ला ऽ ब च	मेऽ ऽ ली ऽ	चं ऽ पा ऽ
०	३	×	२

नि नि नि –	सां नि सां (सां)	नि॒ ध प म	– म प ध
अ प ने ऽ	अ प ने ऽ	रू ऽ प गं	ऽ ध र स
०	३	×	२

			सा
पध नि॒सां नि॒ ध	(म) – ग॒ री	ग॒ री ग॒ री	सा री नि़॒ सा
भेंऽ ऽऽ ट च	ढ़ा ऽ व त	सृ ऽ ष्टि दे	ऽ वि के ऽ
०	३	×	२

		प	म
री ग॒ म प	ध नि॒ सां सां	नि॒ ध म प	ग॒ री सा; री
च र ण क	म ल प र	हो ऽ व त	लीऽ न; कै
०	३	×	२

पाठ ५३

राग जिला काफी–होली–त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

जमुना के तीर कन्हैया ब्रिज-बारन संग खेलत होरी।
हिल मिल खेलत ग्वाल-बाल सब, हँस हँस रंग उड़ावत,
धूम मचावत तकि तकि मारत पिचकारी॥
लाल हरे अरु नील बसंती छिरकत रंग फुहारे,
हँसत गावत बैन बजावत, निरतत नन्द-दुलारे॥
मन मोहे अतही सुख पावै, ऐसो न्यारो रास रचावै,
लाज काज सुध बुध बिसरावे, जय जय नन्द–दुलारे॥

स्थायी

ग॒	ग॒री
ज	मुऽ

सा (कण ऊपर, ध़ के ऊपर)			
सा - ध़ नि़॒	सा ग ग सा	गम पध प म	प प मप धनि॒
ना ऽ के ऽ	ती ऽ र क	न्हैऽ ऽऽ या ऽ	ब्रि ज बाऽ ऽऽ
०	३	×	२

	सा (कण ऊपर, ध़ के ऊपर)	ग॒ (कण ऊपर, री के ऊपर)	
प पम ग॒ ग॒री	सा - ध़ नि़॒	सा - री ग॒	म धप; ग॒ ग॒री
र नऽ सं गऽ	खे ऽ ल त	हो ऽ री ऽ	ऽ ऽऽ; ज मुऽ
०	३	×	२

सा (कण ऊपर, ध़ के ऊपर)	
सा - ध़ नि़॒	सा - - सा
ना ऽ के ऽ	ती ऽ ऽ र
०	३

अंतरा–१

	म				म					म			री		
प	प	ग़	म	प	–	ग़	म	प	–	प	ग़	री	ग़	सा	सा
हि	ल	मि	ल	खे	ऽ	ल	त	ग्वा	ऽ	ल	बा	ऽ	ल	स	ब
×				२				०				३			
						म									
ध़	नि़	सा	री	म	(म)	ग	म	री	(ग़)	रीसा	री	—	—	ग़	रीसा
हँ	स	हँ	स	रं	ऽ	ग	उ	ड़ा	ऽ	वऽ	त	ऽ	ऽऽ		ऽऽ
×				२				०				३			
सा				म											
ध़	नि़	सा	री	म	(म)	ग	म	री	(ग़)	रीसा	री	०,	ध	ध	ध
हँ	स	हँ	स	रं	ऽ	ग	उ	ड़ा	ऽ	वऽ	त	ऽ,	धू	म	म
×				२				०				३			
	सां							म					सा		
पध	नि़	ध	प	–	–	०,	धप	ग	म	–	ग़री	सा	सा	ध़	नि़
चाऽ	ऽ	व	त	ऽ	ऽ	ऽ,	तकि	त	की	ऽ	माऽ	र	त	पि	च
×				२				०				३			
		ग़								सा					
सा	–	री	ग़	म	धप;	ग़	ग़री	सा	–	ध़	नि़	इत्यादि.			
का	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽऽ;	ज	मुऽ	ना	ऽ	के	ऽ				
×				२				०							

अंतरा–२

सां	नि	सां	सां	नि़	ध	प	प	म	ग	म	म	री	(ग़)	रीसा	री
ला	ऽ	ल	ह	रे	ऽ	अ	रु	नी	ऽ	ल	ब	सं	ऽ	तीऽ	ऽ
०				३				×				२			
सा	री	म	प	ध	(नि़)	ध	प	म	–	ग	म	ग़री	सारी	गम	–
छि	र	क	त	रं	ऽ	ग	फु	हा	ऽ	ऽ	ऽ	रेऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
०				३				×				२			

प ध नि॒ रीं	सांनि सां नि॒ ध	०, मग म म	री (ग॒) रीसा री
हाँ ऽ स त	गाऽ ऽ व त	ऽ, बैऽ न ब	जा ऽ वऽ त
०	३	×	२

०, ग॒री ग॒ री	सा – ध॒ नि॒ (सा)	सा – री ग॒ (ग॒)	म धप; ग॒ ग॒री
०, निर त त	न ऽ न्द ़ु	ला ऽ रे ऽ	ऽ ऽऽ; ज मुऽ
०	३	×	२

अंतरा ३

प परीं रीं –	रीं – रीं रीं	सांरीं गं॒मं गं मं	रीं(गं॒)रींसां निसां
म नऽ मो ऽ	है ऽ अ त	हीऽ ऽऽ सुख	पाऽ वैऽ ऽऽ
०	३	×	२

नि॒ – ध प	म (म) ग॒री सारी	०, री म म (म)	प – प –
ऐ ऽ सो ऽ	न्याऽ रोऽ ऽऽ	ऽ, रा स र	चा ऽ वै ऽ
०	३	×	२

सां नि सां नि॒	ध प म ग	म म पध मप	(ग॒) – री सा
ला ऽ ज का	ऽ ज सु ध	बु ध बिऽ सऽ	रा ऽ वे ऽ
०	३	×	२

ग॒ री ग॒ री	सा – ध॒ नि॒ (सा)	सा – री ग (ग॒)	म धप; ग॒ ग॒री
ज य ज य	न ऽ न्द दु	ला ऽ रे ऽ	ऽ ऽऽ; ज मुऽ
०	३	×	२

सा – ध॒ नि॒ (सा)	इत्यादि स्थायी के अनुसार
ना ऽ के ऽ	
०	

पाठ ५४

राग काफी—ध्रुवपद—चौताल (विलम्बित)

गीत के शब्द

आद नाद जासों उपजत द्वाविंशति श्रुति,
श्रुतियन सों निकसत सुर सप्त शुद्ध पंच विकृत।
आरोहि अवरोहि स्थायी संचारि चतुर्वर्ण,
गान किये सुरन को सिंगार सजत॥
चौसठ अलंकार विविध राग रूप सजे,
संपूर्ण षाड़व औड़व हूँ कहे जात।
वादी संवादी अनुवादी कबहूँ विवादी,
चतुर्भेद स्वर मंडित रागन को गुनि बरनत॥

स्थायी

नि							म				
सा	−	सा	री	सा	री	प	ग	म	ग	री	−
आ	ऽ	द्	ना	ऽ	द्	जा	ऽ	ऽ	सों	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

ग		री		सा							
री	ग	सा	री	नि़	सा	री	ग	म	म	प	प
उ	प	ज	त	द्वा	ऽ	विं	ऽ	श	ति	श्रु	ति
×		०		२		०		३		४	

				सां							
नि	नि	धप	ध	नि	सां	नि	नि	ध	प	म	प
श्रु	ति	यऽ	न	सों	ऽ	नि	क	स	त	सु	र
×		०		२		०		३		४	

प				प		म					
सां	−	नि	ध	म	प	ग	−	रीसा	री	नि़	सा
स	ऽ	प्त	शु	ऽ	द्ध	पं	ऽ	चऽ	वि	कृ	त
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

						सां					
म	–	–	प	–	ध	नि॒	सां	–	नि	सां	सां
आ	ऽ	ऽ	रो	ऽ	हि	अ	व	ऽ	रो	ऽ	हि
×		०		२		०		३		४	

									नि		
रीं	ग॒ं	रीं	सां	रीं	नि	सां	–	–	सां	रीं	नि॒
स्था	ऽ	ऽ	यी	ऽ	ऽ	सं	ऽ	ऽ	चा	ऽ	री
×		०		२		०		३		४	

	प		म			सा				म	
ध	म	प	ग॒	री	सा	ऩि॒	सा	री	री	ग॒	–
च	तु	र	ब	र	न	गा	ऽ	न	कि	ये	ऽ
×		०		२		०		३		४	

			म							म	
म	म	प	प	सां	नि॒	ध	प	म	प	ग॒	री
सु	र	न	को	ऽ	सिं	गा	ऽ	र	स	ज	त
×		०		२		०		३		४	

संचारी

										ध	
म	–	–	म	–	म	प	प	–	ध	म	प
चौ	ऽ	ऽ	स	ऽ	ठ	अ	लं	ऽ	का	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

म								प		म	
ग॒	म	प	ध	नि॒	सां	नि॒	ध	म	प	ग॒	री
वि	वि	ध	रा	ऽ	ग	रू	ऽ	प	स	जे	ऽ
×		०		२		०		३		४	

ग॒										सा	
री	प	म	प	म	ग॒	री	सा	–	री	ऩि॒	सा
सं	ऽ	पू	ऽ	र	न	षा	ऽ	ऽ	ड	ऽ	व
×		०		२		०		३		४	

		म								ध	
री	–	ग॒	ग॒	म	–	प	प	–	ध	म	प
औ	ऽ	ड़	व	हूँ	ऽ	क	हे	ऽ	जा	ऽ	त
×		०		२		०		३		४	

आभोग

सां											
नि	–	नि	–	नि	–	सां	–	नि	सां	सां	सां
वा	ऽ	दी	ऽ	सं	ऽ	वा	ऽ	दी	ऽ	अ	नु
×		०		२		०		३		४	

रीं	गं॒	रीं	गं॒	रीं	सां	रीं	नि	–	सां	–	सां
वा	ऽ	दि	क	ब	हुँ	वे	ऽ	ऽ	·वा	ऽ	दि
×		०		२		०		३		४	

						नि					
नि	नि	नि	सां	–	सां	सां	रीं	नि॒	ध	प	प
च	तु	र	मे	ऽ	द	स्व	र	मं	ऽ	डि	त
×		०		२		०		३		४	

प				प				म			
सां	–	नि॒	ध	म	–	प	ध	ग॒	ग॒	री	री
रा	ऽ	ग	न	को	ऽ	गु	नि	ब	र	न	त
×		०		२		०		३		४	

पाठ ५५

राग काफी–त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

जनम वृथा बिन पर उपकार।
दीन दुखीयन को भरोंसो तिहारो
तनिक देख ये हाल बेहाल ॥ १ ॥
धन दारा सुख चैन पसारा,
खेल जमायो निज स्वार्थ को।
जीवन बिन पुरुषार्थ गँवायो,
तनिक सोच यह हाल बेहाल ॥ २ ॥

स्थायी

				म		सा		म							
म	प	ध	प	ग॒	−	री	री	ग॒	ग॒	म	म	प	−	−	प
ज	न	म	बि	र्था	ऽ	बि	न	प	र	उ	प	का	ऽ	ऽ	र
२				०				३				×			

म				म		सा		म							
री	म	पध	प	ग॒	−	री	री	ग॒	ग॒	म	म	प	−	प,	सां
ज	न	मऽ	बि	र्था	ऽ	बि	न	प	र	उ	प	का	ऽ	र,	दी
२				०				३				×			

												म			
नि	(सां)	नि॒	ध	नि॒	प	ध	नि॒	सां	निसां	नि॒	धप	ग॒	−	री	−
ऽ	न	दु	खि	य	न	को	भ	रों	ऽऽ	सो	तिऽ	हा	ऽ	रो	ऽ
२				०				३				×			

						सा									
ग॒	री	ग॒	री	सा	री	नि़	सा	री	ग॒	म	म	प	−	−	प
त	नि	क	दे	ऽ	ख	ये	ऽ	हा	ऽ	ल	बे	हा	ऽ	ऽ	ल
२				०				३				×			

अंतरा

नि नि नि –	सां – सां सां	सांरीं गं रीं सां	रीं नि सां –
ध न दा ऽ	रा ऽ सु ख	चैऽ ऽ न प	सा ऽ रा ऽ
२	०	३	×
नि – नि नि	सां – सां –	सां नि सां (सां)	नि ध प –
खे ऽ ल ज	मा ऽ यो ऽ	नि ज स्वा ऽ	र थ को ऽ
२	०	३	×
ध – ध ध	ध नि ध प	पध निसां निसां	नि ध (नि) ध प
जी ऽ व न	बि न पु रु	खाऽ ऽऽ थैं गँ	वा ऽ यो ऽ
२	०	३	×
म नि ध प ग	– ग री री	ग री ग म म	प – – प
त नि क सो	ऽ च य ह	हा ऽ ल बे	हा ऽ ऽ ल
२	०	३	×

पाठ ५६

राग काफी--त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

कृष्ण कन्हैया तोरी बाँसुरी की धुन सुनि।
भई बावरी अत ब्रिज की ग्वारनि सब।
भूल गईं सुध सबहु तन मन की ॥१॥
राग ताल रस रंग भरी है।
मन मोहत नित मधुर सुरन सों।
मति हरत सुरनरमुनिजनकी ॥२॥

स्थायी

			म
–, ग॒ री ग॒	सा री नि॒ सा	री म पध प	ग॒ ग॒री सा सा
ऽ, कृ ष्ण क	न्है या तो री	बाँ सु रीऽ की	धु नऽ सु नि
०	३	×	२

	ध प		
– नि॒ ध नि॒	प ध म प	प सां नि (सां)	नि॒ ध प प
ऽ भ ई बा	व री अ त	ब्रि ज की ग्वा	र नि स ब
०	३	×	२

म			म
– री म प	ध नि॒ सां प	ध म पध प	ग॒ ग॒री सा –
ऽ भू ल ग	ई सु ध स	ब हु तऽ न	म नऽ की ऽ
०	३	×	२

अंतरा

	ध प		
ध – ध नि॒	प ध म प	नि – सां नि	सां – सां –
रा ऽ ग ता	ऽ ल र स	रं ऽ ग भ	री ऽ है ऽ
०	३	×	२

– प नि नि	सां सां सां सां	प नि सां रीं	सां नि॒ ध प
ऽ म न मो	ह त नि त	म धु र सु	र न सों ऽ
०	३	×	२

		म	
– सां नि सां	प नि॒ म प	री म पध प	ग॒ ग॒री सा –
ऽ म ति ह	र त सु र	न र मुऽ नि	ज नऽ की ऽ
०	३	×	२

पाठ ५७

कोमल ऋषभ, कोमल धैवत साधन

ऋषभ एवं धैवत जब अपने स्थान से नीचे हटते हैं, तब उनको क्रमशः कोमल ऋषभ अथवा कोमल री तथा कोमल धैवत अथवा कोमल ध कहते हैं।

शुद्ध ऋषभ की ही मुद्रा नीचे की ओर मोड़कर कोमल ऋषभ की मुद्रा होती है।

शुद्ध धैवत की ही मुद्रा नीचे की ओर मोड़कर कोमल धैवत की मुद्रा होती है।

स्वर नाम	**स्वर लिपि**	**मुद्रा**
कोमल री	री	
कोमल ध	ध	

कोमल री साधन

(१) सा, सांरें, सां।
(२) सारें, सा।
(३) सा, रें सांनिसां।
(४) सा, रे सानि़सा।
(५) गंरें, सां, रेंसां।
(६) गरे, सा, रेसा।
(७) सा, रेग, म,।
(८) प, मगरे, सा।
(९) गमग, रेग, रे, सा।
(१०) सा, रेग, म, प,।

कोमल ध साधन

(१) सा, प ध, प।
(२) प, मपध, प।
(३) सां, निध, प।
(४) गमप, ध, प।
(५) निसां, निध, प।
(६) ध प म ग,।
(७) निध प मग।
(८) सांनिधपमग।
(९) गमपध निसां।
(१०) सांनिध नि सां।
(११) ध, पमपध।

पाठ ५८

(अ)

कोमल री, कोमल ध

(१) सां, सांरेंसांनिध, प।
(२) पधनिसांरें, सां।
(३) प, मपधपमग, रे, सा।
(४) सांनिधपमगरे, सा।
(५) सारेग, मपध, निसां।

(ब)

कोमल ग, कोमल नि एवं कोमल ध

(१) सां, सां निधप।
(२) मपधनिसां।
(३) सांरेंगंरेंसांनिधप

पाठ ६०

राग बिंद्राबनी सारंग – सरगम – झपताल (मध्यलय)

स्थायी

रे	म	रे	सा	—	ऩि॒	प़	ऩि	सा	—
×		२			०		३		
रे	म	प	नि॒	प	(म)रे	रे	सा	—	सा
×		२			०		३		
ऩि	सा	रे	म	रे	म	प	नि॒	प	—
×		२			०		३		
नि	सां	रें	—	सां	नि॒	प	(म)रे	—	सा
×		२			०		३		

अंतरा

म	म	प	नि॒	प	नि	नि	सां	—	सां
×		२			०		३		
रें	मं	रें	सां	—	रें	सां	नि॒	—	प
×		२			०		३		
प	रें	सां	सां	रें	नि	सां	म	प	नि॒
×		२			०		३		
रे	म	प	नि	सां	नि॒	प	(म)रे	—	सा
×		२			०		३		

पाठ ६०

(ब)

शुद्ध ध तथा कोमल ध की भिन्नता।

(१) सा, प, ध, निधप। सा, प, ध, निधप।

(२) सा, ग, मपध। सा, ग, मपध।

(३) सांनिध, निध, प। सांनिध, निध, प।

(४) मपध, पमग। मपध, पमग।

पाठ ६१

शुद्ध एवं कोमल स्वरों की भिन्नता।

(१) सांरेंसांनिधप। सांरेंसांनिधप।

(२) रेंसां, निधप। रें, सां, निधप।

(३) सांरेंगंरेंसां, पधनिधप। सां रें गं रें सां, प ध नि ध प।

(४) सांनिधपमगरेसा। सांनिधपमगरेसा।

(५) सांरेंसांनिधपमगरेसा। सांरेंसांनिधपमगरेसा।

(६) धपधमपगमप, मग रेसा। धपधमपगमप, मगरेसा।

(७) सारेग, गमप, पधनि, निसांरें, सां।
सारेग, गमप, पधनि, निसांरें, सां।

(८) साध। साध।

(९) सांनिध। सांनिध।

(१०) सां, गंरेंसां। सां, गं रें सां।

सूचनाः—इस प्रकार छात्रों की समझ में शीघ्रतया आवैं, ऐसे अनुकूल स्वरसमुदायों को उपयोग में लाकर स्वयं उन स्वरसमुदायों को स्पष्ट कण्ठ स्वर में गा कर सुनाना चाहिए। पश्चात् छात्रों से गवाना चाहिए। यह सब शिक्षक के निजी अनुभव एवं चाणाक्षता पर निर्भर है।

पाठ ६२

राग भैरव, ठाठ भैरव

भैरव राग में कोमल ऋषभ एवं कोमल धैवत तथा शेष सब स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी स्वर धैवत एवं संवादी ऋषभ है। गाने का समय प्रातः काल में सूर्योदय का है। ऋषभ एवं धैवत इस राग में सदा आन्दोलित अर्थात् डोलते हुवे लगते हैं। इस राग में सब स्वर आरोह-अवरोह में लगते हैं, अतएव यह संपूर्ण जाति का राग है। इसका विस्तार मन्द्र सप्तक में भी बहुत होता है।

आरोहः—सा, रे॒, ग, म, प, ध॒, नि, सां।
अवरोहः—सां निध॒, प, म, गरे॒, सा।

स्वर विस्तार

(१) सा, रे॒, रे॒, सा, नि़सा, रे॒रे॒, सा, साध़॒, नि़सा, रे॒, गम, रे॒, सा।

म ग ग गरे॒
(२) सा, रे॒, ग, म, रे॒, गम, मप, म, पग, मरे॒, रे॒प, म, गमरे॒, रे॒, सा।

नि॒ नि॒ नि॒ ग
(३) नि़साग, म, मप, पगमध॒, ध॒, ध॒, ध॒, प, मप, म, गम, रे॒, ग, म, प,
रे॒ ग ग
प, म, ग, मरे॒, रे॒, सा।

सा नि॒ नि॒ नि॒ प नि॒ ग
(४) सा, ध॒, ध॒, प, मप, गमध॒, ध॒, प, ध॒मप, गमध॒, प, रे॒म,
नि॒ नि॒ म प प ग ग
ग प, मध॒, ध॒, प, ध॒ध॒पम, प, म, गमपरे॒, गम, रे॒प, गमरे॒,
रे॒, सा।

नि॒ नि नि
(५) प, मप, रे॒प, गमध॒, प, निध॒, प, सां, निध॒, प,

ग ग
मपगमनिध॒प, रे॒गमप, गमपगम, रे॒, रे॒, सा।

नि̱
(६) प, प ध̱, निनिसां, निसां, ध̱निसांरें̱, रें̱, रें̱, सां, निसां,

नि नि̱ ध̱ नि
निसांरें̱सां, ध̱, प, पपमगम, ध̱, सां, ध̱, प, गमप, म,

ग ग
निध̱पमपम, गम, रे̱, रे̱, सा।

नि गं गं गं गं गं
(७) सां, निसां, ध̱, निसां, रें̱, रें̱, रें̱, सां, गंमं, रें̱, रें̱, सां,

नि सां ग ग
निसांरें̱सां, ध̱, प, गमनिध̱सां, ग, म, रे̱प, गम, रे̱, रे̱ सा।

पाठ ६३

राग भैरव–सरगम–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

प म ग रे̱	सा ग — म	ध̱ (नि̱) — प —	म ग रे̱ सा
०	३	×	२
नि̱ सा ग म	प ग म प	ध̱ नि सां —	ध̱ नि सां रें̱
०	३	×	२
सां नि ध̱ प	नि ध̱ प म	ग रे̱ सा —	रे̱ ग — म
०	३	×	२

अंतरा

धृ प म ग	म (नि)धृ — धृ	सां — नि नि	सां — — —
०	३	×	२
धृ नि सां रें	— रें सां —	सां नि — नि	धृ — धृ प
०	३	×	२
— प म ग	म प धृ नि	सां नि धृ प	म ग रे सा
०	३	×	२

पाठ ६४

राग भैरव--त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

कन्हैया तोरी बाँसुरी, नीकी लगत अत
मधुर धुन सुनि सुधि-बुधि सब हार गई
लगी लगन आज मोरी।
जल भरन जमुना जो मैं गई री, सुनि बाँसुरी की
धुन, ग्यान ध्यान लाज काज भूल गई भइ बोरी॥

स्थायी

प	(प)ग म (ग)रीृ सा	(नि)धृ — धृ प	— धृ प म प	म ग म (ग)रीृ सा
क	न्है या तो री	बाँ ऽ सु री	ऽ नी की ऽ ल	ग ऽ त अ त
	३	×	२	०
	(सा)निृ सा ग म	प रीृ सा निृ	सा ग म प	(नि)धृ नि सां रीं
	म धु र धु	न सु नि सु	धि बु धि स	ब हा ऽ गं
	३	×	२	०

	नि̱	नि	
सां – – री̱	ग म ध̱ ध̱	नि सां सां ध̱	– प –; ध̱
ई ऽ ऽ ल	गी ल ग न	आ ऽ ज मो	ऽ री ऽ; क
३	×	२	०

प	
म प ग म	इत्यादि
न्है या तो री	
३	

अंतरा

नि̱		गं	
म ग म ध̱	ध̱ नि सां सां	रीं̱ – सां नि	सां – – सां
ज ल भ र	न ज मु ना	जो ऽ मैं ग	ई ऽ ऽ री
०	३	×	२
नि	सां नि	ग	
ध̱ नि सां रीं̱	नि सां ध̱ प	म ग म री̱	– सा म ग
सु नि बाँ सु	री की धु न	ग्या ऽ न ध्या	ऽ न ला ऽ
०	३	×	२
नि̱	नि		ग म
म ध̱ सां सां	रीं̱ सांनि सां ध̱	प – – म	री̱ – ग प
ज का ऽ ज	भू ऽऽ ल ग	ई ऽ ऽ भ	ई ऽ बो ऽ
०	३	×	२

	प	
री̱ सा –; ध̱	म प ग म	इत्यादि स्थायी के अनुसार.
ऽ री ऽ; क	न्है या तो री	
०	३	

पाठ ६५

राग भैरव–लक्षणगीत–एकताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

रागनमों राग प्रथम, भैरव गुनि
गावत नित, प्रात समे उपजावत,
भक्ती रस अतहि मधुर ।
धैवत वादी सुर लिये,
रेखब समवादी गहे,
किये बिस्तार गुन पावत,
सुनो 'सुजान' कहे चतुर ॥

स्थायी

ग	ग	ग	ग			नि़					
री॒	री॒	री॒	री॒	सा	नि़सा	ध॒	–	ध॒	नि़	सा	सा
रा	ऽ	ग	न	मों	ऽऽ	रा	ऽ	ग	प्र	थ	म
×		०		२		०		३		४	

		ग		म		म		ग			
ग	म	री॒	री॒	ग	प	ग	(म)	री॒	री॒	सा	सा
भै	ऽ	र	व	गु	नि	गा	ऽ	व	त	नि	त
×		०		२		०		३		४	

				नि॒		नि॒	नि॒	नि॒			
नि़	सा	ग	म	ध॒	–	ध॒	ध॒	ध॒	–	प	प
प्रा	ऽ	त	स	मे	ऽ	उ	प	जा	ऽ	व	त
×		०		२		०		३		४	

नि॒		ध॒		नि		ग			ग		
ध॒	–	सां	–	ध॒	प	म	प	म	री॒	री॒	सा
भ	ऽ	क्ती	ऽ	र	स	अ	त	हि	म	धु	र
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

नि॒		नि॒	नि॒								
ध॒	–	ध॒	ध॒	नि	सां	सां	–	नि	सां	सां	सां
धै	ऽ	व	त	वा	ऽ	दी	ऽ	सु	र	लि	ये
×		०		२		०		३		४	

गं		गं	गं					नि			
रीं॒	—	रीं॒	रीं॒	सां	सां	नि	(सां)	ध॒	—	प	प
रे	ऽ	ख	ब	स	म	वा	ऽ	दी	ऽ	ग	हे
×		०		२		०		३		४	

			प								
म	मग	प	री॒	—	सा	ग	म	प	ध॒	नि	सां
कि	येऽ	बि	स्ता	ऽ	र	गु	न	पा	ऽ	व	त
×		०		२		०		३		४	

									ग		
रीं॒	रीं॒	सां	नि	ध॒	प	म	ग	म	री॒	री॒	सा
सु	नो	सु	जा	ऽ	न	क	हे	ऽ	च	तु	र
×		०		२		०		३		४	

पाठ ६६

राग भैरव–ध्रुवपद–चौताल (विलम्बित)

गीत के शब्द

चन्द्रमा ललाट सोहे, जटा जूट गंग सोहे।
गर सोहे रुण्ड माल, सोहे अत बाघांबर॥
भाल लोचन अत उज्ज्वल
गौर बरन बदन सोहे
अंग बभूत सोहे
'अत सोहे त्रिशूल कर॥

ब्रह्मा गणेश शेष, नारायण नारद मुनि।
जपत नाम अस्तुत गाय जय हर-हर शिवशंकर ॥
निरतत तांडव शिव कैलासपति महेश
डमरू नाद अत गंभीर शब्द बजत
हर हर हर ॥

स्थायी

नि॒											
ध॒	—	ध॒	प	—	ध॒	प	म	प	म	ग	म
चं	ऽ	द्र	मा	ऽ	ल	ला	ऽ	ट	सो	ऽ	हे
×		०		२		०		३		४	

ग	ग		म			ग			ग		
म	री॒	—	ग	प	प	म	ग	म	री॒	—	सा
ज	टा	ऽ	जू	ऽ	ट	गं	ऽ	ग	सो	ऽ	हे
×		०		२		०		३		४	

नि़											
ध़॒	ध़॒	—	नि़	सा	सा	री॒	—	री॒	सा	—	सा
ग	र	ऽ	सो	ऽ	हे	रूं	ऽ	ड	मा	ऽ	ल
×		०		२		०		३		४	

नि॒				नि		ग		प			
ध॒	—	सां	—	ध॒	प	म	प	री॒	—	सा	सा
सो	ऽ	हे	ऽ	अ	त	बा	ऽ	घां	ऽ	ब	र
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

नि॒											
ध॒	—	ध॒	नि	सां	सां	नि	सां	सां	—	सां	सां
भा	ऽ	ल	लो	च	न	अ	त	उ	ऽ	ज्ज्व	ल
×		०		२		०		३		४	

गं									नि		
रीं	–	रीं	रीं	सां	सां	सां	नि	सां	ध	–	प
गौ	ऽ	र	ब	र	न	ब	द	न	सो	ऽ	हे
×		०		२		०		३		४	

नि			ध						नि		
ध	–	–	सां	–	सां	नि	सां	सां	ध	–	प
अं	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ब	भू	ऽ	त	सो	ऽ	हे
×		०		२		०		३		४	

ग	ग		म						ग		
म	री	–	ग	प	प	म	ग	म	री	सा	सा
अ	त	ऽ	सो	ऽ	हे	त्रि	शू	ऽ	ल	क	र
×		०		२		०		३		४	

संचारी

नि़			नि			नि					
सा	–	–	ध	–	ध	ध	–	ध	प	–	प
ब्र	ऽ	ऽ	ह्मा	ऽ	ग	णे	ऽ	श	शे	ऽ	ष
×		०		२		०		३		४	

नि										नि	
ध	–	ध	–	नि	सां	रीं	सां	नि	सां	ध	प
ना	ऽ	र	ऽ	य	ण	ना	ऽ	र	द	मु	नि
×		०		२		०		३		४	

			म						ग		
म	ग	री	ग	प	प	म	ग	म	री	सा	सा
ज	प	त	ना	ऽ	म	अ	स्तु	त	गा	ऽ	य
×		०		२		०		३		४	

नि़						नि		नि			
सा	सा	म	ग	प	प	ध	ध	ध	–	प	प
ज	य	ह	र	ह	र	शि	व	शं	ऽ	क	र
×		०		२		०		३		४	

आभोग

			नि॒								
प	प	–	ध॒	–	नि	सां	–	नि	सां	सां	सां
नि	र	ऽ	त	ऽ	त	तां	ऽ	ड	व	शि	व
×		०		२		०		३		४	

गं						गं			नि		
री॒ं	–	–	गं	–	मं	री॒ं	सां	सां	ध॒	–	प
कै	ऽ	ऽ	ला	ऽ	स	प	ति	म	हे	ऽ	श
×		०		२		०		३		४	

ग			ग						.नि॒		
म	ग	म	री॒	–	सा	म	ग	म	ध॒	–	प
ड	म	रू	ना	ऽ	द	अ	त	गं	भी	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

						नि॒					
री॒ं	–	री॒ं	री॒ं	सां	सां	सा	सा	म	ग	प	प
श	ऽ	ब्द	ब	ज	त	ह	र	ह	र	ह	र
×		०		२		०		३		४	

पाठ ६७

राग आसावरी, ठाठ-आसावरी

आसावरी राग में कोमल गांधार, कोमल धैवत एवं कोमल निषाद लगते हैं। शेष सब स्वर शुद्ध हैं। इस राग के आरोह में गांधार एवं निषाद नहीं लगाते। अवरोह में सब स्वर लगते हैं। अतएव यह औडवसंपूर्ण राग है। इसका वादी स्वर धैवत एवं संवादी गांधार है। गाने का समय दिन का २ रा प्रहर है। यह राग अति प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय है।

नि
आरोह : सारेमप, ध सां।
अवरोह : सांनिधप, मग, रे, सा।

पमसा म
पकड़ :—ध, म, पधग, रे, सा, रेमपसां, ध, प।

स्वर विस्तार

मपम म म नि पम
(१) मपधग, ग, रे, सा, रेम, पसां, ध, प, धम, पधग,
सा
रे, सा।

सा नि ध प म सा
(२) सा, रेनिधप, ध,, सा, सारेमप, ग, रे, सा।

म नि प प पम
(३) रेमप, सां, ध, प, मप, मपनिधप, धम, प, धग, रे, सा।

नि नि सां नि ध प
(४) सारेमप, ध, ध, प, मपधसां, रेंसां, रें ध, पगं, रें, सां,

सां सां सा
रेंनिधप, मपसां, ग, रे, सा।

नि नि मं
(५) ममप, ध, मपसां, सां रें, सां, ध, सां, सांरेंगं, रें, सां,

नि प नि प प प म
रेंनिधप, मपधसां, रेंध, प, निध, प, म, म, प ध ग,
रे, सा।

पाठ ६८

राग आसावरी—सरगम—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

				नि											
रे	म	प	सां	ध	–	प	–	म	प	ध	प	ग	ग	रे	सा
३				×				२				०			

				नि											
रे	रे	सा	रे	ध	–	प	–	म	प	ध	प	ग	ग	रे	सा
३				×				२				०			

अंतरा

				नि											
म	म	प	प	ध	–	म	प	सां	–	सां	–	रें	–	सां	–
३				×				२				०			

नि								मं							
ध	–	ध	सां	–	सां	सां	रें	गं	–	रें	सां	रें	नि	ध	प
३				×				२				०			

म	प	सां	–	ग	–	रे	सा	गं	रें	सां	नि	ध	प	म	ग
३				×				२				०			

पाठ ६९

राग आसावरी–लक्षणगीत-झपताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

मृदु निधग सुर लिये, उपजत मधुर मेल,
आसावरी जामें निकसत सुरागनी
नाम आसावरी ॥
अंश धैवत रुचिर संवदत गांधार
अगनि अनुलोम दिन दूजे पहर गेय
अतही मनोहरी ॥

स्थायी

		प			म				
म	प	नि॒	ध॒	प	ग॒	ग॒	री	सा	–
मृ	दु	नि	ध	ग	सु	र	लि	ये	ऽ
×		२			०		३		
म					नि॒				
री	म	प	प	सां	ध॒	ध॒	प	–	प
उ	प	ज	त	म	धु	र	मे	ऽ	ल
×		२			०		३		
प					नि॒				
रीं	–	सां	–	रीं	ध॒	–	प	–	प
आ	ऽ	सा	ऽ	व	री	ऽ	जा	ऽ	में
×		२			०		३		
					नि॒		नि॒		
म	म	प	प	सां	ध॒	–	ध॒	प	–
नि	क	स	त	सु	रा	ऽ	ग	नी	ऽ
×		२			०		३		

प		प	म						
म	प	ध॒	ग॒	–	री	सा	री	सा	–
ना	ऽ	म	आ	ऽ	सा	ऽ	व	री	ऽ
×		२			०		३		

अंतरा

			नि॒						
म	–	प	ध॒	–	सां	सां	सां	सां	सां
अं	ऽ	श	धै	ऽ	व	त	रु	चि	र
×		२			०		३		

नि॒				सां			नि॒		
ध॒	–	सां	सां	गं॒	रीं	सां	ध॒	–	प
सं	ऽ	व	द	त	गां	ऽ	धा	ऽ	र
×		२			०		३		

मं	मं	मं	मं	मं					
गं॒	गं॒	गं॒	गं॒	गं॒	रीं	–	रीं	सां	सां
अ	ग	नि	अ	नु	लो	ऽ	म	दि	न
×		२			०		३		

प		नि॒			नि॒				
म	प	ध॒	सां	सां	ध॒	ध॒	प	–	प
दू	ऽ	जे	ऽ	प	ह	र	गे	ऽ	य
×		२			०		३		

प	प			प	म				
म	म	प	–	ध॒	ग॒	–	री	सा	–
अ	त	ही	ऽ	म	नो	ऽ	ह	री	ऽ
×		२			०		३		

पाठ ७०

राग आसावरी–त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

हँसत गावत सब ग्वाल गोपाल
श्याम संग जमुना तट अत रससों
खेलत धूम धाम सों नाचत।
सुर नर मुनि कोऊ भेद न जाको
पायो ऐसो अपरंपार,
नाथ जगत को गोप ग्वाल बिच
हिल मिल राग रंग रास रचत ॥

स्थायी

प		प		म				म				नि॒			
ध॒	म	पध॒	मप	ग॒	ग॒	री	सा	री	म	प	सां	ध॒	–	प,	ध॒
हँ	स	तऽ	गाऽ	व	त	स	ब	ग्वा	ऽ	ल	गो	पा	ऽ	ल,	श्या
२				०				३				×			

				नि॒						प	म	म			
म	म	प	प	ध॒	ध॒	प	–	ध॒	म	ध॒	प	ग॒	ग॒	री	सा
ऽ	म	सं	ग	ज	मु	ना	ऽ	त	ट	अ	त	र	स	सों	ऽ
२				०				३				×			

				म			प								
री	–	सा	सा	री	म	री	म	प	म	प	नि॒	ध॒	म	प	सां
खे	ऽ	ल	त	धू	ऽ	म	धा	ऽ	म	सों	ऽ	ऽ	ना	च	त
२				०				३				×			

अंतरा

	नि॒ प		
म म प प	ध॒ ध॒ म प	सां – सां सां	सां – सां –
सु र न र	मु नि को ऊ	भे ऽ द न	जा ऽ को ऽ
२	०	३	×

नि॒			सां
ध॒ – ध॒ –	सां – सां –	रीं ग॒ं रीं सां	रीं नि॒ ध॒ प
पा ऽ यो ऽ	पे ऽ सो ऽ	अ प रं ऽ	पा ऽ ऽ र
२	०	३	×

प	नि॒	म	
म – प सां	ध॒ ध॒ प –	ग॒ – रीसा री	– री सा सा
ना ऽ थ ज	ग त को ऽ	गो ऽ पऽ ग्वा	ऽ ल बि च
२	०	३	×

म	नि॒	ध॒	
री री म म	प – प ध॒	– ध॒ सां –	सां, म प सां
हि ल मि ल	रा ऽ ग रं	ऽ ग रा ऽ	स, र च त
२	०	३	×

पाठ ७१

राग आसावरी - भजन - त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

तुमबिन को रखवार हमारो
दीननाथ तुम पतित उधारन
आयो शरण तिहारे द्वार ।
दीन दुनी के हो तुम दाता
दुखियन के दुख हर परमेसर
अबकी रखियो टेक हमारी,
सदासदा मैं दास तिहार ॥

स्थायी

म	म	नि	म
ग ग री सा	री म प प	ध – प प	मप धप ग –
तु म बि न	को ऽ र ख	वा ऽ र ह	माऽ ऽऽ रो ऽ
०	३	×	२
	म	नि	प
री री सा सा	री म प प	ध – प प	ध म प –
तु म बि न	को ऽ र ख	वा ऽ र ह	मा ऽ रो ऽ
०	३	×	२
म सा		म	नि
ग – ग री	– सा सा सा	री री म म	प – ध प
दी ऽ न ना	ऽ थ तु म	प ति त उ	धा ऽ र न
०	३	×	२
प		सां	नि
म प गं –	रीं रीं सां सां	म – प सां	ध – – प
आ ऽ यो ऽ	श र ण ति	हा ऽ ऽ रे	द्वा ऽ ऽ र
०	३	×	२

अंतरा

प	नि	ध	
म – प प	ध – ध –	सां – सां सां	सां – सां –
दी ऽ न दु	नी ऽ के ऽ	हो ऽ तु म	दा ऽ ता ऽ
०	३	×	२
नि	ध		
ध ध ध ध	सां – सां सां	गं गं रीं सां	रीं नि ध प
दु खि य न	के ऽ दु ख	ह र प र	मे ऽ स र
०	३	×	२

प				नि				म							
म	म	प	सां	ध	ध	प	–	ग	–	री	सा	री	ग	सा	–
अ	ब	की	ऽ	र	खि	यो	ऽ	टे	ऽ	क	ह	मा	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

नि												नि			
सा	सा	गं	गं	रीं	–	सां	–	रीं	–	सां	रीं	ध	–	–	प
स	दा	ऽ	स	दा	ऽ	मैं	ऽ	दा	ऽ	स	ति	हा	ऽ	ऽ	र
०				३				×				२			

पाठ ७२

राग भैरवी—ठाठ भैरवी

भैरवी में री, ग, ध, नि, कोमल एवं मध्यम शुद्ध लगता है। जैसे—

सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां।
सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा।

इस स्वर-सप्तक को भैरवी मेल अथवा भैरवी ठाठ कहते हैं, क्यों कि इसमें से भैरवी राग उत्पन्न होता है।

भैरवी एक ऐसा राग है कि कोई संगीत-प्रेमी क्वचित् ही ऐसा होगा जिसने इसको सुना न हो। अति लोकप्रिय राग है। इसकी मधुरता एवं कोमलता श्रोताओं के मन पर अपना प्रभाव किये बिना रहती नहीं। अस्तु।

भैरवी का वादी स्वर मध्यम एवं संवादी स्वर षड्ज है। कुछ लोग इसमें धैवत को वादी करके गाते हैं। वादी भेद के कारण राग के स्वरूप एवं प्रभाव में भिन्नता अवश्य आती है। मध्यम वादी करके गाई हुई भैरवी अधिक शांत एवं गंभीर लगती है। गाने का समय दिन का दूसरा प्रहर है। सब स्वर लगते हैं, अतएव संपूर्ण जाति का राग है। ऋषभ स्वर आरोह में कभी-कभी दुर्बल किया जाता है।

इस राग में ध्रुपद, होरी, एवं छोटे गीत, ठुमरी, दादरे तथा भजन बहुत गाये जाते हैं। ठुमरी दादरों में इस राग के शुद्ध स्वरूप की ओर दुर्लक्ष्य करके, केवल माधुर्य एवं वैचित्र्य के हेतु से इसमें विवादी स्वरों का उपयोग पर्याप्त प्रमाण में करने

का प्रचार आजकल हो गया है, यहाँ तक की वास्तविक भैरवी प्रचार से दूर हटती जा रही और उसके स्थान पर यह विचित्र भैरवी (विकृत) जम रही है। अस्तु।

आरोह—सा, रेग, म, प, धनिसां।

अवरोह—सां, निधप, मग, रेसा।

पकड़—म, ग, सारेसा। (मध्यमवादी) अथवा सा, ध, पमग सारेसा। (धैवतवादी)

स्वर–विस्तार

(मध्यमवादी)

(१) सा, रेसा, ग, पम, गम, ग, मगरेसा।

(२) सा, ध, निसा, गमपम, धपम, सारेग, म, पम, गम, गरेसा।

(३) सा, पम, रे, रेसा, ग, म, धपम, निधपम, धपम, सागमपधपम, गमपगम, रेसा।

(४) निसागमप, म, धपम, गमगपम, पधनिधपम, गमपधपम, पधनिसां, निधपम, धपम, ध, म, पम, गमपमगरेसा।

(५) धप, गमध, निसां, धनिसां, रेंसां, निसांरेंसां धप, गं, रेंसां, धनिसां, निधप, गमपधनि, धप, म, निधपमग, मपम, गम, ग, रेसा।

(६) निसागमप, गमध, निसां, गं, रेंसां, सांरेंगंमं, गंमं रें; सां, गं रें सां, ध नि रेंसां, धनिसां निधप, गम, धपम, गमपमग, रेसा।

(धैवतवादी)

(१) सा, ध, प, धमप, गमप; धपमगरेसा।

(२) सा, रेसा, ध, सा, ग, सारेसा, सागमपध, पग, सारेसा।

(३) सा, प, प, धप, गप, पध, ध, प, गमप, धसां, धप, निध, धप, धपमग, सागमपधपमग रेसा।

(४) निसागमप, धप, निधप, धसां, धप, धनिसांरेंसां, धप, ध, ध, पनिधप, गमनिधप, गमपधपमगरेसा।

(५) धमधनिसां, रेंसां, गंरेंसां, धसां निरेंसां, धप, गप, प, धसां, धप, गंरेंसांनिधप, निधपमगरेसा।

(६) सां, धनिसां, रेंसां, गं, गंमंपंमंगं, रेंसां, ध, निगंरेंसां, रेंनिसां, धप, गप, प, धसां, धप, निध, प, धपग, सागमपधपग, पग, मपमग, रेसा।

(विकृत भैरवी)

(१) सा, गमपम, ग रेसा, निसा, गमप, धपग, रेगप, पधनिधप, धपम, मंम, गम, सागमपमगम, रेसा।

(२) सा, निसा, ग, रेग, सारे, रेग, रेमग, सारेमपमग, म, रेसा, गमप, धप, निधप, गप. पधनिमंमग, रेसा।

(३) निसागमधपमगरेसा, प, पधप, पधनि, धनि, (नि), धप, धसां, रेंसां, धप, निधनिधनि, धप, ध, ध, धनिसांनिधप, गप, सागमपध, मंमग, रेसा।

(४) ध, ध नि सां, सां, निसां, निसांरें, सां, धप, पधनिसांरें, रेंसां, धप, ध, ध गंरेंगंसांरेंसां, धप, पधनि, धनि, रेंसां, धप, ध, ध, धनिधमगरे, रेगमधमगरे, गमर्मग, रेसा।

(५) सां, धसां, गं, रेंसां, गंमं, रेंसां, सांरेंगंरेंगं, रेंगंमं,

गं

रेंसां, गंरेंसांरेंसां, निसांरेंसां, धप, धसां, ध, नि रें सांधप, सांधप, निधनि, (नि), धप, धसां, ध, निधमगरेसा, रेनिसा, ध, निसा।

पाठ ७३

राग भैरवी–सरगम–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

ग	रे	सा	नि	|	सा	ग	म	ध	|	प	–	प	नि	|	ध	प	म	ग
०					३					×					२			

– रे सा नि़ | सा ग म ध | प – प नि | ध प म ग
० ३ × २

म प म ग | रे सा, नि़ सा | गं म प ध | नि सां –, सा
० ३ × २

ग म प ध | नि – –, नि़ | सा ग म प | ध –, प म
० ३ × २

अंतरा

म नि
नि ध प ग | म ध – नि | सां – सां नि | सां रें सां –
० ३ × २

सां रें गं मं | गं रें सां, गं | – रें सां नि | ध प म ग
० ३ × २

– रे सा –, | नि़ सा ग म | प ध नि सां | नि ध प म
० ३ × २

पाठ ७४

राग भैरवी--लक्षणगीत–त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

गुनिजन बरनत भैरवि रागिणि, संपूर्ण मृदु रीगमधनियुत मध्यम वादी, खरज सुर सहचर ।

दिन दूजे पहर गाय सुलच्छन, चतुर बखानत सुनो 'सुजान,' उपजत रस अनुराग सुनत ही, सोहत मोहत मन अति सुन्दर ॥

स्थायी

			नि़
सा री ग म	प म ग म	ग – सा री	सा – ध़ नि़
गु नि ज न	ब र न त	भै ऽ र वि	रा ऽ ग नि
०	३	×	२
सा – सा –	री सा नि़ सा	री ग म ध	नि (नि) ध प
सं ऽ पू ऽ	र न मृ दु	री ग म ध	नि ऽ यु त
०	३	×	२
ध प म म	ग – री सा	सा री ग म	री री सा सा
म ऽ ध्य म	वा ऽ दी ख	र ज सु र	स ह च र
०	३	×	२

अंतरा

म	नि		
ध प ग म	ध ध नि नि	सां – सां सां	सां – सां सां
दि न दू ऽ	जे प ह र	गा ऽ ये सु	ल ऽ च्छ न
०	३	×	२
			नि
नि नि नि नि	सां – सां सां	रीं सां नि सां	ध प – प
च तु र ब	खा ऽ न त	सु नो ऽ सु	जा ऽ ऽ न
०	३	×	२
			ग
प प प प	ध प म म	प म ग म	री री सा –
उ प ज त	र स अ नु	रा ऽ ग सु	न त ही ऽ
०	३	×	२
		नि	री
नि़ सा ग म	प ध नि सां	रीं सां ध प	ग ग री सा
सो ऽ ह त	मो ऽ ह त	म न अ त	सुं ऽ द र
०	३	×	२

पाठ ७५

राग भैरवी–भजन–कहरवा (मध्यलय)

गीत के शब्द

बिन करतब कस जीवन तेरो ,
नरतन अमोल पायो जग में , कुछ कर काज 'सुजन' उपयूगत।
शुद्ध चरित रखि निर्मल तन मन, कीजो दुःखित कष्ट निवारण ,
देश समाज विबुध जनसेवा , कर सार्थक मनुख जीवन नित ॥

स्थायी

						री॒									
म	म	प	म	ग॒	ग॒	री॒	सा	सा	री॒	ग॒	ग॒	म	–	म	–
बि	न	क	र	त	ब	क	से	जी	ऽ	व	न	ते	ऽ	रो	ऽ
×				०				×				०			
प.	प	प	प	ध॒	सां	–	सां	नि॒	–	नि॒	(नि॒)	प	ध॒	प	–
न	र	त	न	अ	मो	ऽ	ल	पा	ऽ	यो	ऽ	ज	ग	मों	ऽ
×				०				×				०			
												री॒			
प	प	ध॒	प	म	–	म	ग॒	ग॒	म	प	म	ग॒	ग॒	री॒	सा
कु	छ	क	र	का	ऽ	ज	सु	ज	न	उ	प	जू	ऽ	ग	त
×				०				×				०			

अंतरा

				नि॒											
प	–	प	प	ध॒	ध॒	नि॒	नि॒	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां
शु	ऽ	द्ध	च	रि	त	र	खि	नि	र	म	ल	त	न	म	न
×				०				×				०			

९

			नि
सां रीं गं -	रीं - सां सां	सां - रीं सां	ध - प प
की ऽ जो ऽ	दुः ऽ खि त	क ऽ ष्ट नि	वा ऽ र न
×	०	×	०

			नि
प - प ध	नि — नि नि	सां सां रीं सां	ध - प -
दे ऽ श स	मा ऽ ज वि	बु ध ज न	से ऽ वा ऽ
×	०	×	०

		प	री
पप पध निसां	नि ध प म	ग ग म म	ग ग री सा
कर साऽ ऽऽ	र थ क म	नु ख जी ऽ	व न नि त
×	०	×	०

पाठ ७६

राग भैरवी–त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

सगुन शुभ सोच बिचार कहे देरे बमना,
साजन परदेस बिरम रहे वाहूँ के आवन घरि पल छिन दिना।
चैन नहीं दिन निंदिया रैन नहीं, तरपत हूँ मीन जलबिन जैसे,
बाट जूहत छिन छिन नीर झरत नैना॥

स्थायी

				री
				स
		म म		
नि सा ग म	प - प नि	ध प ग प	म ग सा री	
गु न शु भ	सो ऽ च बि	चा ऽ र क	हे दे ऽ रे	
३	×	२	०	

नि॒	सा	ग॒	म	प	प	ध॒	प	पध॒नि॒	सांरीं॒	सां	नि॒	प	ध॒	प	म
ब	म	ना	सा	ज	न	प	र	देऽऽ	ऽऽ	स	बि	र	म	र	हे
३				×				२				०			

												री			
प	प	प	ध॒	प	म	सा	ग॒	मप	म	ग॒	सा	री॒	सा	–;	री॒
वा	हुँ	के	आ	व	न	घ	रि	पऽ	ल	छि	न	दि	ना	ऽ;	स
३				×				२				०			

अंतरा

	म		नि॒												
ध॒	प	ग॒	म	ध॒	ध॒	नि॒	नि॒	सां	–	–	रीं॒	नि॒	सां	सां	सां
चै	न	न	हिं	दि	न	निं	दि	या	ऽ	ऽ	रैं	ऽ	न	न	हिं
०				३				×				२			

												नि॒			
प	ध॒	नि॒	सां	गं॒	रीं॒	–	सां	नि॒	सां	रीं॒	सां	ध॒	–	प	–
त	र	प	त	हूँ	मी	ऽ	न	ज	ल	बि	न	जै	ऽ	से	ऽ
०				३				×				२			

	री				सा										म
ग॒	–	सा	री॒	सा	सा	नि॒	सा	ग॒	म	पध॒	नि॒सां	नि॒	ध॒	प	ग॒
बा	ऽ	ट	जू	ह	त	छि	न	छि	न	नीऽ	ऽऽ	र	झ	र	त
०				३				×				२			

री॒	सा	–;	री॒	नि॒	सा	ग॒	म
नै	ना	ऽ;	स	गु	न	शु	भ
०				३			

इत्यादि स्थायी के अनुसार।

पाठ ७७

राग भैरवी—ध्रुवपद—चौताल (विलम्बित)

गीत के शब्द

कहे कोऊ, राम नाम, अल्ला नाम कोऊ कहे।
रूप देखि कोऊ मगन, तरे कोऊ, नाम ही सों॥
परब्रह्म परमेश्वर, दूजो नाहिं पालनहार।
नाम रूप गुण सकल, दुख द्वन्द्व हरे जासों॥
रच्यो अखिल संसार जा हि अपनी इच्छा सों।
लिपटि रह्यो पामर नर, माया भरमजाल सों॥
जीवातम परमातम, अग्रंपार प्रगट गुपत।
भेद आप–परता को, मिटे साचे ग्यान सों॥

स्थायी

नि॒			म			ग॒					
ध॒	प	—	ग॒	—	म	री॒	ग॒	री॒	सा	—	सा
क	हे	ऽ	को	ऽ	ऊ	रा	ऽ	म	ना	ऽ	म
×		०		२		०		३		४	

	सा										
री॒	नि॒̣	—	सा	—	री॒	ग॒	—	म	म	म	—
अ	ल्ला	ऽ	ना	ऽ	म	को	ऽ	ऊ	क	हे	ऽ
×		०		२		०		३		४	

नि॒̣											
सा	—	ध॒	प	—	ध॒	नि॒	ध॒	पम	प	म	म
रू	ऽ	प	दे	ऽ	खि	को	ऊ	ऽऽ	म	ग	न
×		०		२		०		३		४	

			म								
सा	सा	री॒	ग॒	प	म	ग॒	म	ग॒	री॒	—	सा
त	रे	ऽ	को	ऽ	उ	ना	ऽ	म	ही	ऽ	सों
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

म	म		नि॒								
प	ग॒	म	ध॒	—	नि॒	सां	सां	सां	-	सां	सां
प	र	ऽ	ब्र	ऽ	ह्म	प	र	मे	ऽ	श्व	र
×		०		२		०		३		४	

								नि॒	नि॒		
नि॒	-	नि॒	सां	—	सां	रीं॒	सां	सां	ध॒	—	प
दू	ऽ	जो	ना	ऽ	हि	पा	ल	न	हा	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

प	—	प	प	ध॒	नि॒	ध॒	प	म	प	म	म
ना	ऽ	म	रू	ऽ	प	गु	न	ऽ	स	क	ल
×		०		२		०		३		४	

						ग॒					
सा	सा	री॒	ग॒	—	म	री॒	री॒	ग॒	री॒	—	सा
दू	ख	ऽ	दौं	ऽ	द	ह	रे	ऽ	जा	ऽ	सों
×		०		२		०		३		४	

संचारी

नि॒						नि॒					
सा	सा	ध॒	प	प	प	ध॒	—	—	प	—	प
र	च्यो	ऽ	अ	खि	ल	सं	ऽ	ऽ	सा	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

									नि॒		
प	—	ध॒	नि॒	सां	सां	रीं॒	सां	—	ध॒	प	—
जा	ऽ	हि	अ	प	नी	इ	च्छा	ऽ	सों	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

								ग̲			
प	ध̲	पम	प	म	—	ग̲	म	रे̲	रे̲	सा	सा
लि	प	ऽऽ	र	ह्यो	ऽ	पा	ऽ	म	र	न	र
×		०		२		०		३		४	

नि̣̲	—	नि̣̲	सा	सा	रे̲	ग̲	—	ग̲	म	—	—
मा	ऽ	या	भ	र	म	जा	ऽ	ल	सों	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

आभोग

म											
ध̲	—	ध̲	म	ध̲	नि̲	सां	सां	सां	—	सां	सां
जी	ऽ	वा	ऽ	त	म	प	र	मा	ऽ	त	म
×		०		२		०		३		४	

										नि̲	
नि̲	नि̲	—	सां	—	गं̲	रें̲	रें̲	सां	सां	ध̲	प
अ	प्रं	ऽ	पा	ऽ	र	प्र	ग	ट	गु	प	त
×		०		२		०		३		४	

गं̲	—	गं̲	मं	—	मं	गं̲	रें̲	गं̲	रें̲	—	सां
भे	ऽ	द	आ	ऽ	प	प	र	ऽ	ता	ऽ	को
×		०		२		०		३		४	

						ग̲					
सा	सा	रे̲	ग̲	—	म	रे̲	ग̲	रे̲	सा	—	—
मि	टे	ऽ	सा	ऽ	चे	ग्या	ऽ	न	सों	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

पाठ ७८

कोमल रिखब तीव्र मध्यम साधन ।

(इसमें पंचम नहीं होगा)

१. सा; ध, म॑ध, म॑ । ग, रे॒ग, रे॒, सा ॥
२. सा; म॑ध, नि, धम॑ । रे॒ग, म॑, गरे॒, सा ॥
३. सा; रे॒ म॑ ग रे॒ । म॑ नि ध म॑ ॥
४. सा; नि़रे॒नि़, गम॑ग, धनिध, निरें॒नि ।
निरें॒नि, धनिध, गम॑ग, नि़रे॒नि़, रे॒ सा ॥
५. सा; नि़रे॒, गम॑, धनि । नि, धम॑, गरे॒ नि़ध़, सा ॥
६. सा; नि़रे॒ग, गम॑ध, निरें॒गं । गंरें॒नि, धम॑ग, गरे॒नि़, रे॒सा ॥
७. सा, नि़ रे॒ ग म॑ ध नि रें॒ । रें॒ नि ध म॑ ग रे॒ सा ॥

पाठ ७९

राग मारवा, ठाठ मारवा ।

मारवा राग मारवा ठाठ से उत्पन्न होता है। मारवा ठाठ में कोमल ऋषभ तथा तीव्र मध्यम ये दो विकृत एवं शेष सब स्वर शुद्ध होते हैं। मारवा ठाठ तो संपूर्ण है, अतएव उसके स्वर 'सा, रे॒, ग, म॑, प, ध, नि, सां' इस प्रकार होंगे। मारवा राग में पंचम वर्ज्य है, अतएव यह षाडव–षाडव जाति का राग है। प्रायः मारवा राग में "सारे॒" एवं "सांरें॒" की अपेक्षा "नि़रे॒" तथा "निरें॒" का प्रयोग क्रमशः अधिक होता है। 'रें॒निध' संगति का प्रयोग अवरोह में रागांग वाचक है। इस राग का वादी स्वर ऋषभ एवं संवादी धैवत है। गाने का समय दिन का अंतिम प्रहर है। यह राग तीनों सप्तकों में पर्याप्त फैलता है। अन्तरे का आरम्भ प्रायः "म॑ ध म॑ सां" इस स्वर–संगति से किया जाता है।

आरोह :—सा, नि़रे॒, गम॑ध, निरें॒,,, सां ।
अवरोह :—सां, रें॒ निध, म॑ गरे॒, सा ॥
पकड़ :—सा, नि़रे॒, ध़सा नि़रे॒, गम॑ध, म॑धम॑गरे॒, सा ।

स्वरविस्तार

१. सा, नि़रे॒, ध़सा, म॑धम॑गरे॒, गरे॒, सा।
२. सा, म़॑ध़सा, नि़रे॒, ध़सा, रे॒गम॑गरे॒, सा।
३. सा, नि़रे॒गम॑ध, म॑धम॑गरे॒, म॑रे॒ग, रे॒, सा।
४. सा ध़नि़रे॒, म॑गरे॒, म॑धम॑धम॑गरे॒, रे॒गम॑धम॑गरे॒, गम॑गरे॒, गरे॒, रे॒सा।
५. म॑गरे॒नि़ध़म़॑सा, नि़रे॒ध़सा, गम॑धम॑गरे॒, गम॑निधम॑गरे॒, गम॑धरें॒, निध म॑गरे॒, गम॑धम॑गरे॒, गम॑गरे॒, गरे॒, रे॒सा।
६. म॑, धम॑, निधम॑, धनिरें॒, निरें॒निधम॑, निध, म॑ध, म॑, निधम॑गरे॒ सा।
७. ध, म॑ध, रे॒ गम॑ध, रें॒निध, धनिरें॒गं, रें॒निध, म॑निध, निम॑ध, गम॑ध, रे॒गम॑ध, म॑धम॑गरे॒, गम॑गरे॒, रे॒, सा।
८. म॑म॑धम॑, सां, सां, सां, निरें॒सां, निरें॒, निध, म॑, सां,,, निरें॒गं, रें॒, धसां, निरें॒, निध, म॑धनिरें॒, निध, निरें॒गंम॑ंगंरें॒निध, म॑ध, रें॒निधम॑गरे॒, निधम॑गरे॒सा।
९. नि़रे॒गम॑गरे॒ गम॑धम॑गरे॒ गम॑धनिरें॒निधम॑गरे॒ गम॑धनिरें॒गंम॑ंगंरें॒नि धम॑ग-रे॒सा। म़॑ध़नि़रे॒गम॑ध, रे॒गम॑धनिरें॒गं, गम॑धनिरें॒गंम॑ं, गंरें॒निध म॑गरे॒सा।

पाठ ८०

राग मारवा–सरगम –त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

														ध	म॑
ग	रे॒	सा	नि़	रे॒	ग	म॑	नि	ध	–	म॑	ध	म॑	ग	रे॒	–
०				३				×				२			
रे॒	ग	म॑	ग	रे॒	सा	नि़	रे॒	नि़	ध़	म़॑	ध़	सा	–,	म॑	ध
०				३				×				२			
सां	–	नि	रें॒	–	नि	ध	–	रें॒–,		रे॒	ग	म॑	नि;	ध	म॑
०				३				×				२			

अंतरा

मं ग रे़ सा	ग मं ध मं	सां – – सां	नि रें़ –, ध
०	३	×	२
नि रें़ गं मं	गं रें़ सां –	गं रें़ नि ध	मं नि ध मं
०	३	×	२
ग रे़ सा –	ऩि रे़ – रे़	ग – ग मं	– मं ध –
०	३	×	२
ध ऩि रे़ ग	मं ध नि रें़	नि ध मं ग	रे़ सा; ध मं
०	३	×	२

पाठ ८१

राग मारवा–लक्षणगीत–त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

मृदु रिखब गमधनि तीवर मेल मिलाये मारवा राग
बिन पंचम धरि संवादी–वादी नित मधुर।
तीजे पहर दिन गाये मुनीवर, धीरोद्धत गंभीर
सुर उचार, आश्रय ललित भखार भटियार॥

स्थायी

			री़
			मृ
सा ध मं ध	ग मं ध नि	रीं— नि (ध)निध	मं ध मं ग
दु रि ख ब	ग म ध नि	ती ऽ व रऽ	मे ऽ ल मि
०	३	×	२

सा	ध़		
रे॒ — सा नि़	रे॒ नि़ म॑ ध़	सा — सा नि़	रे॒ ग म॑ ग
ला ऽ ये मा	ऽ र वा ऽ	रा ऽ ग बि	न पं च म
०	३	×	२
	ध		
रे॒ सा नि़ रे॒	ग — ग म॑	— म॑ ध म॑	ध म॑ ग; रे॒
ध रि स म	वा ऽ दि वा	ऽ दि नि त	म धु र; मृ
०	३	×	२

अंतरा

		ध म॑	
रें॒ - सां सां	सां सां सां सां	म॑ ध म॑ सां	सां - सां सां
ती ऽ जे प	ह र दि न	गा ऽ ये गु	नी ऽ व र
०	३	×	२
सां		सां	
नि रें॒ गं मं॑	गं रें॒ सां -	नि रें॒ नि ध	म॑ ग रे॒ सा
धी ऽ रो ऽ	द्ध त गं ऽ	भी ऽ र सु	र उ चा र
०	३	×	२
रे॒ - ग ग	म॑ म॑ ध ध	म॑ - ग म॑	ग रे॒ रे॒; सा
आ ऽ श्र य	ल लि त भ	खा ऽ र भ	टि या र; मृ
०	३	×	२

पाठ ८२

राग मारवा–लक्षणगीत–त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

मृदु रिखब तीवर मध्यम निधग शुचि सुरन सों
मारुव मेल तासों उपजत मारवा राग सुखकर ।
बिन पंचम षाडव जाति लसत; रिध संवाद चरम पहर दिन
गाये बजाये रिझाये गुनीवर ॥

स्थायी

ध	सा	ध	
मं ध मं ग	री नि़ री ग	मं – ध मं	नि ध ग मं
मृ दु रि ख	ब ती व र	म ऽ ध्य म	नि ध ग शु
०	३	×	२

सा	ध़		सा
ग री नि़ री	सा – मं़ ध़	सा सा री –	सा नि़ – री
चि सु र न	सों ऽ मा ऽ	रु व मे ऽ	ल ता ऽ सों
०	३	×	२

	सां ध		
ग ग मं ध	नि रीं नि मं	ध मं – ग	मं ग री सा
उ प ज त	मा ऽ र वा	ऽ रा ऽ ग	सु ख क र
०	३	×	२

अंतरा

मं		सां	
ग ग मं –	ध मं सां –	सां सां नि रीं	नि रीं नि ध
बि न पं ऽ	च म षा ऽ	ड व जा ऽ	ति ल स त
०	३	×	२

		सां	
ध नि रीं गं	मं गं रीं सां	नि नि रीं रीं	नि रीं नि ध
रि ध सं ऽ	वा ऽ ऽ द	च र म प	ह र दि न
०	३	×	२

ग	ध	सां	
री – ग ग	मं – ध ध	नि रीं नि ध	मं ग री सा
गा ऽ ये ब	जा ऽ ये रि	झा ऽ ये गु	नी ऽ व र
०	३	×	२

पाठ ८३

राग मारवा–त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

जदुपत केष्ण जसोदा नन्दन, श्यामसुंदर मनमोहन माधो
मुकुन्द मुरारी मधुसूदन ।
दुःख हरन सुख करन जग बंदन, सुमिरत नाम हरत भवबंधन,
परब्रह्म परम पुरुख परमेश्वर जोगी जाको ध्यान करत,
सुन रे ‘सुजन’ ॥

स्थायी

सा		म॑	
नि़ री ग म॑	ध म॑ ध म॑	ग री ग म॑	ग री सा सा
ज दु प त	के ऽ ष्ण ज	सो ऽ दा ऽ	नं ऽ द न
३	×	२	०

सा ध़		सा	
नि़ री नि़ म़॑	म़॑ ध़ सा सा	नि़ री ग म॑	ग री सा सा
श्या ऽ म सुं	द र म न	मो ऽ ह न	मा ऽ धो मु
३	×	२	०

ध म॑ ध ध	म॑ध निरीं निध म॑ग	रीसा नि़री ग म॑	ग री सा सा
कुं ऽ द मु	राऽ ऽऽ रीऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ म धु	सू ऽ द न
३	×	२	०

अंतरा

री री ग ग	म॑ म॑ ध ध	सां सां सां सां	रीं — सां सां
दु ख ह र	न सु ख क	र न ज ग	बं ऽ द न
०	३	×	२

सां		सां	
नि रीं गं मं	गं रीं सां सां	नि रीं नि ध	मं ग ग ग
सु मि र त	ना ऽ म ह	र त भ व	बं ऽ ध न
०	३	×	२

मं		सा	
मं री — ग	— ग मं ग	री नि़ री सा	री री ग —
प र ऽ ब्र	ऽ ह्म प र	म पु रु ख	प र मे ऽ
०	३	×	२

सां.			ध़
मं ध नि रीं	नि ध मं ध	मं ग मं ग	री सा मं़ मं़
श्व र जो ऽ	गि जा ऽ को	ध्या ऽ न क	र त सु न
०	३	×	२

	सा	
ध़ सा सा सा	नि़ री ग मं	इत्यादि स्थायी के अनुसार
रे सु ज न	ज दु प त	
०	३	

पाठ ८४

राग मारवा – ध्रुवपद – चौताल

गीत के शब्द

नभ–मण्डल परकासत अनगिन तारागण युत ।
तामें सप्त–विंशति शुभ उडुगण सोहत चमकत ॥
मेख वृखभ मिथुन कर्क सिंघ कन्या तूल विछिक ।
धनु मकर कुंभ मीन द्वादश हूँ रास लसत ॥
रवि–मण्डल नौ ग्रह युत बुध मंगल पृथिवी शशि ।
शुक्र बृहस्पति शनिचर राहु केतु उग्र चरित ॥
मनुज देह चित्त चरित बरनत नौ ग्रह सब मिल ।
ज्योतिष फल शुभ हुँ अशुभ ग्रह गति आधीन रहत ॥

स्थायी

						सां					
रीं	रीं	रीं	—	सां	सां	नि	रीं	नि	ध	ध	ध
न	भ	मं	ऽ	ड	ल	प	र	का	ऽ	स	त
×		०		२		०		३		४	

ध		सां				ध					
म॑	ध	नि	रीं	नि	ध	म॑	ध	म॑	ग	री	सा
अ	न	गि	न	ता	ऽ	रा	ऽ	ग	ण	यु	त
×		०		२		०		३		४	

सा			ध़								
नि़	री	नि़	म़॑	—	ध़	सा	—	री	री	सा	सा
ता	ऽ	में	स	ऽ	त	विं	ऽ	श	ति	शु	भ
×		०		२		०		३		४	

सा				ध							
नि़	री	ग	ग	म॑	ध	म॑	ग	म॑	ग	री	सा
उ	डु	ग	ण	सो	ऽ	ह	त	च	म	क	त
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

								सां			
म॑	—	ग	री	सा	सा	सां	सां	नि	रीं	—	रीं
मे	ऽ	ख	वृ	ख	ब	मि	थु	न	क	ऽ	र्क
×		०		२		०		३		४	

सां						सां					
नि	रीं	गं	म॑ं	गं	रीं	नि	रीं	नि	ध	ध	ध
सिं	घ	क	ऽ	न्या	ऽ	तू	ऽ	ल	वि	छि	क
×		०		२		०		३		४	

नि											
ध	नि	–	रीं॒	गं	गं	मं॑	गं	मं॑	गं	रीं॒	सां
ध	नु	ऽ	र्म	क	र	कुं	ऽ	भ	मी	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	

ग				ध							
रि॒	–	ग	ग	म॑	नि	ध	म॑	ग	रि॒	सा	सा
द्रा	ऽ	द	श	हूँ	ऽ	रा	ऽ	स	ल	स	त
×		०		२		०		३		४	

संचारी

		सा						ध			
सा	सा	ध	–	ध	ध	ध	–	म॑	म॑	ध	ध
र	वि	मं	ऽ	ड	ल	नौ	ऽ	ग्र	ह	यु	त
×		०		२		०		३		४	

ध		सां									
म॑	ध	नि	रीं॒	नि	ध	म॑	ध	म॑	–	ग	ग
बु	ध	मं	ऽ	ग	ल	पृ	थि	वी	ऽ	श	शि
×		०		२		०		३		४	

ग				ध							
रि॒	–	ग	ग	म॑	ध	म॑	ग	म॑	ग	रि॒	सा
शु	ऽ	क्र	बृ	ह	ऽ	स्प	ति	श	नि	च	र
×		०		२		०		३		४	

						ध					
रि॒	–	रि॒	ग	–	ग	म॑	–	म॑	ध	ध	ध
रा	ऽ	हु	के	ऽ	तु	उ	ऽ	ग्र	च	रि	त
×		०		२		०		३		४	

आभोग

ध											
मं	मं	ध	सां	–	सां	सां	–	सां	सां	सां	सां
म	नु	ज	दे	ऽ	ह	चि	ऽ	त्त	च	रि	त
×		०		२		०		३		४	

सां								सां	नि		
नि	नि	रीं	ग	रीं	–	सां	सां	नि	रीं	नि	ध
ब	र	न	त	नौ	ऽ	ग्र	ह	स	ब	मि	ल
×		०		२		०		३		४	

								ध			
मं	–	गं	मं	गं	रीं	सां	सां	मं	ध	सां	सां
ज्यो	ऽ	ति	प	फ	ल	शु	भ	हुँ	अ	शु	भ
×		०		२		०		३		४	

सां				ध							
नि	रीं	नि	ध	मं	ध	मं	ग	मं	ग	री	सा
ग्र	ह	ग	ति	आ	ऽ	धी	ऽ	न	र	ह	त
×		०		२		०		३		४	

पाठ ८५

कोमल री ध तथा तीव्र मध्यम साधन।

१. सा, नि़, रे सा। प, मं, धप ॥

२. सा; नि़सारेग। प; मंपधनि ॥

३. निधप, मं, गरेसा।

४, सा; नि़रे ग, रेसा। प; मंधनि, धप ॥

५. सां; नि़रे़गमं । प; मंधनिरें ॥

६. सां; निसांरेंसां । प; मंपधप ॥

७. सां; निरेंगंरेंसां, मंधनिधप, नि़रे़गरे़सा ।

८. नि़, रे़गमंग, मं, धनिरेंनि ।

९. सां, रेंनिधप, मंगरे़सा।

१०. सा; सारे़, ग, मंप, पध, निसां । सांनि, धप, पमं, ग, रे़सा ॥

११. सारे़गमंपधनिसां । सांनिधपमंगरे़सा ॥

पाठ ८६

राग पूर्वी, ठाठ पूर्वी

पूर्वी राग पूर्वी ठाठ से उत्पन्न होता है; जिसमें कोमल ऋषभ, कोमल धैवत एवं तीव्र मध्यम ये विकृत तथा शेष सब शुद्ध स्वर होते हैं। पूर्वी राग में शुद्ध मध्यम का प्रयोग भी मर्यादित रूप में किया जाता है। यह स्वर सरल आरोह–अवरोह में नहीं लिया जाता। केवल दो गांधारों के बीच, 'गमग' ऐसी स्वर–संगति में, प्रयुक्त होता है। शुद्ध मध्यम लेते हुए न इसमें 'गमप' न 'पमग' ही हो सकता है। मारवा राग की भाँति इसमें भी 'सारे़' की अपेक्षा 'नि़रे़' संगति का प्रयोग आरोह में अधिक तथा 'मंध' संगति आरोह में एवं 'रेंनि' संगति अवरोह में आती है। इसका वादी स्वर गांधार, संवादी निषाद है। सायंगेय संधिप्रकाश राग है, अर्थात् सूर्यास्त के समय गाया जाता है। गम्भीर प्रकृति का राग है। विलम्बित आलाप, मींड, गमक, तान के योग्य है। तीनों सप्तकों में इसका विस्तार होता है। उत्तरांग में इसमें 'मंधसां' तथा 'मंधनिसां' इन संगतियों का अधिक प्रयोग होने पर रागहानि होने की सम्भावना रहती है। अन्तरे का आरम्भ "ग, मंधप, सां, सां, निरेंसां" इस प्रकार प्रायः किया जाता है।

आरोह :—सा, नि़रे़ग, मंप, धनिसां ।

अवरोह :—सांनिधप, मंग, रे़सा ॥

पकड़ :—सा, नि़, सारे़ग, मग, पधमं, प, गमग, धमंगरे़सा ॥

स्वरविस्तार

१. सा, मंगरेसा, रेनि, सारेग, मग, प, मं, गमग, रेग, मंगरेसा।

२. गरेसा, निरेनिध निधप, सा, निरेग, रेमं, गमग, मंधमं, मंग, गरे, सा।

प प

३. धनिरेग, मंग, मग, पधमंप, गमग, निरेगमंप, मं, मं, गमग, मंधमंग, गरेसा।

४. मंगरेनिधप, मंधनि, धनि, रेसा, गमंप, मंगमग, रेप, मंग, मग, मंधमंग, मंग, मग, गमंधमंगरेसा।

प प

५. निरेगमंप, मंप, धप, रेगमंप, धप, मं, मं, गमरेग, रेगमंप, मंग, धमंग, रेसा।

६. प, मंधनिधप, मंप, रेप, रेगमंधप, धमं, प, गमग, गमंधमंग, धनिरेगमंप, मं, गमग, धमंगरेसा।

७. मंधनि, धनि, गमंधनि, रेंनि, धनि, धप, मंधनिधप, मंनि, धप, धमं, प, मं, गमग, मंधमंग, रे, सा।

८. ग, मंधप, सां, सां, सां, निरेंसां, निरेंगं, रेंगं, रेंसां, निधनि, रेंनिधनिधप, मंग, मंधनिरेंनिधप, निधप, धमं, प, गमग, रेगमंधमंग, ग, रेसा।

९. सां, निरेंसां, गं, रेंसां, निरेंगं, मंगं, रेंगं, मं, गं, रेंसां, गंरेंनिधप, मंधनिधप, धमं, पमं, गमग, धमंगरेसा।

१०. निरेगमग रेगमंपधपमं गमगरे गमंधनिधप मंधनिरेंनिध निरेंगंरें निरेंगंमंगंरेंसांनि रेंनिधप मंधनिधप मंपधपमंगमगरे गमंधमंगरेसा।

पाठ ८७

राग पूर्वी – सरगम – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

मं ग रे सा	नि़ — सा रे	ग — म ग	रे ग मं प
०	३	×	२
ध प ध मं	प मं ग म	ग — मं ध	मं ग रे सा
०	३	×	२
नि़ रे ग रे	ग मं प —	मं ध नि ध	रें नि ध प
०	३	×	२

अंतरा

मं ग मं ध	प सां — सां	नि रें गं मं	गं रें सां —
०	३	×	२
ध नि रें गं	रें सां नि —	रें नि ध प	मं ग म ग
०	३	×	२
नि ध मं ग	रे सा, नि़ रे	ग मं ध नि	रें नि ध प
०	३	×	२

पाठ ८८

राग पूर्वी--लक्षणगीत--त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

पूरवि मेल जनित अति सुन्दर, पूरवि राग मधुर संपूरन,
मृदु रिध तीवर मध्यम सुध गनि, कबहुँ बिलुम
मृदु मध्यम सोहत । सायं संधि समे नित गावत,
गनि वादी-संवादी गहत गुनि, परज बसंत गौरी श्री
आश्रय, सुन रे ' सुजान ' चतुर गुनि सम्मत ॥

स्थायी

प								सा							
म॑	ध॒	म॑	ग	री॒	सा	सा	सा	नि़	री॒	ग	री॒	ग	म	ग	ग
पू	ऽ	र	वि	से	ऽ	ल	ज	नि	त	अ	ति	सु	ऽ	न्द	र
०				३				×				२			

								म॑		प	म॑				
नि़	री॒	ग	म॑	प	–	प	प	प	ध॒	म॑	पम॑	ग	म	ग	ग
पू	ऽ	र	वि	रा	ऽ	ग	म	धु	र	सं	ऽऽ	पू	ऽ	र	न
०				३				×				२			

		ध॒								प					
म॑	ग	म॑	ध॒	नि	रीं॒	नि	ध॒	प	ध॒	म॑	पम॑	ग	म	ग	ग
मृ	दु	रि	ध	ती	ऽ	व	र	म	ऽ	ध्य	मऽ	सु	ध	ग	नि
०				३				×				२			

ध॒				सा											
म॑	ध॒	म॑	ग	नि़	री॒	सा	सा	नि़	री॒	ग	म॑	प	–	प	प
क	ब	हुँ	बि	लु	म	मृ	दु	म	ऽ	ध्य	म	सो	ऽ	ह	त
०				३				×				२			

अंतरा

		ध॒									सां				
म॑	ग	म॑	ध॒	सां	–	सां	सां	सां	–	सां	नि	रीं॒	–	सां	सां
सा	ऽ	यं	ऽ	सं	ऽ	धि	स	से	ऽ	नि	त	गा	ऽ	व	त
०				३				×				२			

नि	नि	रीं॒	गं	रीं॒	–	सां	–	नि	ध॒	नि	रीं॒	नि	ध॒	प	प
ग	नि	वा	ऽ	दी	ऽ	सं	ऽ	वा	ऽ	दी	ग	ह	त	गु	नि
०				३				×				२			

				ध॒			रीं॒								
म॑	म॑	ग	ग	म॑	–	ध॒	नि	रीं॒	नि	ध॒	प	ग	म	ग	ग
प	र	ज	ब	सं	ऽ	त	गौ	ऽ	री	सि	री	आ	ऽ	श्र	य
०				३				×				२			

सा		मं प	
ऩि ऱी ग मं	प – प प	प ध॒ मं पमं	ग म ग ग
सु न रे सु	जा ऽ न च	तु र गु निऽ	सं ऽ म त
०	३	×	२

पाठ ८९

राग पूर्वी–त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

जग जननी देवि भवानी शिवानी, शरन जाऊँ तोरे
चरन कमल पर, सर नवाऊँ वरदान दीजो।
अष्ट भुजा महिषासुर मर्दिनी, पाप हरनि दुख दंद
निस्तारनि, ध्यावै रूप गावै नाम पावै 'सुजन'
चित शान्ति भुक्ति मुक्ति जो॥

स्थायी

			मं
			ज
	री		मं
ग ऱी सा सा	नि ऱी ग ऱी	गमं पध॒ पमं पमं	ग म ग –
ग ज न नि	दे ऽ वि भ	वाऽ ऽऽ निऽ शिऽ	वा ऽ नी ऽ
०	३	×	२
मं प नि ऱीं		मं	मं
ग मं ध॒ नि	ऱीं नि ध॒ प	प ध॒ पमं पमं	ग म ग ग
श र न जा	ऽ ऊँ तो रे	च र नऽ कऽ	म ल प र
०	३	×	२
		प	ऱीं
ग मं ध॒ निऱीं	गं ऱीं सां सां	मं – ध॒ नि	नि ध॒ प; मं
स र न वाऽ	ऽ ऊँ व र	दा ऽ न दी	ऽ जो ऽ; ज
०	३	×	२

११

अंतरा

			सां
मं ग मं ध॒	सां – सां सां	सां – सां सां	नि रीं॒ सां सां
अ ऽ ष्ट भु	जा ऽ म हि	षा ऽ सु र	म र दि नी
०	३	×	२

सां			
नि रीं॒ गं मं	गं रीं॒ सां सां	नि ध॒ नि रीं॒	नि ध॒ प प
पा ऽ प ह	र नि दु ख	दं द नि ऽ	स्ता ऽ र नि
०	३	×	२

प प	रीं		मं प
मं – ग, मं	– ध॒, नि रीं॒	नि, ध॒ प प,	प ध॒ मं, पमं
ध्या ऽ वै, रू	ऽ प, शा ऽ	वै, ना ऽ म,	पा ऽ वै, सुऽ
०	३	×	२

मं	सा	प	
ग म, ग ग	नि़ – री॒, ग	– ग, मं ध॒	नि ध॒ प; मं
ज न, चि त	शा ऽ न्ति, भु	ऽ क्ति, मु ऽ	क्ति जो ऽ; ज
०	३	×	२

पाठ ९०

राग पूर्वी–साभ्रा--झपताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

अतुल शोभा साँझ की चित लुभवानी ।
निहरि हिय में हुलास अचरज आनंद भयो ॥
रक्त रवि बिंब तैं खितिज केसर भयो ।
स्वर्ण बरन मेघ तैं गगन बिखरायो ॥
जैसी नई दुलहन लजत मुसकानी ।
रेख दूजे चन्द्रमा को उदय भयो ।
मंद मंद समीर सुखद शीतल बहे ।
हुमबेली जिय जंत अखिल जग मुदित भयो ॥

स्थायी

म॑	ग	री॒	सा	–	ऩि	री॒	ग	–	री॒
अ	तु	ल	शो	ऽ	भा	ऽ	साँ	ऽ	झ
×		२			०		३		
		म॑		प					
(गम॑)	प	प	ध॒	म॑	प	(म॑ग)	म	ग	–
(कीऽ)	ऽ	चि	त	लु	भा	(ऽऽ)	व	नी	ऽ
×		२			०		३		
			प						
म॑	ग	ग	म॑	ध॒	नि	रीं॒	नि	ध॒	प
नि	ह	रि	हि	य	में	हु	ला	ऽ	स
×		२			०		३		
म		प							
प	ध॒	म॑	प	म॑	ग	म॑	ग	री॒	सा
अ	च	र	ज	आ	नं	ऽ	द	भ	यो
×		२			०		३		

अंतरा

			प		नि				
म॑	ग	ग	म॑	ध॒	सां	—	सां	सां	—
र	ऽ	क्त	र	वि	बिं	ऽ	ब	तैं	ऽ
×		२			०		३		
			सां						
नि	नि	ध॒	नि	रीं॒	नि	ध॒	नि	ध॒	प
खि	ति	ज	के	ऽ	स	र	भ	यो	ऽ
×		२			०		३		
					प		सां		
म॑	ग	ग	—	ग	म॑	ध॒	नि	रीं॒	नि
स्व	ऽ	र्ण	ऽ	ब	र	न	मे	ऽ	घ
×		२			०		३		

		मं		प			मं		
ध॒	प	प	ध॒	मं	प	मं	ग	म	ग
तैं	ऽ	ग	ग	न	बि	ख	रा	ऽ	यो
×		२			०		३		

संचारी

नि		सा					प		
सा	—	प	—	प	प	प	मं	ध॒	प
जै	ऽ	सी	ऽ	न	ई	दु	ल	ह	न
×		२			०		३		
प							मं		
मं	मं	ध॒	नि	ध॒	प	मं	ग	म	ग
ल	ज	त	मु	स	का	ऽ	नी	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
सां									
नि	—	रें॒	गं	रें॒	सां	—	नि	ध॒	प
रे	ऽ	ख	दू	ऽ	जे	ऽ	चं	ऽ	द्र
×		२			०		३		
मं		प							
प	ध॒	मं	प	मं	ग	मं	ग	रे॒	सा
मा	ऽ	को	ऽ	उ	द	य	भ	यो	ऽ
×		२			०		३		

आभोग

प			प		नि				
मं	ग	ग	मं	ध॒	सां	सां	सां	—	सां
मं	ऽ	द	मं	ऽ	द	स	मी	ऽ	र
×		२			०		३		

सां नि			नि	रीं	गं	रीं	सां			सांनि	रीं	सां	—
सु			ख	द्	शी	ऽ	त			लऽ	ब	हे	ऽ
×				२			०				३		

सां नि			रीं	गं	—	गं	मं			गं	रीं	--	सां
द्रु			म	बे	ऽ	ली	जि			य	जं	ऽ	त
×				२			०				३		

नि			ध	प	मं	ग	मंध			मं	ग	री	सा
अ			खि	ल	ज	ग	मुऽ			दि	त	भ	यो
×				२			०				३		

पाठ ९१

कोमल रि ध ग एवं तीव्र मध्यम साधन ।

१. सां; सांनि, सांरें, निध । प; पमं, पध, मंग ॥
२. सा; रे, ग, मंप । प; मं, ध, निसां ॥
३. सां; रेंनि, ध, मं । प; धमं, ग, रे, सा ॥
४. सा, ग, रेग, प; ध, मंध, सां ।
५. सां, निसांरेंसां, निध; प, मंपधप, मंग ।
६. सा, रेगमंप; मं ध नि सां ।
७. सा, रेग, मं, पध, निसां ।
८. सां, निध, प, मंग, रेसा ।
९. सा, सांरेंगंरें, सांनिध, पमं, ग, रे, सा ।

पाठ ९२

राग तोडी, ठाठ तोडी

तोडी राग तोडी ठाठ के सुरों से सजा हुआ है। अतएव इसमें ऋषभ, गांधार एवं धैवत कोमल तथा तीव्र मध्यम, ये विकृत और शेष सब स्वर शुद्ध लगते हैं। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका वादी स्वर धैवत तथा संवादी गांधार है। गाने का समय दिन का प्रथम प्रहर है। आरोह में पंचम का अल्प प्रयोग किया जाता है। तार सप्तक के 'सां' पर जाते समय अधिकतर 'पध़' की अपेक्षा 'मंध़' ही गाया जाता है। धैवत पर न्यास आरोह में करते समय "मंपध़", "रे़ग़मंपध़", इत्यादि प्रकार से पंचम का प्रयोग होता है। अति गंभीर, विलम्बित आलाप में, मींड के साथ गाया जाने योग्य है। इसके स्वरान्तर अवश्य कुछ कठिन से हैं। उनको सावधानी के साथ सीखकर उनका अभ्यास करके गले में बिठा लेना आवश्यक है। तीनों सप्तकों में यह राग पर्याप्त फैलता है।

आरोह : सा, रे़ग़, मंपध़, प, मंध़निसां।

अवरोह : सां, निध़, प, मंग़, रे़, सा॥

पकड़ : सा, ध़, प, मं, पध़, मंग़, मंरे़ग़, रे़सा।

स्वर–विस्तार

१. सा, रे़ग़रे़सा, ध़, ध़, प, मंप, मंपध़, मंग़, मं, रे़ग़, रे़, सा।

ग़

२. सा, रे़, ग़, रे़, सा, ध़नि़, सारे़ग़, रे़ग़, मंरे़ग़, रे़सा।

३. सा, नि़, सारे़ग़, रे़ग़, ध़नि़सारे़ग़, मंरे़ग़, प, मंपध़, मंग़, रे़ग़प, रे़ग़, रे़, सा।

ध़

४. सा, नि़सारे़, नि़ध़, मंध़, सा, सानि़, सारे़ग़, रे़ग़मंपध़, प, मंपध़प मंग़, मंरे़ग़, मंग़रे़, सा।

५. ग़रे़ नि़ध़प, मंध़, नि़ध़प, मंध़, मंध़सा, नि़सारे़, ध़नि़सारे़ग़, रे़ग़, मंप, मंध़ प, रे़ग़मंप, रे़ग़, रे़, सा।

६. सा, ऩिसारेग, प, मंप, ध, ध, ध, प, मंपध, प, मंधनिधप, रेगमंप ध, प, मंध, मंग प, रेग, रे, सा।

सा नि नि
७, सा, ध, ध, ध, प, मंध प, मंधनिध, प, गमंध निधप, सा, रेगमंध निधप, पमंध, निमंधनिध, प, मंध गपमंध, रेध, प, प (प), मंग, रेगमंप, रेग, रे सा।

८. प, मंग, मंधसां, सां, सां, सांरें, सां, मंधनिसां, नि, सांरेंनिध,
ध ध
धनिसांरेंगं, रेंगं, रेंसां, मंधनिसांरें, निध, मंध सां, निध, निध, प, गमंधसां, निध, प, मंपधप मंग, मंधमंग, मंरेग, रे, सा।

९. सां, सां; निधपमंध सां, सां, निरें, सां, सांरेंगं, रेंगं, मंरेंगं, रें, सां, धनि सां, निसां रें, निध, रेंनिधमंधसां, निध, निध, प, मंप, मंप, मंपध, रेंनिधप, मंप, मंप ध, मंग, मंरेग, रेसा।

१०. सा, रेगरेसा, रेगमं रेगमंपधमंग रेगमंधनिधप मंधनिसांनिध मंधनिसांरेंनिध निसांरेंगंरेंसां निसांरेंनिधप मंधनिसांनिधप मंधनिधप मंधमंगमं रेगरेसाऩि ध़ऩि मं़ध़ऩिसारेगरेसा।

पाठ ९३

राग तोडी–सरगम-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

															नि
ध	मं	ग	रे	सा	नि	सा	रे	ग	–	रे	ग	मं	प	ध	नि
०				३				×				२			

सां रें गं रें | सां –, मं ध | नि ध प –, | रे ग मं ग
० ३ × २

रे –, सा नि़ | सा रे ग रे | ग मं ध नि | सां – रें गं
० ३ × २

– रें सां – | नि ध – मं | ग – रे ग | – मं ध नि
० ३ × २

अंतरा

सां नि ध प | मं ग मं ध | सां – – रें | सां –, ध नि
० ३ × २

सां रें गं – | रें सां – नि | ध –, ध गं | रें गं सां रें
० ३ × २

नि सां ध नि | मं ध नि सां | रें नि ध मं | ग रे सा –
० ३ × २

सा रे – रे | ग – ग मं | – मं ध – | ध नि –; नि
० ३ × २

पाठ ९४

राग तोडी–लक्षणगीत–त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

मृदु रिखब तीवर म नि सुरसों सज्यो,
ठाठ नाम तोडी तासों निकस्यो राग तोडी,
रसिक गुनी प्रिय संपूरन धग संवाद मधुर करि।
दूजे प्रहर दिन गाये गुनीजन, मन मोहन नित
सुस्वर मंडित, अनुलोम अल्प पंचम बरनत,
राजत अत गंभीर नाद भरि ॥

स्थायी

			(ग) री ग
			मृ दु
री (सा)सा सा ध	मं ध नि सां	नि ध प (प)	(मं)मं ग, री ग
रि ख ब ती	व र म नि	सु र सों स	ज्यो ऽ, ठा ऽ
०	३	×	२
री सा — सा	(नि)ध़ — ऩि सा	(ग)री — री ग	ग ग मं —
ठ ना ऽ म	तो ऽ डी ऽ	ता ऽ सों नि	क स्यो रा ऽ
०	३	×	२
मं ध — ध	(ध)मं ध नि सां	नि ध प प	(ध)मं – धनि सांरीं
ग तो ऽ डी	र सि क गु	नी ऽ प्रि य	सं ऽ पूऽ ऽऽ
०	३	×	२
नि (नि)ध ध गं	रीं – सां –	नि ध मं ग	(ग)री सा; री ग
र न ध ग	सं ऽ वा ऽ	द म धु र	क रि; मृ दु
०	३	×	२

अंतरा

(ग)री – ग ग	(ध)मं मं ध ध	नि सां सां सां	नि सां सां सां
दू ऽ जे प्र	ह र दि न	गा ऽ ये गु	नी ऽ ज न
०	३	×	२
(गं)रीं गं रीं –	सां सां सां सां	(सां)नि – सां रीं	नि ध ध ध
म न मो ऽ	ह त नि त	सु ऽ स्व र	मं ऽ डि त
०	३	×	२

(ध)मं ध नि सां	रीं नि – ध	मंप धप मं ग	री री सा सा
अ नु लो ऽ	म अ ऽ ल्प	पंऽ ऽऽ च म	ब र न त
०	३	×	२

(ग)री – ग ग	मं मं ध ध	ध निसां रींसां निध	मं ग; (ग)री ग
रा ऽ ज त	अ त गं भी	र नाऽ ऽऽ दऽ	भ रि; मृ दु
०	३	×	२

पाठ ९५

राग तोडी–एकताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

द्रौपदी के लाज रखन गजमोचन गिरिधारन,
कृपा सिन्धु आप किये दीन जनोद्धरन काज।
आयो शरण तोरे द्वार दीन 'सुजन' हाथ जोर,
बिनती करहुँ बार बार टेक रखियो नेक आज॥

स्थायी

(सां)नि सां	नि ध	प प	मं ग	ग मं	ध ध
द्रौ ऽ	प दी	ऽ के	ला ऽ	ज र	ख न
×	०	२	०	३	४

(ध)मं ध	नि सां	नि ध	मं ग	(ग)री —	सा सा
ग ज	मो ऽ	च न	गि रि	धा ऽ	र न
×	०	२	०	३	४

सा री	ग (ग)री	– सा	(सा)ध –	ध नि	(ध)मं ध
कृ पा	ऽ सिं	ऽ धु	आ ऽ	प कि	ये ऽ
×	०	२	०	३	४

नि	सां	रीं	सां	नि	ध	प	मं	ग	मंध	निसां	सां
री	ऽ	न	ज	नो	ऽ	द्ध	र	न	काऽ	ऽऽ	ज
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

सां	रीं	गं	रीं	सां	सां	(मं)ग	मं	ध	नि	सां	सां
आ	ऽ	यो	श	र	ण	तो	रे	ऽ	द्वा	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
नि	–	सां	रीं	सां	सां	नि	–	सां	नि	ध	ध
दी	ऽ	न	सु	ज	न	हा	ऽ	थ	जो	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
(नि)ध	गं	रीं	गं	रीं	सां	नि	सां	सां	नि	ध	ध
बि	न	ति	क	र	हुँ	बा	ऽ	र	बा	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
(ध)मं	ध	नि.	ध	मं	ग	(ग)री	—	ग	मंध	निसां	रीं
टे	ऽ	क	र	खि	यो	ने	ऽ	क	आऽ	ऽऽ	ज
×		०		२		०		३		४	

पाठ ९६

राग तोडी–त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

'सुजन' सुन हरि हर में नहीं भेद, हरि में हर हर मं हरि
पहचान लेहो बौरे अनारी।
हरि चिंतन–रत हर हर घरि पल, ध्यान मगन हर के हरि
गुपत एक दोऊ रूप प्रकट भये, गंगाधर गिरधारी ॥

स्थायी

ध
सु

म ग री सा	री ग री सा	(री)नि - सा री	ग - ग, म
ज न सु न	ह रि ह र	में ऽ न हिं	भे ऽ द, सु
२	०	३	×
प ध म ग	री ग री -	सा सा (ग)री री	ग - म म
ज न सु न	ह रि में ऽ	ह र ह र	में ऽ ह रि
२	०	३	×
ध ध नि सां	रीं नि - ध	म ध नि सां	नि ध नि; ध
प ह चा ऽ	न ले ऽ हो	बौ ऽ रे अ	ना ऽ री; सु
२	०	३	×

अंतरा

म ग म -	ध ध नि नि	सां सां सां सां	नि सां सां सां
ह रि चिं ऽ	त न र त	ह र ह र	घ रि प ल
०	३	×	२
(गं)रीं गं रीं सां	सां सां नि नि	सां रीं नि ध	म म (ध)ग म
ध्या ऽ न म	ग न ह र	के ऽ ह रि	गु प त ए
०	३	×	२
ध ध नि सां	नि ध प प	(ग)म री ग री	सा - - -
ऽ क दो ऽ	उ रू ऽ प	प्र क ट भ	ये ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
री - ग -	म म ध ध	नि सां नि; ध	म ग री सा
गं ऽ गा ऽ	ध र, गि र	धा ऽ रि; सु	ज न सु न
०	३	×	२

पाठ ९७

राग तोडी–त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

सियरी पवन बहे मन्द मन्द अति सुगंध चहूँ ओर
या प्रात समे हुलसै जिया सुख चैन पावे ।
सुर लय सुरस सिंगार सजावै, गाये बजाये रिझाये गुनीवर,
सुनत 'सुजन' मन मोद भरायो, गीत माधुरी बरनी न जावे ॥

स्थायी

(कण: ग)

री ग री सा	सा नि सा री	ग — ग मं	प ध मं ग
सि य रि प	व न ब हे	म ऽ न्द म	ऽ न्द अ ति
०	३	×	२

(कण: मं)

मं री ग री	सा सा नि सा	री ग मं ध	निसां रींसां नि ध
सु गं ऽ ध	च हूँ ऽ ओ	ऽ र या ऽ	प्राऽ ऽऽ त स
०	३	×	२

(कण: प)

प – री ग	री – सा सा	मं ध नि सां	नि ध – प
मे ऽ हु ल	सै ऽ जि या	सु ख चै ऽ	न पा ऽ वे
०	३	×	२

अंतरा

(कण: ध, नि)

नि ध मं ग	मं मं ध ध	सां – सां सां	नि सां सां –
सु र ल य	सु र स सिं	गा ऽ र स	जा ऽ वै ऽ
०	३	×	२
नि ध ध ध	नि सां सां सां	सांरीं गं रीं सां	निसां रींसां नि ध
गा ऽ ये ब	जा ऽ ये रि	झाऽ ऽ ये गु	नीऽ ऽऽ व र
०	३	×	२

मं	ध	नि	सां	नि	(ध)नि	ध	प	मं	ग	ग	(मं)मं	री	ग	री	सा
सु	न	त	सु	ज	न	म	न	मो	ऽ	द	भ	रा	ऽ	यो	ऽ
०				३				×				२			

(गं)रीं	गं	रीं	सां	नि	सां	नि	ध	मंध	निसां	रींसां	नि	ध	प प
गी	ऽ	त	मा	ऽ	धु	री	ऽ	व र	नीऽ	ऽऽ	न	जा	ऽ वे
०				३				×			२		

पाठ ९८

राग तोडी—ध्रुवपद—चौताल

गीत के शब्द

सिंगार हास्य करुण रौद्र वीर भयानक,
बीभत्स अद्भुत रस अष्ट भेद कवि संमत।
मानत कोऊ और एक शान्त नवम रस भेद,
भक्ति हूँ पुनि वात्सल्य रस हूँ करि कोऊ गिनत॥
रस बीज तें उपजत भावनाम मन विकार,
विभाव अनुभावरु व्यभिचारि भाव भेद कहत॥
प्रेम हास्य रंज कोप हुलास अरु भीति हीक,
अचरज मिलि अष्ट भाव ठायि नाम शास्त्र विहित॥

स्थायी

नि	सां	नि	ध	—	प	मं	ग	ग	मं	प	ध
सिं	ऽ	ऽ	गा	ऽ	र	हा	ऽ	स्य	क	रु	ण
×		०		२		०		३		४	

(ध)मं	ध	नि	ध	प	प	प	(प)री	ग	री	सा	सा
रौ	ऽ	द्र	वी	ऽ	र	भ	या	ऽ	न	ऽ	क
×		०		२		०		३		४	

(ग)री	–	–	ग	–	ग	मं	–	ध	ध	नि	सां
बी	ऽ	ऽ	भ	ऽ	त्स	अ	ऽ	द्भु	त	र	स
×		०		२		०		३		४	

लि	सां	रीं	नि	ध	प	(मं)ग	मं	ध	नि	सां	रीं
अ	ऽ	घ्र	भे	ऽ	द	क	वि	सं	ऽ	म	त
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

मं	ग	(ध)मं	मं	ध	ध	नि	सां	सां	सां	–	सां
मा	ऽ	न	त	को	ऊ	औ	ऽ	र	ए	ऽ	क
×		०		२		०		३		४	

सां	रीं	गं	रीं	सां	सां	नि	सां	रीं	नि	ध	ध
शा	ऽ	न्त	न	व	म	र	स	ऽ	भे	ऽ	द
×		०		२		०		३		४	

मं	ध	नि	सां	नि	ध	प	(प)री	ग	मं	प	ध
भ	ऽ	क्ति	हुँ	पु	नि	वा	ऽ	ऽ	त्स	ऽ	ल्य
×		०		२		०		३		४	

नि	सां	रीं	गं	रीं	सां	(मं)ग	मं	ध	नि	सां	रीं
र	स	हूँ	ऽ	क	रि	को	ऽ	ऊ	गि	न	त
×		०		२		०		३		४	

संचारी

(री)सा	सा	ध	ध	—	ध	(ध)मं	ध	नि	सां	नि	ध
र	स	ऽ	बी	ऽ	ज	तें	ऽ	उ	प	ज	त
×		०		२		०		३		४	

ध॒											
म॑	ध॒	नि	सां	रीं॒	सां	नि	ध॒	नि	ध॒	–	ध॒
भा	ऽ	व	ना	ऽ	म	म	न	वि	का	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

ग॒	ग॒								प		
रे॒	रे॒	ग॒	ग॒	म॑	म॑	प	–	प	म॑	ध॒	ध॒
वि	भा	ऽ	व	अ	नु	भा	ऽ	व	रु	व्य	भि
×		०		२		०		३		४	

नि											
ध॒	गं॒	रीं	सां	नि	ध॒	म॑	ग॒	ग॒	म॑	ध॒	ध॒
चा	ऽ	रि	भा	ऽ	व	भे	ऽ	द	क	ह	त
×		०		२		०		३		४	

आभोग

प			नि								
म॑	–	ध॒	सां	–	सां	सां	–	सां	सां	–	सां
प्रे	ऽ	म	हा	ऽ	स्य	रं	ऽ	ज	को	ऽ	प
×		०		२		०		३		४	

गं											
रीं॒	रीं॒	गं॒	रीं॒	सां	सां	नि	–	सां	नि	ध॒	ध॒
हु	ला	ऽ	स	अ	रु	भी	ऽ	ति	ही	ऽ	क
×		०		२		०		३		४	

						गं॒					
ध॒	नि	सां	रीं॒	गं॒	गं॒	रीं॒	–	गं॒	रीं॒	सां	सां
अ	च	र	ज	मि	लि	अ	ऽ	ष्ट	भा	ऽ	व
×		०		२		०		३		४	

						म॑					
नि	सां	रीं॒	नि	ध॒	प	ग॒	म॑	ध॒	नि	सां	रीं॒
ठा	ऽ	यि	ना	ऽ	म	शा	ऽ	स्त्र	वि	हि	त
×		०		२		०		३		४	

पाठ ९९

ताल एकताल

एकताल में १२ मात्राएँ होती हैं और इसके मात्रा–विभाग, तालियाँ तथा खालियाँ चौताल के ही समान होती हैं। अर्थात् १ ली, ५ वीं, ९ मी एवं ११ वीं मात्राओं पर तालयाँ तथा ३ री एवं ७ वीं मात्राओं पर खालियाँ होती हैं। इस प्रकार इस ताल में भी चार तालियाँ तथा दो खालियाँ होती हैं।

एकताल तबले पर बजाया जाता है। यह ताल विलम्बित एवं द्रुत दोनों लयो में प्रयुक्त होता है। इन दोनों लयो में क्रमशः विलम्बित एवं मध्य अथवा द्रुतलय के ख्याल, ख्यालनामे–तराने, तराने इत्यादि रागदारी गीत–प्रकार गाये जाते हैं। विलम्बित तथा द्रुतलय में बजनेवाले एकताल के ठेके इस प्रकार लिखे जाते हैं :—

विलम्बित लय का ठेका

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	कत्	ता	धागे	तिरकिट	धी	ना
×		०		२		०		३		४	

मध्य या द्रुतलय का ठेका

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	२१
धिं	धिं	धा	त्रक	तू	ना	कत्	ता	धी	त्रक	धी	ना
×		०		२		०		३		४	

स मा प्त

Archived by Aaraeva Business Solutions Pvt Ltd